वर्ष -6, अंक -3, जुलाई-सितंबर, 2021 मुंबई

यूनियन सृजन

दीपावली विशेषांक

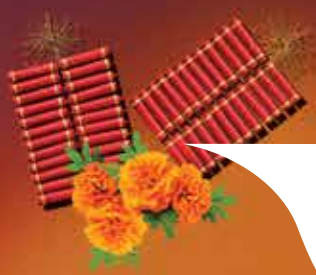

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India
भारत सरकार का उपक्रम
A Government of India Undertaking
आन्ध्रा Andhra
कार्पोरेशन Corporation

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 12.11.2021

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष - 6 अंक - 3 जुलाई-सितंबर, 2021

संरक्षक

राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

कल्याण कुमार
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

नवल किशोर दीक्षित
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन मंडल

अशोक चंद्र
मुख्य महाप्रबंधक

वी. वी. टेम्भूर्णे
महाप्रबंधक

अम्बरीष कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: navalkishored@unionbankofindia.com
sulabhakore@unionbankofindia.com
union.srijan@unionbankofindia.com
9820468919, 022-22896595

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

Editor : Dr. Sulabha Shrikant Kore

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India
भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking
आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

दीपावली विशेषांक

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- संपादकीय 4
- दीपावली की संस्कृति 5
- साहित्य सृजन : मृदुला गर्ग 6-7
- काव्य सृजन 8-9
- भारत में दीपावली 10-12
- दीपावली : दीपों का त्योहार 13
- दीपावली - पौराणिकता, ऐतिहासिकता 14-15
- समाज और दीपावली 16-17
- दीपावली: संकल्पना एवं परंपरा के साथ 18-19
- राष्ट्रीय एकता का पर्व दीपावली 20-21
- हिंदी सिनेमा में दीपावली 22
- दीपावली - बदला हुआ परिवेश 23
- हिंदी साहित्य में दीपावली 24-25
- दीपावली और खरीददारी व्यावसायिक पहलू 26-27
- दीपोत्सव एवं बैंकिंग जगत 28-29
- सेंटर स्प्रेड - ऊटी 30-31
- विशेष साक्षात्कार - श्री राहुल देव 32-35
- दिवाली : विभिन्न मान्यताएं 36
- दिवाली - प्रकाश का अलौकिक पर्व 37
- दीपावली कैसे और क्यों मनायी जाती है 38-39
- हिंदी दिवस समारोह 40-42
- कहानी - नई दीपावली 43-45
- अर्थ, वैभव, समृद्धि का परिचायक दीपावली पर्व 46-47
- दीयों की रोशनी 47
- दीपावली का 'दर्शन' 48-49
- दीपावली पर्व और पटाखे 50-51
- राजभाषा पुरस्कार 52-53
- राजभाषा समाचार 54-55
- दीपावली - एक 'हटकर' नजरिया 56-57
- आयुष्यमान भव: - कंटोला 58
- आपकी नज़र में 59

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स,

हमेशा नए विषयों के साथ 'यूनियन सृजन' आपके सामने आती है और ये विविध विषय हमेशा पाठकों की अपेक्षा पर खरे उतरे हैं और पाठकों में पत्रिका पढ़ने हेतु दिलचस्पी भी जगाते हैं. 'यूनियन सृजन' का यह नया अंक आपके समक्ष दीपावली की जगमगाहट, त्योहार का उत्साह, आपसी मेल-जोल और नई सोच की नयी रोशनी लेकर आया है.

भारत और त्योहारों का अटूट रिश्ता है. यहाँ हर त्योहार अपनी विशेषता और विशिष्टता के साथ बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. लेकिन 'दीपावली' की बात ही कुछ और है. अपनी धार्मिकता, पौराणिकता और ऐतिहासिकता के साथ वर्तमान को जोड़ने वाला यह दीपों का त्योहार 'प्रकाशपर्व' के साथ 'बुराई पर अच्छाई' की जीत के रूप में मनाया जाता है. परिवेश और मन के अंधेरे को मिटाकर मिठाई और आतिशबाजी के साथ यह त्योहार एक अद्भुत समा बांध देता है. इसलिए इस त्योहार को जातिधर्म या क्षेत्र की कोई सीमा बांध नहीं सकती. पूरे भारत वर्ष में यह त्योहार अपनी जगमगाती रोशनी लेकर आता है और सकारात्मकता, जोश देकर तथा मन के अंधेरे को मिटाकर अगले साल आने का वादा कर विदा हो जाता है.

अब हम कोविड-19 की वैश्विक महामारी की समस्या से बहुत हद तक बाहर आ चुके हैं. अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे पटरी पर लौट रही है. हमारे बैंक के लिए यह दीपावली और अधिक खुशियाँ लेकर आई है, क्योंकि सितंबर 2021 तिमाही के वित्तीय परिणाम आ चुके हैं जिनके अनुसार बैंक ने पिछले वर्ष की सितंबर तिमाही की तुलना में निवल लाभ के अंतर्गत उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है. इस उपलब्धि के लिए सभी यूनियनाइट्स बधाई के पात्र हैं.

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका में प्रस्तुत कविताएं एवं लेख आप सभी को रूचिकर लगेंगे. एक बार पुन: आप सबको दीपावली की बहुत-बहुत बधाई, यह पर्व आपके जीवन में नई खुशियाँ लेकर आए.

सुरक्षित रहें एवं अपना ख्याल रखें.

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.

आपका

राजकिरण रै जी

(राजकिरण रै जी.)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

'बृहदारण्यकोपनिषद' का 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' यह श्लोक कहता है कि 'अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो.' यहां अंधकार से मतलब माहौल, स्थितियाँ, परिवेश, मन, दिमाग किसी का भी हो सकता है, लेकिन जीवन का मुख्य उद्देश्य यही होता है कि उसे अंधकार से प्रकाश की ओर जाना है. अंधकार से प्रकाश की ओर की यह यात्रा यानि हमारा 'दीपावली' का त्योहार.

दीपावली- दीयों की पंक्ति अर्थात् दीपावली के दिनों में ये दीयों की पंक्तियां आपको हर घर के सामने दिखायी देती हैं. घर, फिर वह झोपड़ी हो, गाँव का घास फूस से बना मकान हो, आलीशान महल हो या फिर शहर के कंक्रीट के जंगल में मौजूद फ्लैट हो, हर घर के सामने दीपावली में दीये जगमगाते रहते हैं. यह त्योहार इसी जगमग रोशनी को लेकर पूरे विश्व में जाना जाता है.

दीपावली क्यों, कैसे, किस तरह से मनायी जाती है, इसके बारे में अनेक कहानियाँ, किंवदंतियाँ, पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक परिवेश से आपको प्राप्त हो जाती हैं. हमारे पूर्वजों ने भी इन्हीं कहानियों को हमारे समक्ष दोहराया. हमारी पीढ़ियाँ इन कहानियों को सुनकर, देखकर, सीखकर और महसूस कर बड़ी हुई. इस 'दीपावली विशेषांक' में हमने भी इस त्योहार से संबंधित अनेक पहलुओं को शामिल किया है, लेकिन 'बुराई' पर 'अच्छाई' की जीत, इस महत्वपूर्ण बात को रेखांकित करता यह त्योहार अपने उल्लास, हर्ष, उत्सवपूर्ण माहौल और सच्चाई तथा जीवन की नैतिक सत्यता को लेकर चलता है और यही इस त्योहार की विशिष्टता है.

भारतीय, यहां भारत में रहता हो या विदेश में! हर एक के मन में यह त्योहार अपना उजास फैलाता रहता है. हमने 'यूनियन सृजन' के इस दीपावली विशेषांक में उसी उजास, प्रकाश को समेटने की कोशिश की है.

यह प्रकाश आपको भी खुशी देगा, इसका मुझे पूरा भरोसा है.

आपकी प्रतिक्रियाओं का मुझे शिद्दत से इंतजार रहेगा.

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

आपकी,

(डॉ. सुलभा कोरे)
संपादक

दीपावली की संस्कृति

भारत देश को त्योहारों का देश कहा जाता है. एक त्योहार जा ही रहा होता है कि दूसरा आने की तैयारी में रहता है. हर त्योहार अपने आप में अनोखा होता है. हर त्योहार के पीछे कोई ना कोई किंवदंती या फिर कोई ना कोई लोक कथा अवश्य होती है. ये त्योहार जहां एक तरफ लोगों को मुस्कुराने के लिए प्रेरित करते हैं वहीं दूसरी तरफ व्यापार को बढ़ाने में भी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं.

एक ही त्योहार को मनाने का तरीका हर प्रांत का अलग-अलग होता है, परंतु सबका उद्देश्य समाज में खुशहाली, एकता, भाईचारा और समृद्धि लाना होता है. हमारे देश में विभिन्न त्योहारों को इस तरह से मनाते हैं कि पूरा विश्व हमारी एकता और भाईचारे की मिसाल देता है. होली, ईद, ओणम, खिचड़ी, युगादि, गुड़ी पड़वा, गुरु पर्व, लोहड़ी इत्यादि त्योहारों के मध्य दीपावली की विशेष भूमिका होती है. वैसे तो यह हिंदुओं का त्योहार कहलाता है, परंतु संपूर्ण भारतीय समाज इस त्योहार को बहुत धूमधाम से मनाता है. प्रचलित कहावत है कि भारत में 365 दिनों में 365 दिन कोई-न-कोई त्योहार मनाया जाता है. ये सभी त्योहार भारतीय जनमानस पर अपना गहरा व अमिट प्रभाव रखते हैं. इन भारतीय त्योहारों में से प्रत्येक के पीछे एक समृद्ध इतिहास है और वैज्ञानिकता भी. यह त्योहार पूरे देश में विभिन्न राज्यों द्वारा अपनी-अपनी विशिष्टता के साथ मनाये जाते हैं. दीपावली को भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी. यह त्योहार लोगों के जीवन में उल्लास व उमंग लेकर आता है. मुख्य पर्व कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है. इस दिन असंख्य दीपों से रोशनी की जाती है. इसीलिए इसे प्रकाश पर्व भी कहते हैं.

प्राचीन भारत में दीपावली मनाए जाने के कई प्रमाण मिलते हैं. दीपावली का नाम सुनते ही मन में मिठाइयों, पटाखों, रंगोली आदि की यादें ताजा हो जाती हैं. दीपावली का उत्सव लगातार पांच दिनों तक मनाया जाता है. इसमें हर दिन का अपना अलग महत्व है. इससे जुड़ी कई कथाएं व किंवदंतियाँ हमारे धर्म ग्रंथों में मिलती हैं, जिसमें से इस दिन भगवान श्री राम के 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या पधारने का प्रसंग सर्वाधिक चर्चित है. पौराणिक मान्यता के अनुसार रावण को मारकर भगवान श्री राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अपने राज्य अयोध्या वापस आए थे. कहा जाता है कि इस दिन उनके अयोध्या लौटने पर नगरवासियों ने दीया जलाकर उनका स्वागत किया था. अपने प्रिय और दयालु राजा राम के आने से अयोध्यावासी बहुत खुश हुए और अपने घर और पूरे राज्य में घी के दीये जलाकर जश्न मनाया.

दिवाली से जुड़ी विशिष्ट लोक कथाएं: दीपावली के इतिहास से जुड़ी एक और कथा हिंदू महाकाव्य महाभारत में लिखी है जो कि श्रीकृष्ण से ताल्लुक रखती है. कृष्ण के भक्तगण मानते हैं कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था. इस राक्षस के वध से जनता को अपार हर्ष हुआ और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीये जलाए. एक और मान्यता के अनुसार इस दिन समुद्र मंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरी प्रकट हुए थे. जैन मतावलंबियों के अनुसार 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली ही है.

एक अन्य कथा के अनुसार देवराज इंद्र से डर कर राक्षस राजा बलि कहीं जाकर छुप गया. राजा इंद्र उन्हें खोजते-खोजते एक खाली घर में पहुंचे. वहां राजा बलि गधे के रूप में छुपे हुए थे. दोनों की आपस में बातचीत होने लगी. बातचीत चल ही रही थी कि राजा बलि के शरीर से एक स्त्री बाहर निकली, जब राजा इंद्र ने उनसे पूछा तो उसने कहा मैं देवी लक्ष्मी हूँ, स्वभाववश एक ही स्थान पर टिककर नहीं रह सकती. लेकिन मैं उस स्थान पर स्थिर होकर रहती हूं, जहां सत्य दान, व्रत, धर्म, पुण्य, पराक्रम आदि रहते हैं. जो व्यक्ति सत्यवादी होता है, ब्राह्मणों का हितैषी होता है, धर्म की मर्यादा का पालन करता है, मैं उसी के यहां निवास करती हूँ.

इस तरह यह बात स्पष्ट है कि मां लक्ष्मी केवल वहीं निवास करती हैं जहां धार्मिक व सज्जन व्यक्ति निवास करते हैं. दीपावली मनाने के कारण भले ही कुछ भी हों लेकिन इतना तो निश्चित है कि प्रत्येक कथा में दीपों का विशेष महत्व है. दीपावली का त्योहार अंधेरे पर उजाले तथा अधर्म पर धर्म की विजय का त्योहार है.

इस प्रकार देखा जाए तो दीपावली भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पुरातन त्योहार है, जो सभी को अंधेरे से उजाले की ओर प्रेरित करता है. त्योहारों का देश भारत दीपावली के अवसर पर अपने जीवन की ऊर्जा का सकारात्मक प्रदर्शन करता है और यह तथ्य प्रति वर्ष सिद्ध होता है. दीपावली उमंग और उत्साह से जीवन के हर पल को रोशन करती है. इसके साथ ही यह पुराने बैर को भुलाकर संबंध सुधारने एवं संबंधों में मधुरता लाने का भी त्योहार है. भारतीय संस्कृति की अनेकता में एकता की अवधारणा को बल देने में इस त्योहार का विशिष्ट योगदान है.

चारु शर्मा
क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु

आधुनिक सोच की संवाहिका
मृदुला गर्ग

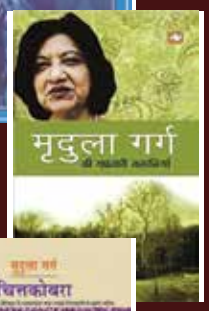

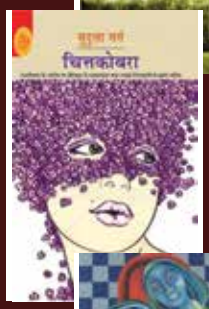

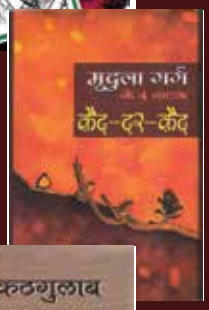

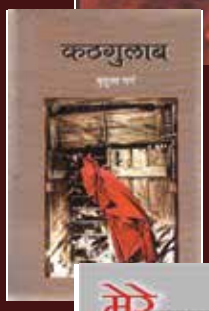

मृदुला गर्ग जी का जन्म 25 अक्तूबर 1938 को कलकत्ता में हुआ अपने माता पिता के साथ वह बाल्यावस्था में ही दिल्ली आ गई, जहां उनके विचारों और सोच को अधिक विस्तार मिला. शारीरिक अस्वस्थता के कारण मृदुला जी का बचपन काफी तकलीफ में बीता और इसके कारण वे कई वर्षों तक स्कूल भी नहीं जा पायीं. घर पर ही रहकर वे अध्ययन करतीं रही और समय से सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होती रहीं. उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से एम.ए. किया. तदुपरान्त 1960 से 1963 तक दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज और जानकी देवी कॉलेज में वह बतौर प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत रहीं. इस दौरान उन्होंने सामाजिक और आर्थिक शोषण जैसे विषयों पर भी गहन अध्ययन किया.

मृदुला जी को बचपन से ही साहित्य-पठन का शौक था. साहित्य-पठन से अपने लगाव के विषय में वे कहती हैं

"साहित्य पठन से मेरा लम्बा लगाव रहा, बचपन से... साहित्य ही मेरा एक मात्र आसरा था. वह मेरे खून में समा गया, मेरे दिलो-दिमाग का हिस्सा बन गया. चुँकि उसने मेरे जीवन में बहुत जल्द प्रवेश कर लिया था, इसलिए बड़े नामों से मुझे डर नहीं लगता था."

मृदुला जी का विवाह सन् 1963 में श्री आनंद प्रकाश गर्ग के साथ परम्परागत तरीके से हुआ. अपने पारिवारिक जीवन को प्राथमिकता देते हुए विवाहोपरांत उन्होंने अपनी नौकरी को छोड़ दिया. उनका व्यक्तिगत मत था कि ममता और पारिवारिक जीवन की कीमत पर स्त्री की नौकरी अर्थहीन है. विवाह के बाद वे दिल्ली छोड़ पहले बिहार स्थित डालमिया नगर, बंगाल स्थित दुर्गापुर और फिर कर्नाटक स्थित बागलकोट जैसे छोटे कस्बों में वर्ष 1963 से 1971 तक रहीं. अपने परिवार और लेखन के बीच बखूबी सामंजस्य बिठाते हुए मृदुला जी ने अपना जीवन जिया है. संस्कार में मिले अपने गुणों पर तटस्थ रहते हुए कभी भी अपने आत्म-सम्मान के साथ उन्होंने समझौता नहीं किया.

मृदुला गर्ग का पारिवारिक जीवन संघर्षमय तो था किन्तु सुखद भी रहा. पारिवारिक दायित्वों के कारण यदा-कदा उनके लेखकीय जीवन में अल्प-विराम आया, किन्तु उन्होंने अपने लेखकीय दायित्व और पारिवारिक जीवन को एक दूसरे पर कभी पूर्णतया हावी नहीं होने दिया.

मृदुला गर्ग के लेखकीय जीवन का आरम्भ लगभग 1970 में हुआ. उस समय वे 32 वर्ष की थीं. उनका प्रारम्भिक लेखन अर्थशास्त्र से जुड़ा था जो उन्हें भारतीय परिवेश के सन्दर्भ में तर्कसंगत नहीं लगा. अत: वे सृजनात्मक लेखन की ओर अग्रसर हुए कहती हैं, "अर्थशास्त्र से संतुष्टि न मिलने पर एक बेपनाह छटपटाहट मन में घर करती गयी, जिसे सृजनात्मक लेखन में बांधकर लोगों तक पहुँचाने में मुझे लगा, अधिक सफलता मिलेगी"

अपने सृजनात्मक लेखन के प्रारम्भिक दौर में मृदुला जी ने अंग्रेजी में कई कहानियों और कविताओं की रचना की. अंग्रेजी उनके लिए उद्देश्यपरक भाषा रही है. इस भाषा पर भी उनकी पकड़ बहुत ही अच्छी थी और वे चाहतीं तो इस माध्यम से अपना लेखकीय सफ़र जारी रख सकती थीं. किन्तु बाद में उन्होंने महसूस किया कि भावना प्रधान दृश्यों को वे हिंदी भाषा में ज्यादा प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकती हैं. अत: उन्होंने हिंदी लेखन की ओर रूख किया.

उन्होंने अपने सृजन यात्रा का आरम्भ कर्नाटक के बागलकोट से किया. उनकी पहली कहानियां 'रूकावट' सन 1971 में कमलेश्वर जी के संपादन में 'सारिका' में प्रकाशित हुई. बाद में उनकी कहानी 'हरी बिंदी', 'लिली आफ दी वैली', 'दूसरा चमत्कार' भी 'सारिका' में प्रकाशित हुई. 1972 में प्रकाशित कहानी 'कितनी कैदें' को 'कहानी' पत्रिका द्वारा प्रथम पुरस्कार दिया गया. सन 1974 में मृदुला गर्ग दिल्ली वापस आ गयीं और उन्होंने पूर्णतया साहित्य के सृजन का आरम्भ किया. इसी वर्ष उनका पहला उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' प्रकाशित हुआ. इस उपन्यास को मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा 'महाराजा वीरसिंह पुरस्कार' से सम्मानित किया गया.

मृदुला गर्ग भी उन महिला रचनाकारों में से एक हैं, जिन्होंने अपने साहित्य में स्त्री मुक्ति के प्रश्न को साहस के साथ उजागर किया. हालांकि उनके कथा साहित्य का आधार स्त्री-स्वातंत्र्य पर स्थिर ज़रूर है तथापि वे स्त्री मुक्ति के प्रश्न को अन्य समकालीन लेखिकाओं की तरह नहीं देखती हैं. उनका कथानक अपने समकालीनों से अलग दिखाई देता है. उनके लिए समाज में पुरुषों की बराबरी कर लेना या पुरुषों से आगे बढ़ जाना तथा सामाजिक एवं संवैधानिक अधिकार प्राप्त कर शारीरिक रूप से स्वतंत्र हो जाना मात्र ही स्त्री स्वतंत्रता नहीं है. उनके लिए स्त्री मुक्ति का अर्थ तन और मन दोनों की मुक्ति में निहित है. वे 'फेमिनिज्म' का अर्थ दरअसल सोच की जकड़बंदी से मुक्ति के रूप में चाहती हैं. समाज की सड़ी-गली मान्यताओं, संस्कारों आदि से मुक्ति पा

लेना ही उनके लिए स्त्रीवाद का हासिल है. मृदुला जी कहती हैं, "नारीवाद की परिभाषा बस इतनी है कि नारी को अधिकार है, यह तय करने का कि वह क्या करना चाहती है, क्या नहीं? कोई मुखौटा नहीं कि स्त्रियों पर चस्पा कर दिया जाए."

नर-नारी संबंध मृदुला गर्ग के प्राय: सम्पूर्ण साहित्य के केन्द्रीय सूत्र रहे हैं. वैसे तो कई उपन्यासकार नर-नारी संबंधों को पारम्परिक, नैतिक मान-मर्यादाओं के घेरे में रखकर चित्रित करते हैं परन्तु मृदुला जी ने कभी भी इन बन्धनों को स्वीकार नहीं किया. उनका मानना है कि दाम्पत्य जीवन में एकरसता तथा आपसी सामंजस्य न होने के कारण या प्रेम के अभाव के कारण ही विवाहेतर संबंध स्थापित होते हैं. मृदुला जी 'शरीर के प्रेम' अर्थात् वह प्रेम जो मन या उसकी किसी भावना से नहीं उपजता बल्कि आहार, निद्रा, भय की तरह शारीरिक आवश्यकताओं के रूप में प्रकट होता है, को पशुवृति मानने से इनकार करती हैं. वे शारीरिक संबंधों का सम्बन्ध नैतिकता-अनैतिकता अथवा पाप-पुण्य से न जोड़ते हुए प्राकृतिकता से जोड़ती हैं तभी तो 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में उनकी कथा नायिका की मान्यता है - 'प्यार करना कला नहीं, जरूरत है'.

उपन्यास के अंत तक पहुँचते-पहुँचते कथा नायिका को यह एहसास हो जाता है कि उसे अपने खालीपन को किसी अन्य द्वारा नहीं बल्कि स्वयं भरना होगा और वह खुद लेखन कार्यों से जुड़ जाती है. जिससे उसे आत्म संतुष्टि प्राप्त होती है. उसको एक अलग पहचान मिलती है. वह लेखिका के रूप में समाज में प्रतिष्ठित होती है. इस उपन्यास द्वारा मृदुला जी नारी के अस्मितामूलक संघर्ष, प्रेम की तलाश तथा आत्मसंतुष्टि की प्यास जैसे प्रश्नों को न सिर्फ उठाती हैं बल्कि उसका हल भी तलाशती दिखाई देती हैं. मृदुला जी नारी को परम्परागत सोच से मुक्ति दिलाकर उसे आत्मनिर्भर बनाना चाहती हैं. मृदुला गर्ग जी के इस उपन्यास में पुराने नैतिक मूल्यों का विरोध तथा प्रेम सम्बन्धी नयी नैतिकता का चित्रण इसी शर्त पर आधारित है. अब तक स्त्री स्वयं को पुरुष की दृष्टि से परिभाषित करती आ रही थी. वह अब तक अपनी सार्थकता किसी अन्य व्यक्ति से जुड़ने में तलाश रही थी. लेकिन इस उपन्यास में आधुनिक नायिका मनीषा अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को परिभाषित करने हेतु प्रयासरत दिखाई देती है. वह सामाजार्थिक रूप से अपने आपको आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करती है और अपनी सार्थकता अपनी आत्मनिर्भरता में ही ढूँढती है.

मृदुला गर्ग ने अपने 'चितकोबरा' उपन्यास में पारस्परिकता के विरुद्ध मोर्चा खड़ा करके स्त्री को अनेक तथाकथित मर्यादा बंधनों से मुक्ति दिलाई है. इस उपन्यास में शीलता और अश्लीलता का प्रश्न उठाकर प्राय: उन समस्याओं से आँखे चुराने की कोशिश की जाती है और जिनके आधार पर स्त्री को कथित मर्यादा की सीख दी जाती है, उसकी ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है. यह एक लेखिका के साहस का प्रश्न ही है कि उसने मजबूती से पारस्परिकता के विरूद्ध खड़े होकर नये समय में नई जीवन दृष्टि की मांग करने की चुनौती प्रस्तुत की है.

'चितकोबरा' में मृदुला गर्ग ने आज के परिवेश में विवाह संस्था की निरर्थकता को रूपायित किया है. वर्तमान समय में प्रेम से भावुकता का तत्व समाप्त हो गया है और वह सिर्फ शारीरिक प्रेम का पर्याय बन कर रह गया है. उपन्यास में 'विवाह एक से और प्रेम दूसरे से' वाली बात दृष्टिगोचर होती है और इन दो पाटों के बीच पिस रहे मानव मन की एक विचित्र स्थिति को लेखिका ने अपने उपन्यास का विषय बनाया है. वे कहती हैं- "मनुष्य का मन बड़ा विचित्र है. प्राप्त से उसका मन नहीं भरता और अप्राप्त के प्रति एक आकर्षण उसके मन में सदैव रहता है. उसके तन और मन की सम्पूर्ण तृप्ति कभी भी किसी एक से नहीं होती." इस उपन्यास में लेखिका ने पहले से चली आ रही क्षुद्र मान्यताओं को तथा स्त्री के लिए बनाई गयी अमानवीय सीमाओं को तोड़ा है.

उनके एक अन्य उपन्यास "मैं और मैं" में भी औरत के शोषण की कहानी दिखाई गयी है. यह उपन्यास पाठक को भावनात्मक और वैचारिक दोनों धरातलों पर चिंतन हेतु बाध्य करता है. उपन्यास में एक स्त्री को अबला और भोली समझ उसे ठगने वाले धूर्त पुरुष की कहानी है. यहाँ एक सामान्य स्त्री के दु:ख दर्द की परिपाटी से हटकर एक लेखिका के जीवन संघर्ष की कथा को कथ्य का विषय बनाया गया है जो अपेक्षाकृत चिंतनशील भी है, और सजग भी. उसके आस-पास की दुनिया एक झूठ की दुनिया है - एक 'फेक वर्ल्ड' जिसमें रिश्तों की बुनियाद ही झूठ पर टिकी है. उपन्यास में एक जगह लेखिका कहती है- "कितना आसान है एक के बाद एक झूठ बोलते चले जाना और कितनी खूबसूरत, पारदर्शी और रंगबिरंगी है झूठ की दुनिया. उसके सामने सच क्या है, एक ठोस मटमैला खुरदरा पत्थर! झूठ की दुनिया में उड़ान भरनेवाला, कल्पना के गुब्बारे में सुई चुभाकर पथरीली धरती पर क्यों उतरेगा?" अर्थात यह रंगीन फेक वर्ल्ड ही अब हमारे समय की सबसे बड़ी सच्चाई है और हमारी नियति भी. दरअसल यह उपन्यास पूंजीवादी व्यवस्था का आईना है, जिसमें मानवीय रिश्तों का बिम्ब और भी कुरूप और वीभत्स दिखाई देता है. जो मानवीय सम्बन्धों को निर्धारित भी करती है और उसका नियमन भी.

कहना न होगा कि मृदुला जी अपने कथानक में समस्याओं को सिर्फ चित्रित ही नहीं करतीं वरन उसका निदान भी बताती हैं. वे अपने पात्रों को स्थितियों से संघर्ष करते हुए भौतिकता के धरातल से पार उठाकर तार्किक दृष्टि के साथ अपने अस्तित्व और इच्छाओं के लिए निर्णय लेते हुए दिखाती हैं. उनकी सभी स्त्री पात्र अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेती हैं. वे किसी और के सहारे हेतु प्रतीक्षारत नहीं रहतीं. मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग की स्त्री के संघर्षों का चित्रण कर उसकी दशा और दिशा से पाठक वर्ग को अवगत कराया है. वे अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में स्त्री को वस्तु नहीं मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठित करने को तत्पर हैं. हिन्दी कथा साहित्य में उनके उपन्यास पहली बार हीनता-ग्रंथी और अपराध बोध से मुक्त एक कुंठा मुक्त स्त्री-चेतना की रचना करते हैं. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित स्त्री का यह स्वरूप और स्त्री चेतना का यह स्वर स्त्री विमर्श की भविष्योन्मुखी प्रस्तावना है.

- तनीशा शर्मा
क्षे.का., प्रयागराज

दिवाली के दीये

दिवाली का हर दीया
अंधेरे का एक निश्चित,
छोटा सा हिस्सा
बाती में पीकर जलता हैं!
मैंने चौदह साल के समुद्र को
एक दीये की बाती भिगोते पाया है!
मैंने दंडक वन के अंधेरे को,
पंचवटी के घेरे को,
हिरण रूपी छद्म सुनहरे को,
अशोक वाटिका के पहरे को,
दानवी कुकृत्य करते भक्त के भीषण चेहरे को,
रावण के नाभिक गहरे को,
मैंने प्रत्येक दीप में समाते देखा है!
मैंने अंधेरा चीर प्रकाश को आते देखा है!
मैंने तप को पूर्ण होते, मैंने गर्व को चूर्ण होते,
समय-चक्र को घूर्ण लेते देखा है!
मैंने दीप को दिवाली बनते पाया है!
मर्यादा की आप-बीती कालजयी बन जाती है,
दिवाली, सालों, एक-एक पग धरती
सबकी ज़िंदगी में आती है!
ये एक रात की टिमटिमाहट नहीं,
ये सिर्फ किसी शुभ दिन की आहट नहीं,
ये सपने पूरे पाकर खिली मुस्कुराहट नहीं,
ये एक पूर्ण हुआ अश्वमेघ यज्ञ है!
यह एक परंपरा है जो
हर बार खुद को सिद्ध करती है!
ये वो स्वाभाविक सकारात्मकता है
जो धरती को धारण करती है!
दीपावली, दीपों सी जलती है,
भले ही अँधेरों में पलती है,
एक दिन के दृष्टांत लेकर
युगों-युगों को रोशन करती है!

- हर्ष रंजन
क्षे.का. सिलीगुड़ी

रोशन

सिर्फ जग को रोशन करना नहीं,
अब मन को रोशन करने की बारी है
जो अंधेरा भरा है अन्तर्मन में,
उसको खुद से अलग करने की ज़िम्मेदारी है
क्या सिर्फ कागजों पर ही,
महिला सशक्तिकरण होना बराबरी है
असलियत के आईने में देखे, तो जो सच है,
उससे सिर्फ आती धिक्कारी है
लड़का हो या लड़की गर्भ में,
दोनों लेते समान किलकारी है
बेटे को पढ़ना है, आगे बढ़ना है,
ये सोच हमारी है
बेटी तो अमानत है
बस रखना हमारी ज़िम्मेदारी है
कथनी करनी में अंतर होना,
कहावत बड़ी पुरानी है
इस पंक्ति को बदलना है,
अब करके दिखाने की बारी है ...
सफल मर्द के पीछे एक औरत का हाथ है,
ये सुना हमने कई बारी है
अहम ने स्त्रीत्व को नहीं दबाया,
ये सुनो जब, तब ताली बजाना बारी बारी है
आइये इस दिवाली जग को नहीं
मन को जगमग करें
औरों को रोशन करें,
ये आवाज़ लगानी है
'किताबी' पन्नों से निकालकर उत्थान की गाथा
सच के साँचे में ढाल साकार मूरत बनवानी है....
सिर्फ जग को रोशन करना नहीं
अब मन को रोशन करने की बारी है....

- उपासना सिरसैया
क्षे. का. पंजागुट्टा हैदराबाद

आशा का दीप

जब हम आशा का दीप जलाने चले,
अंधकार और डर को दूर भगाने चले ।।
तारों की रोशनी को एक पल,
चुराने के लिए चले,
लाचारी, तड़प, महामारी,
भुखमरी, निराशा.....
पे जीत हासिल करने चले।।
थोड़ा अंधकार है सबका हिस्सा,
थोड़ा संघर्ष है सबका किस्सा।।
आओ इसे मिलकर मिटाने चले।।
जब हम आशा का दीप जलाने चले,
प्यार की जीत का गुणगान,
सबको बताने चले ।।
हम सब संग हैं, एक दूसरे के लिए,
गमों के बादलों को सूरज की किरण से
नहलाने चले ।।
जब हम आशा का दीप जलाने चले,
हर्ष और उल्लास का परचम
हर जगह फहराने चले ।।
बात जीने की है, मरने के डर से
लड़ने के लिए दीया... जलाने चले,
अब फिर से चलना है, दौड़ना है,
थक कर हारने के खौफ को भगाने चले,
जब हम आशा का दीप जलाने चले।।
दीये की टिम टिमाहट से,
अपना परिचय कराया जाये,
हूँ अकेला और खामोश,
लेकिन भयभीत नहीं,
जग संसार को बताया जाए।।
एक चिंगारी, गहरे अंधेरे को
चीर करने के लिए,
इस दीप को जलाया जाए।।
भीड़ से अलग खड़े होने का हुनर पाने की जिद्द को,
रोशन होने की खूबी की गुस्ताखी को,
कभी इबादत के लिए,
कभी खुशनुमा किसी की राह को....
शाम से सजाने के लिए,
इंसानियत को इंसानियत से रूबरू कराने चले,
जब हम आशा का दीप जलाने चले।।

- रितेश तलवार
सतर्कता विभाग, कें.का.

आज फिर से दिवाली आई

माँ ने वही कथा दोहराई
फिरकर आयेंगे रघुराई
संग होंगे लखन व सीता माई
भाई भरत करें अगुआई
हर्षित होंगी कैकेयी व मंथरा दाई।

आज फिर से दिवाली आई
कहाँ... वो सजी अमावस रात
वो माटी के दीयों की सौगात
वो गोवर्धन की पूजा.....
रिश्ते-नातों की वो गूँज
लेकर आती भाई दूज।

आज फिर से दिवाली आई
कहाँ.... वो जोश और उत्साह
वो सन-पटुआ की कूँची
वो लग्घी ऊँची-ऊँची
घर की रँगाई और पुताई
वो मेरे गाँव वाला हलवाई
उसकी चीनी वाली मिठाई
वो ताजे गुड़-चिवड़ा व लाई।

आज फिर से दिवाली आई
सज गये बाजार हैं भाई
कैसी लूट मची है भाई
ना जन असली ना मन असली
ना ही असली है मिठाई
क्या सच में.....
फिर से आयेंगे रघुराई ?
हर्षित होगी कैकेयी माई?
क्या भैया क्या दाऊ ?
ये द्वापर-त्रेता की बातें
अब तो खुशियाँ भी हैं बिकाऊ।

आज फिर से दिवाली आई है
अम्बरीष, मत हो निराश.....
मन में अटल आस धरो
जन -जन में उल्लास भरो
धरा पर धन, संपदा, वैभव हो
माँ लक्ष्मी का आह्वान करो।

- अम्बरीष कुमार सिंह
मासं, के.का., मुंबई

ट्रांसफर आर्डर की रात

कई बरस हो गए घर से दूर,
ट्रांसफर की चल रही थी बात।
पता चली अंदर की खबर,
ऑर्डर आएंगे आज रात।।

फिर क्या था छूट गया डिनर,
नींद की नहीं रही फिकर।
फोन पर फोन बजने लगे,
दोस्त आपस में मंथन करने लगे।।

फोन की घंटी बजती तो उत्साह से उठते।
कोई खबर है क्या, दोनों यही प्रश्न करते।।

दूर-दूर के दोस्तों के नंबर निकलने लगे।
कहीं कुछ पता चल जाए ऐसी छानबीन करने लगे।।

दस से ग्यारह, ग्यारह से बारह,
और फिर तारीख बदल गई।
ऑर्डर अभी भी अपलोड हो रहे हैं,
व्हाट्सएप पर खबर मिल गई।।

फिर निराश होकर बैकअप प्लान सोचने लगे।
मनचाही पोस्टिंग न मिलने पर नौकरी छोड़ने लगे।।

इन्हीं वार्तालाप के साथ सुबह हो गई।
देर से ही सही पर लिस्ट अपलोड हो गई।।

किसी की घर से दूरी आधी हुई किसी की दोगुनी।
किसी की सुबह उल्लास पूर्ण हुई किसी की शोकनीय।।

यूनियन और मैनेजमेंट पर गुस्सा निकाला।
कुछ नहीं तो किस्मत को ही कोस डाला।।

बैकअप प्लान भूलकर नई जगह रवाना हो गए।
घर पहुंचने के इंतजार में 4 साल फिर चालू हो गए।।

- ऋषभ सिंह
क्षे.म.प्र.का., मंगलूरु

जिंदगी

जाने कहाँ खो रही जिंदगी
अपनी ही धूप-छाँव में।

ना जाने क्या ढूँढ़ती फिर रही
झूठे सपनों के गाँव में

एक धुँध है जो छटती नहीं
एक तलाश है जो मिटती नहीं

यूँ ही भटक रहा मन का पंछी
गुमशुदा राहों में

किस मंजिल की ख्वाहिश है
लिए अपनी निगाहों में

थोड़ा रूक, तू ठहर तो सही
साँस ले ले, घड़ी दो घड़ी

ये पल भी छिन ना जाए
उस पल की तलाश में

- कुमारी मालती
बारुईपुर शाखा,
ग्रेटर कोलकाता

भारत में दीपावली

दीपावली भारत का सबसे लोकप्रिय और सबसे बड़ा त्योहार है. लोग इस त्योहार का बड़े उत्साह के साथ आनंद लेते हैं. भारत और दुनिया भर में रहने वाले हिंदुओं के सबसे पवित्र त्योहारों में से दीपावली एक है. 'दीपावली' संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है - दीप + आवली. 'दीप' का अर्थ होता है 'दीपक' तथा 'आवली' का अर्थ होता है 'शृंखला', मतलब दीपों की शृंखला या दीपों की पंक्ति. दीपावली का त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनाया जाता है. विभिन्न समुदायों के लोग पटाखों और आतिशबाजी के जरिए इस उज्ज्वल त्योहार को मनाते हैं.

दीपावली का त्योहार मिट्टी के दीप और रंगोली से अपने घर को सजा कर, खुशियां बाँट कर, लक्ष्मी गणेश की पूजा कर, अच्छे-अच्छे पकवान बना कर हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है. दीपावली के इस त्योहार को भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है.

पूर्वी भारत : पूर्वी भारत में पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार एवं झारखंड राज्य शामिल हैं. इस दिन दीये तो जलाए ही जाते हैं, साथ ही पारंपरिक नृत्य को भी महत्व दिया जाता है. यहां प्रकाश कर लोग अपने घरों के दरवाजे खुले रखते हैं जिससे कि देवी लक्ष्मी प्रवेश कर सकें, क्योंकि देवी लक्ष्मी अंधेरे घर में प्रवेश नहीं करती हैं, ऐसी मान्यता है.

पश्चिम बंगाल में दीपावली का त्योहार बहुत उत्साह व उमंग से मनाया जाता है. इसकी तैयारी 15 दिन पहले ही शुरू कर दी जाती है. घर के बाहर रंगोली बनाई जाती है. दीपावली की मध्यरात्रि में लोग महाकाली की पूजा-अर्चना करते हैं.

ओडिशा में पहले दिन धनतेरस, दूसरे दिन महानिशा और काली पूजा, तीसरे दिन लक्ष्मी पूजा, चौथे दिन गोवर्धन और अन्नकूट पूजा और 5वें दिन भाईदूज मनायी जाती है. यहां आद्य काली पूजा का खासा महत्व है.

बिहार और झारखंड में बहुत धूमधाम से दीपावली का पर्व मनाया जाता है. यहां पारंपरिक गीत, नृत्य और पूजा का प्रचलन है. अधिकतर क्षेत्रों में काली पूजा का महत्व है. लोग एक-दूसरे से गले मिलते हैं, मिठाइयां बांटते हैं, पटाखे छोड़ते हैं. धनतेरस के दिन यहां बाजार सज जाते हैं.

पूर्वोत्तर भारत : दीपावली के दिन असम, मणिपुर, नगालैंड, मेघालय, त्रिपुरा, अरुणाचल, सिक्किम और मिजोरम इन उत्तर-पूर्वी राज्यों में काली पूजा का खासा महत्व है. दीपावली की मध्य रात्रि, तंत्र साधना के लिए सबसे उपर्युक्त मानी जाती है इसलिए तंत्र को मानने वाले इस दिन कई तरह की साधनाएं करते हैं. हालांकि इस दिन दीप जलाना, पारंपरिक व्यंजन बनाना, मिठाइयां खाना और पटाखे छोड़ने का प्रचलन भी है.

2. **पश्चिम भारत में दीपावली:**

पश्चिम भारत में गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दादरा एवं नगर हवेली और दमन एवं दीव के हिस्से आते हैं. अखंड भारत के दौरान सिंध और बलूचिस्तान के हिस्से भी आते थे.

गुजरात : गुजरात में सभी लोग दीपावली की पूर्व रात को अपने घरों

के सामने रंगोली बनाते हैं. पश्चिम भारत व्यापारी वर्ग का गढ़ रहा है तो यहां दीपावली में देवी लक्ष्मी के स्वागत का बहुत महत्व है. सभी घरों में देवी के चरणों के निशान बनाए जाते हैं और घरों को प्रकाशमान किया जाता है.

गुजरात में दीपावली नए साल के रूप में भी मनाई जाती है. इस दिन कोई नया उद्योग, संपत्ति की खरीद, कार्यालय, दुकान खोलना और विशेष अवसर जैसे विवाह संपन्न होना शुभ माना जाता है. गुजरात के घरों में देशी घी के दीये पूरी रात जलाए जाते हैं. फिर अगली सुबह इस दीये की लौ से धुआं एकत्र करके काजल बनाया जाता है, जो महिलाएं अपनी आंखों में लगाती हैं. यह बहुत शुभ प्रथा मानी जाती है. पश्चिमी भारत में दीपावली को 5 दिन तक मनाया जाता है

महाराष्ट्र : महाराष्ट्र में दीपावली का त्योहार 4 दिनों तक चलता है. पहले दिन 'वसु बारस' होती है. जिस दिन गाय और बछड़े का पूजन किया जाता है. दूसरा दिन धनतेरस पर्व मनाया जाता है. इस दिन व्यापारी लोग अपने बही-खाते का पूजन करते हैं. इसके बाद नरक चतुर्दशी पर सूर्योदय से पहले उबटन लगा कर स्नान करने की परंपरा है. चौथे दिन दीपावली मनाई जाती है, जब माता लक्ष्मी के पूजन के बाद बनाये गये करंजी, चकली, लड्डू, सेव आदि पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद लिया जाता है.

गोवा : सुंदर से समुद्री तट पर बसे गोवा में गोवावासियों की दीपावली पारंपरिक नृत्य और गान से शुरू होकर पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद लेकर चलती है. यहां दीपावली 5 दिनों तक चलती है. यहां दीपावली का त्योहार श्रीराम और श्रीकृष्ण से जुड़ा हुआ है. हालांकि दीपावली के दिन लक्ष्मी की पूजा की जाती है.

3. उत्तर भारत में दीपावली:

उत्तर भारत के अंतर्गत जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली और उत्तर प्रदेश आते हैं. उत्तर भारत में दीपावली का त्योहार भगवान राम की विजयी गाथा और श्रीकृष्ण द्वारा शुरू की गई नई परंपरा और उत्सव से जुड़ा है.

दीपावली के प्रथम दिन भगवान राम और उनकी पत्नी सीता तथा भाई लक्ष्मण 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या वापस लौटते हैं तो संपूर्ण नगर को दीपों से सजाया जाता है. यह त्योहार कार्तिक महीने की अमावस को मनाया जाता है. भगवान राम के अयोध्या वापस आने पर अयोध्या निवासियों ने दीये जलाकर और आतिशबाजी करके पूरे राज्य को प्रकाश से भरकर श्रीराम का स्वागत किया था. उत्तर भारत के लिए यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत के महत्व से जुड़ा है.

वैसे उत्तर भारत में दीपावली उत्सव की शुरुआत दशहरे के साथ ही शुरू हो जाती है जिसमें 'रामलीला' खेली जाती है. पाँच दिनों तक चलने वाले दीपोत्सव के दिन यहां पारंपरिक व्यंजन और मिठाइयां बनाई जाती हैं. साथ ही लोग नए वस्त्र पहनकर एक-दूसरे से मिलते हैं, पटाखे छोड़ते है और तरह-तरह के पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद चखते हैं. हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और पंजाब के लोग दीपावली की रात में जुआ खेलते हैं, क्योंकि वहां दीपावली में जुआ खेलना शुभ माना जाता है.

लक्ष्मी पूजन के दिन पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड और अन्य आसपास के इलाकों में घरों को दीपकों, वंदनवार और रंगोली से सजाया जाता है तथा रात में देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है. कुछ घरों में दूध के गिलास में चांदी के सिक्के को डाला जाता है और पूजा के बाद पूरे घर में सिक्के से दूध का छिड़काव किया जाता है. कुछ घरों में अस्त्र-शस्त्र की पूजा भी की जाती है.

हरियाणा के गांवों में लोग दीपावली कुछ अलग ढंग से मनाते हैं. त्योहार से कुछ दिन पहले लोग अपने घरों में पुताई करवाते हैं. घर की दीवार पर अहोई माता की तस्वीर बनाई जाती है जिस पर घर के हर सदस्य का नाम लिखा जाता है. उसके बाद पूरे आंगन को मोमबत्तियों और दीयों से सजाया जाता है. हर घर से 4 दीपक चौराहे पर रखे जाते हैं जिसे टोना कहते हैं.

4. दक्षिण भारत:

दक्षिण भारत में आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी, लक्षद्वीप और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के क्षेत्र आते हैं.

तमिलनाडु : दक्षिण भारत में हिन्दू संस्कृति अपने मूल रूप में बची हुई है. यहां दीपावली के एक दिन पूर्व मनाए जाने वाले नरक चतुर्दशी का विशेष महत्व है. दक्षिण भारत में दीपावली मात्र दो दिन का उत्सव होता है. इस दिन दीपक जलाने, रंगोली बनाने और नरक चतुर्दशी पर पारंपरिक स्नान करने का ज्यादा महत्व होता है.

दक्षिण भारत में सुबह अपने घरों के आंगन साफ-धो कर रंगोली बनायी जाती हैं. इस दिन नए कपड़े पहनने और मिठाई खाने की परंपरा है. दक्षिण में दीपावली से जुड़ी सबसे अनोखी परंपरा है जिसे 'थलाई दिवाली' कहा जाता है. इस परंपरा के अनुसार नवविवाहित जोड़े को दीपावली मनाने के लिए लड़की के घर जाना होता है. दोनों के परिवार वाले जोड़े को अनेक तरह के उपहार देते हैं.

आंध्रप्रदेश : आंध्र में दीपावली में हरिकथा का संगीतमय बखान किया जाता है. ऐसा माना जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा ने राक्षस नरकासुर को मार डाला था इसलिए सत्यभामा की मिट्टी की विशेष मूर्तियों की प्रार्थना की जाती है.

कर्नाटक : कर्नाटक में दीपावली के 2 दिन मुख्य रूप से मनाए जाते हैं अश्विजा कृष्ण चतुर्दशी को लोग तेल स्नान करते हैं. ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण ने नरकासुर को मारने के बाद अपने शरीर से रक्त के धब्बों को मिटाने के लिए तेल से स्नान किया था. दूसरे दिन दीपावली यानि बाली पदयमी को महिलाएं घरों में रंगोलियां बनाती हैं तथा गाय के गोबर से घरों को लीपती भी हैं.

5. **मध्य भारत में दीपावली:**

मध्य भारत यानि मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में दीपावली का पर्व 5 दिनों का होता है. यहां के आदिवासी क्षेत्रों में दीपदान पर आदिवासी स्त्री व पुरुष नृत्य करते हैं. यहां धनतेरस के दिन से यमराज के नाम का भी एक दीया घर के मुख्य द्वार पर जलाया जाता है.

मध्य भारत में पहला दिन नरक चतुर्दशी श्रीकृष्ण से जुड़ा है, दूसरा दिन देवता कुबेर और भगवान धन्वंतरि से जुड़ा है. तीसरा दिन माता लक्ष्मी और अयोध्या में राम की वापसी से जुड़ा है. चौथा दिन गोवर्धन पूजा अर्थात श्रीकृष्ण से जुड़ा हुआ है तो 5वां दिन भाई दूज का होता है.

मध्य भारत में रंगोली की जगह मांडना बनाने की परंपरा प्रचलित है. मांडना बहुत शुभ माना जाता है. यहां दशहरे के बाद से इस त्योहार की तैयारी शुरू हो जाती है. घरों की साफ-सफाई, लिपाई-पुताई की जाती हैं. नए सिरे से घरों में वस्तुएं जमाई जाती हैं. बाजार रंग-पेंट, फुलझड़ी-पटाखे, मोरपंख, दीये, लक्ष्मी की मूर्ति आदि सजावट के सामान और खाने-पीने की वस्तुओं से सज जाते हैं.

दीवाली का त्योहार भारत में एक प्रमुख खरीददारी की अवधि का प्रतीक है. उपभोक्ता खरीद और आर्थिक गतिविधियों के संदर्भ में दीवाली, पश्चिम में क्रिसमस के बराबर है. यह पर्व नए कपड़े, घर के सामान, उपहार, सोने और अन्य बड़ी ख़रीददारी का समय होता है. इस त्योहार पर खर्च और ख़रीद को शुभ माना जाता है क्योंकि लक्ष्मी को, धन, समृद्धि, और निवेश की देवी माना जाता है. दीवाली भारत में सोने और गहने की ख़रीद का सबसे बड़ा सी. जन है. मिठाई, 'कैंडी' और आतिशबाजी की ख़रीद भी इस दौरान अपने चरम सीमा पर रहती है. प्रत्येक वर्ष दीवाली के दौरान पांच हज़ार करोड़ रुपए के पटाखों आदि की खपत होती है.

दीवाली का पर्यावरण और स्वास्थ्य पर प्रभाव चिंता का विषय है. विद्वानों के अनुसार आतिशबाजी के दौरान इतना वायु प्रदूषण नहीं होता जितना आतिशबाजी के बाद. अध्ययन से पता चलता है कि आतिशबाज़ी के बाद धूल के महीन कण हवा में उपस्थित रहते हैं. यह प्रदूषण स्तर एक दिन के लिए रहता है, और प्रदूषक सांद्रता 24 घंटे के बाद वास्तविक स्तर पर लौटने लगती है. अत्री एट अल की रिपोर्ट अनुसार नए साल की पूर्व संध्या या संबंधित राष्ट्र के स्वतंत्रता दिवस पर दुनिया भर में आतिशबाजी समारोह होते हैं जो ओजोन परत में छेद के कारक हैं.

दीपावली पर सुप्रीम कोर्ट ने पटाखों पर रोक लगा दी है. कई लोगों ने सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के विरोध में अपनी आवाज उठाई है. कई लोग इसे धार्मिक रंग देने की फिराक में भी हैं. वहीं, कोर्ट के फैसले के विरोध के बाद कई जगहों से फैसले के समर्थन की भी आवाजें आई हैं. ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि हम यह सही मायने में जाने, समझें कि भारत में पटाखे फोड़ना कितना आवश्यक है.

देश में वायु प्रदूषण चरम पर पहुंच चुका है. इसका सबूत है वे छोटे-छोटे बच्चे, जो मुंह पर मास्क लगाए निकल कर अपने स्कूल जाते हैं. सच कहें तो उन्हें देखकर पहला सवाल दिमाग में यही उठता है कि यह उनका वर्तमान है, ऐसे में उनका भविष्य क्या होगा? देश में वायु प्रदूषण का स्तर खतरे के निशान तक पहुंच चुका है. बड़े शहरों में तो स्थिति और भी डराने वाली है. अगर कभी ट्रैफिक में फंस जाएं तो सांस लेना दूभर हो जाता है.

क्या पटाखे फोड़ने से ही दीपावली मनाना संभव है? क्या बिना पटाखों के दीपावली नहीं मनाई जा सकती है? क्या पटाखों के जरिए हम अपने रुपयों में आग नहीं लगा रहे? हमारे धर्म ग्रंथों में दीपावली पर दीये जलाने की बात कही गई है. आतिशबाजी का कहीं कोई जिक्र नहीं है. हमारे पूर्वजों ने भी इन्हीं का पालन किया और दीये जलाकर, रंग-बिरंगी रोशनी के माध्यम से इस पर्व को खुशी की सौगात दी है.

दीपावली का उल्लेख हमारे वेद-पुराणों में भी देखने को मिलता है. 7वीं शताब्दी में राजा हर्षवर्धन के नाटक में दीपोत्सव का उल्लेख है और 10वीं शताब्दी में राजशेखर के काव्यमीमांसा में भी इसका ज़िक्र किया गया है.

दीपावली केवल हिन्दुओं का ही त्योहार नहीं है, बल्कि अन्य धर्मों द्वारा भी इसे मनाया जाता रहा है. 14वीं शताब्दी में मोहम्मद बिन तुग़लक दीपावली मनाते थे. मुस्लिम बदशाहों द्वारा दीपावली को धूमधाम से मनाने का उल्लेख है. इनमें सबसे पहले बारी आती है बदशाह अकबर की. 16वीं शताब्दी में अकबर धूम-धाम से दीपावली मनाते थे. इस दिन दीपावली दरबार सजता था और रामायण का पाठ और श्रीराम की अयोध्या वापसी का नाट्य मंचन होता था. अकबर के बाद 17वीं शताब्दी में शाहजहां ने दीपावली की शान और भी बढ़ाई. वे इस मौके पर 56 राज्यों से अलग-अलग मिठाई मंगाकर 56 थाल सजाते थे. 40 फुट के बड़े 'आकाश दीया' रोशन करने की परंपरा थी, इसे सूरजक्रांत कहा जाता था.

भारत में दीपावली का त्योहार मनाया जाना सिर्फ परंपरा ही नहीं बल्कि जीवन का एक अंग बन गया है. हर भारतवासी हर साल इस त्योहार का बड़ी बेसब्री से इंतजार करता है.

कुलदीप कुमार
क्षे.का., कानपुर

दीपावली : दीपों का त्योहार

घुट गया अंधेरे का आज दम अकेले में
हर नजर टहलती है रोशनी के मेले में.

नजीर बनारसी का ये शेर बचपन से लेकर अब तक बीती हुई हर दीपावली की रात की स्मृतियों को मानस पटल पर अंकित कर देती है. दीपावली जिसे 'दिवाली' या 'दीवाली' भी कुछ लोग कहते है. 'दीपावली' संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है - दीप + आवली 'दीप' का अर्थ होता है दीपक और 'आवली' का अर्थ होता है 'शृंखला' जिसका अर्थ हुआ दीपों की शृंखला या दीपों की पंक्ति. ये कार्तिक मास की अमावस्या को मनाई जाती है. अमावस्या की रात माह की सबसे काली अंधेरी रात होती है, परंतु कार्तिक माह की अमावस्या की रात बाकी ग्यारह माह की अमावस्या से इतर हमारी खुशियों उमंगों, हर बुराई, हर परेशानी पर विजय का विश्वास और उस विश्वास में प्रज्ज्वलित किए गए अनगिनत दीपों की रोशनी में चमचमा रही होती है.

दीपावली सामान्यत: पाँच दिनों का त्योहार है. पहले दिन अर्थात त्रयोदशी को धनतेरस मनाई जाती है जिस दिन लोग झाड़ू और सोना-चाँदी आदि धातुएँ खरीदते हैं. और इसे लक्ष्मी जी के घर आने का प्रतीक माना जाता है.

प्रतीकों पर प्रश्न करना बालक मन का प्राकृतिक स्वभाव है. धीरे-धीरे 'ऐसे ही होता है' कह-कह कर इसे बदल दिया जाता है. परंतु मैं भाग्यशाली था. जब मैं यह सवाल 'झाड़ू या सोना-चाँदी के घर आने से लक्ष्मी जी घर कैसे आ जाती है?' लेकर अपनी दादी के पास पहुँचा तो उन्होंने पास बैठाया फिर कहा 'झाड़ू से गंदगी घर के बाहर जाती है. जब घर साफ-स्वच्छ होगा तब ही तुम पढ़ाई में मन लगा पाओगे और लोग अपने काम में मन लगायेंगे तभी लक्ष्मी आयेंगी. दूसरी बात सोना-चाँदी सिर्फ दिखावे के लिए नहीं होता बल्कि पैसे की तंगी के समय से बाहर निकालने का साधन है.' हम लोग दादी जी को अम्मा कहते थे, तब मैंने अम्मा से आगे भी बताने को कहा अन्य दिनों के बारे में भी तो उन्होने बताया- धनतेरस के दूसरे दिन नरक चतुर्दशी होती है उस दिन घर के बाहर एक दीपक जलाते हैं. उसके अगले दिन अमावस्या को दीपावली होती है जिस दिन रामजी आयोध्या वापस आए थे. उस रात को लक्ष्मी जी एवं गणेश जी की पूजा होती है और घर के हर कोने को दीपक से रोशन किया जाता है. अगले दिन गोवर्धन पूजा होती है जिसमें गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत का प्रतिरूप बनाया जाता है जिसके चारों तरफ महिलाएं बैठकर भजन व लोकगीत गाती हैं. फिर मैंने इन सबके पीछे की वजह के बारे में भी पूछा तो अम्मा ने हमारी आंचलिक भाषा ब्रज मे कहा - 'जहाँ ऐसो ही होबत है (अर्थात यहाँ ऐसा ही होता है). फिर मुस्कुराते हुए कहा कुछ खुद भी पता करो हमें तुम्हारे लिए बर्फी भी बनानी है.'

दीवाली में रंगोली के रंग-बिरंगे रंग से घर के आँगन को सजाते हैं, व्यापारी भी अपनी दुकानों, कार्यालयों को झाड़-पोंछ कर सजाते हैं, इस अवसर पर अनेक लोग अपने घरों की रँगावट करते हैं और तरह-तरह से घर की सजावट करते हैं. दुकानदार अपनी दुकानों को रंगीन लटकनों एवं रोशनी से सजाते हैं. बाजार मानो दुल्हन बन जाती है. बच्चे और बड़े पटाखे जलाकर खुशियाँ मनाते हैं. दिवाली उत्सव की असली रौनक इस रात को जलाये जाने वाले दीपकों और आतिशबाज़ी से होती है. अंधेरी रात में करोड़ों-करोड़ों दीपक जलते हैं तो ऐसा अनुपम एवं मनोरम दृश्य देखने को बनता है.

भारत के अलग-अलग राज्यों में दिवाली मनाने के अपने विभिन्न स्वरूप हैं उदाहरणस्वरूप बंगाल एवं ओड़ीशा राज्य के द्वारा दीपावली के पर्व को इसलिए मनाया जाता है कि इस दिन माता शक्ति के रूप में महाकाली का रूप धारण किया गया था और इस दिन लक्ष्मी जी के स्थान पर यहाँ माँ काली की पूजा की जाती है. 1577 इसवी पूर्व इसी दिन स्वर्ण मंदिर की नीव रखे जाने की खुशी में पंजाब में उस दिन दीपावली मनाया जाता है. तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश राज्य में दिवाली को द्वापर में कृष्ण नरकासुर के वध के खुशी में कृष्ण की पूजा करके मनाया जाता है. देश के विभिन्न राज्यों में दीपवाली मनाने का स्वरूप या वजह कुछ भी हो परंतु सभी को यह दीपोत्सव जोड़ने का काम करती है. हमारे देश के अलावा विदेश के भी कुछ देशों जैसे श्रीलंका, मलेशिया एवं नेपाल में दीपावली मनायी जाती है.

दीपावली हमारा धार्मिक त्योहार है. दीपावली का पर्व सभी पर्वों में एक विशिष्ट स्थान रखता है. हमें अपने पर्वों की परम्पराओं को हर स्थिति में सुरक्षित रखना चाहिए. परम्पराओं से हमें उसके आरंभ और उसके उद्देश्य को याद करने में आसानी होती है.

परम्पराएँ हमें उस पर्व के आदिकाल में पहुंचा देती हैं जहाँ पर हमें अपनी आदिकालीन संस्कृति का ज्ञान होता है. आज हम अपने त्योहारों को भी आधुनिक सभ्यता का रंग देकर मनाते हैं लेकिन हमें उसके आदि स्वरूप को बिगाड़ना नहीं चाहिए. इसे हमेशा यथोचित रीति से मनाना चाहिए. यह त्योहार नया जीवन जीने का उत्साह प्रदान करता है. हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि हमारे किसी भी काम और व्यवहार से किसी को दु:ख न पहुंचे तभी दीपावली का त्योहार मनाना सार्थक होगा.

अंत में बस यह कहूँगा कि पूजा-पाठ व्यक्तिगत चीज है और त्योहार सामाजिक. पूजा करने की विधि भी अलग-अलग घरों, कुनबों एवं क्षेत्रों में अलग-अलग होती है. परंतु त्योहार सबलोग मिल-जुल कर मनाते है. और दीपों से अपने आस-पास के वातावरण को उज्ज्वलित कर देते हैं. हफीज बनारसी दीपोत्सव को उल्लेखित करते हुए लिखते हैं कि -

'सभी के दीप सुंदर है, हमारे क्या, तुम्हारे क्या
उजाला हर तरफ है, इस किनारे क्या, उस किनारे क्या'

- कुमार गौरव
तोप्रान्कुडी शाखा, कोट्टयम

दीपावली - पौराणिकता, ऐतिहासिकता

दीपावली संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बनाया गया है जिसे दीप और आवली यानि दीपों की श्रृंखला के नाम से भी जाना जाता है. दीपक को स्कंद पुराण में सूरी के हिस्से का प्रतिनिधित्व करने वाला माना गया है. दीपावली हिन्दू धर्म में मनाए जाने वाला सबसे बड़ा और प्राचीन त्योहार है जो गरीब से लेकर अमीर तक अपनी-अपनी क्षमता के आधार पर सभी बड़े ही हर्षोल्हास से मनाते हैं. यह त्योहार विशेष रूप से दीपोत्सव या प्रकाश पर्व के रूप में अपनी विशेष मान्यता रखता है. जो अंधकार से प्रकाश की और ले जाने वाला त्योहार है, जिसमें दीप जलाकर सम्पूर्ण वातावरण को रौशन कर दिया जाता है. यह त्योहार कार्तिक महीने की अमावस्या को दीया जलाकर और रौशनी कर किया जाता है जिसमें सभी विशेष रूप से लोग माता लक्ष्मी की पूजा और उपासना बड़ी ही धूमधाम से करते हैं जिसके लिए लोग अपने घरों में लीपा-पोती कर व पूरे घर की साफ-सफाई करते हैं और पूरे घर में रंग लगाकर घर को चमकाया जाता है. दीपावली के दिन आम और फूलों का तोरण बांध कर सभी नए कपड़े पहनकर पूर्ण भाव से दीप जलाकर रोशनी की जाती है एवं इसी दिन माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है.

दीपावली का पौराणिक महत्व त्रेतायुग में जब भगवान श्री राम लंका युद्ध जीत कर अपने मातृभूमि अयोध्या अपनी भार्या सीताजी के साथ पूरे 14 वर्ष के बाद पहुंचे तो कहा जाता है कि इसी खुशी में लोगों ने सम्पूर्ण अयोध्या नगरी में दीप जलाए थे और बड़े ही धूमधाम से नाचते गाते हुए श्री भगवान राम और माता सीता का स्वागत किया था. वह दिन कार्तिक अमावस्या का दिन था जिसे भगवान श्री राम और माता सीता जिन्हें माँ लक्ष्मी का रूप माना जाता है और श्री राम के छोटे भाई लक्ष्मण के वनवास के पश्चात अयोध्या पहुंचने की खुशी में दीपावली के रूप में मनाया जाता है.

दीपावली पर्व से संबंधित कई ऐतिहासिक मान्यताएं और धारणाएं है जिनका महत्व काफी है, जिसमें से एक कठोपनिषद के अनुसार नचिकेता जन्म-मरण का रहस्य यमराज से जानकर मृत्यलोक में इसी कार्तिक अमावस्या को लौट आए थे. इसलिए नचिकेता का मृत्यु पर विजय के रूप में भी मनाया जाता है और इस दिन लोगों ने घी के दीप जलाकर मृत्यु पर विजय प्राप्त करने पर इसे मनाया था जो आज भी इसी परंपरा को दर्शाता है. इसी विजय दिवस पर आर्यवत ने पहली दीपावली मनाई थी एसी ख्याति है.

एक पौराणिक घटना के अनुसार ऋषि दुर्वासा द्वारा देवराज इन्द्र को दिये गए शाप के कारण श्री लक्ष्मीजी को समुद्र में जाकर समाना पड़ा था और लक्ष्मीजी के बिना देवगण बलहीन और श्री हीन हो गए. इस परिस्थिति में असुरों का अत्याचार बढ़ गया तब भगवान विष्णु की याचना करने पर भगवान विष्णु ने समुद्र मंथन की लीला रची थी और कार्तिक अमावस्या को लक्ष्मी समुद्र मंथन से प्रकट हुई और श्री विष्णु को प्राप्त किया. माता लक्ष्मी की कृपा से ही देवताओं ने असुरों पर विजय पाई और इसलिए खुशी में प्रति वर्ष दीप जलाकर खुशियॉ मनाई जाती हैं.

द्वापर युग में जब भगवान श्री कृष्ण बाल्यावस्था में कार्तिक अमावस्या को ही पहली बार गाय को आहार देने वन गए और भगवान श्री कृष्ण ने इसी कार्तिक अमावस्या के दिन देह त्याग किया था. इसी दीपावली के दिन भगवान श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध कर देवताओं-गंधर्वों की सोलह हजार कन्याओं को बंदी से मुक्त करवाया था इसलिए भी पौराणिक मान्यता में इस दिन को विशेष दिन का महत्व प्राप्त है और इसी दिन बंदी से मुक्त होने की खुशी में दीप जलाकर खुशियाँ मनाई गई थी. जो बाद में एक परंपरा में बदल गया और उसे दीपावली का नाम दे दिया गया.

दीपावली यह एक ऐतिहासिक पर्व है जिसका संबंध पौराणिक काल की कई घटनाओं से है. जिसमें से एक इसी कार्तिक अमावस्या के दिन भगवान विष्णु ने वामन अवतार महर्षि कश्यप के घर अदिति के

गर्भ से जन्म लिया था. जब राजा बलि भृगकच्छ अश्वमेघ यज्ञ कर रहे थे और वहां राजा बलि से संकल्प लेने के बाद तीन पग धरती मांग ली और अपने पहले पग में समस्त भूलोक और दूसरे में त्रिलोक नाप लिया और अपना संकल्प पूर्ण करने के लिए राजा बलि ने विवश होकर अपना सिर आगे रख दिया. और इसी कारण भगवान प्रसन्न होकर राजा बलि को सूतक लोक का राजा बना दिया और स्वर्ग को पुन: इंद्र को सौप दिया इसी खुशी में कार्तिक अमावस्या को दीप जलाकर खुशियां मनाई गई.

दीपावली के दिन ही महान समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक और सत्यार्थ प्रकाशक के रचयिता महर्षि दयानंद सरस्वती की महान आत्मा ने 30 अक्तूबर 1883 को कार्तिक अमावस्या के दिन अपना नश्वर शरीर त्याग कर निर्वाण प्राप्त किया था. परमसंत स्वामी रामानन्द का जन्म इसी दीपावली के दिन हुआ था और देह त्याग भी इसी कार्तिक अमावस्या के दिन हुआ, जिसे दीपावली का दिन कहा जाता है. और इसीलिए भी इतिहास में कार्तिक अमावस्या यह दीपावली का दिन विशेष रूप से महत्व रखता है. इस प्रकार रामानंद तीर्थ के जन्म और निर्वाण दोनों दिवस के रूप में दीपावली विशेष रूप से महत्व रखती हैं.

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध के समर्थक एवं अनुयायियों ने गौतम बुद्ध के स्वागत में हजारों, लाखों दीप जलाकर दीपावली मनाई थी. इसी दिन सम्राट विक्रमादित्य का राज्याभिषेक भी हुआ था. इसलिए इस दिन दीप जलाकर दीपावली उत्सव मनाया गया था. ईसा पूर्व में चौथी शताब्दी में कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार कार्तिक अमावस्या के अवसर पर मंदिर और घाटों पर बड़े पैमाने पर दीप जलाकर दीपावली मनाई गई थी.

दीपावली सभी धर्मो में अलग-अलग महत्व रखती है इसी दिन जैन धर्म में विख्यात एक मान्यता के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने भी दीपावली के ही दिन बिहार के पावापुर में अपना शरीर त्याग दिया था. भगवान महावीर निर्वाण सावंत इसके दूसरे दिन से शुरू होता है इसलिए अनेक प्रांतों में जैन धर्म के अनुसार दीपावली से ही नए वर्ष की शुरुआत मानते है. दीपोत्सव का वर्णन प्राचीन जैन ग्रंथों में मिलता है. कल्पसूत्र में कहा गया है कि महावीर भगवान के निर्वाण के साथ जो अनंत ज्योति सदा के लिए बुझ गई है, आओ हम उसकी क्षतिपूर्ति के लिए उसी ज्योति के प्रतीक दीप जलाए.

'दीन ए एलाही' के प्रवर्तक मुगल सम्राट अकबर के शासन में दौलतखाने के 40 गज ऊंचे बांस पर एक बड़ा आकाशदीप दिवाली के दिन ही लटकाया जाता था यही नहीं मुगलकाल में बादशाह जहाँगीर, बहादुर शाह जफर यह सभी दीपावली को एक त्योहार के रूप में मनाते थे. शाह आलम द्वितीय के समय में समूचे शाही महल को दीपावली के दीयों से सजाया जाता था. इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बड़े पैमाने पर सभी धर्मो के लोग हिस्सा लेते थे.

दीपावली बड़े ऐतिहासिक और पौराणिक मान्यता के साथ जुड़ा हुआ त्योहार है, मुगल सम्राट जहाँगीर ने ग्वालियर के किले में भारत के सारे सम्राटों को बंद कर रखा था इन बंदी सम्राटों में जो सिख धर्म के छठवें गुरु हरगोविंद सिह जी भी थे. गुरु गोविंद जी बड़े वीर दिव्यात्मा थे. उन्होंने अपने पराक्रम से जहाँगीर की कैद से न केवल स्वयं को मुक्त कराया था बल्कि शेष राजाओं को भी बंदी गृह से मुक्त करवाया था और इसी दिन दीप जलाकर सभी ने खुशियाँ मनाई थी. पंजाब के अमृतसर के स्वर्ण मंदिर का निर्माण भी कार्तिक अमावस्या के दीपावली के शुभ अवसर पर शुरू हुआ था.

कुल मिलकर दीपावली पर्व से जुड़ी हर धार्मिक और पौराणिक मान्यताओं और ऐतिहासिक घटना इस दीपोत्सव के प्रति जनमानस में अगाध आस्था तथा विश्वास बनाए हुए है. दीपावली न केवल धार्मिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि वैज्ञानिक और अर्थशास्त्र और रोजगार के दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. दीपावली पर्व ऐसे समय पर आता है जब मौसम वर्षा ऋतु से निकल कर शरद ऋतु में प्रवेश करता है इस समय वातावरण में वर्षा ऋतु में पैदा हुए विषाणु एवं कीटाणु सक्रिय रहते हैं. और घर में दुर्गंध व गंदगी भर जाती है. दीपावली के दिन घर, दुकानों एवं दफ्तरों की साफ-सफाई और रंगाई-पुताई तो आस्था एवं विश्वास के साथ की जाती है ताकि श्री लक्ष्मीजी यहाँ वास करें. लेकिन इस आस्था व विश्वास के चलते वर्षा ऋतु से उत्पन्न गंदगी कीटाणु समाप्त हो जाते हैं. घी एवं वनस्पति तेल के दीप जलाने से केवल वातावरण की दुर्गंध को समाप्त नहीं करते बल्कि वातावरण के कीटाणु और विषाणु भी समाप्त हो जाते हैं, जिससे वातावरण शुद्ध बनने में यही दीपोत्सव महत्वपूर्ण और वैज्ञानिक आधार के रूप में सहयोग प्रदान करता है. इसलिए दीपोत्सव के प्रकाश पर्व को पारंपरिक रूप से मनाना चाहिए.

दीपावली आर्थिक रूप से भी देश की अर्थव्यवस्था को तेज गति से बढ़ाने में सहयोग देने वाला एक बड़ा ही महत्वपूर्ण त्योहार है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था में रोजगार के अवसर को बढ़ा कर सम्पूर्ण अर्थतंत्र में भारी उछाल और गति के साथ उत्साह लाता है. जिसमें लोग नए कपड़े, घर, दुकान, नए आभूषण, मिठाई या नई वस्तुओं की खरीदी कर एक नई शुरुआत करते हैं जिससे सम्पूर्ण बाजार गुलजार रहता है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार का सृजन करता है. सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में गति प्रदान करने में बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान दीपोत्सव यानि दीपावली त्योहार का है. इसलिए यह त्योहार सम्पूर्ण भारतीय समाज में सबसे बड़ा त्योहार माना जाता है. इसीलिए दीपावली का त्योहार धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, पौराणिक, और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जो हमारी परंपरा और संस्कृति का अत्यंत ही महत्वपूर्ण भाग है.

- हेमंत शिवकुमार जोशी
कुरनखेड शाखा, अमरावती

समाज और दीपावली

भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्योहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्याधिक महत्त्व है. इसे दीपोत्सव भी कहते हैं. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का अर्थ है 'अंधेरे से प्रकाश की ओर जाना'. ऐसी मान्यता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात वापस अयोध्या लौटे थे. अयोध्यावासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से उल्लासित था. श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीये जलाए. कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी. तब से ही प्रत्येक भारतीय प्रति वर्ष इस प्रकाश-पर्व दीपावली को हर्षोल्लास से मनाते हैं. यह पर्व ग्रिगेरियन कैलेण्डर के अनुसार अक्टूबर या नवंबर महीने में मनाया जाता है. दीपावली दीपों का त्योहार है. भारतीयों का यह विश्वास है कि सत्य की सदैव विजय होती है, असत्य का नाश होता है. दीपावली का त्योहार यही चरितार्थ करती है. दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है. कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियाँ प्रारंभ हो जाती हैं. लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई का कार्य आरंभ कर देते हैं. घरों में मरम्मत, रंग-रोगन, सफ़ेदी आदि का कार्य होने लगता है. लोग दुकानों को भी साफ़-सुथरा कर सजाते हैं. बाज़ारों में गलियों को भी सुनहरी झंडियों से सजाया जाता है. दीपावली से पहले ही घर-मोहल्ले, बाज़ार सब साफ-सुथरे व सजे-धजे दिखाई देते हैं.

भारत के त्योहारों की मुख्य विशेषता यह है कि ये सामाजिक एकता के अनुपम आदर्श हैं. इसी भाव के साथ प्राचीन काल से दीपावली का यह पर्व हम सभी मनाते चले आ रहे हैं. वर्तमान में पर्वों का यह शाश्वत भाव आज भी प्रचलन में है. आजीविका के लिए घर से दूर रहने वाले कई व्यक्ति त्योहारों को अपने घर और समाज के साथ ही मनाते हैं. दीपावली के त्योहार पर भी ऐसा ही स्वरुप दिखाई देता है. भारतीय आवागमन के साधनों में त्योहारों पर बढ़ती भीड़ इसका साक्षात्कार भी करा रही है. वास्तव में दीपावली का त्योहार आज भी परिवार और समाज के एकत्रीकरण का ही त्योहार है. दूर रहने वाले लोग भी त्योहार के अवसर पर अपने घर जाकर ही त्योहार मनाते हैं. इसलिए यह कहा जा सकता है कि आज के इस आधुनिक वातावरण के दौर में भी दीपावली का त्योहार अपनी परंपराओं को जीवंत बनाए हुए है. देश की कई संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले मिलन कार्यक्रम भी दीपावली को सार्थकता प्रदान कर रहे हैं. दीपावली का पावन पर्व पूरे देश में एक ही दिन मनाया जाता है, जो देश के सांस्कृतिक परिवेश का दर्शन कराता है, यही अनेकता में एकता का आदर्श है.

भारत में दीपावली का अलग ही महत्व है. वैसे तो भारत का प्रत्येक पर्व प्रकृति और संस्कृति से गहरा सामंजस्य रखते हैं, लेकिन वर्तमान में हम अपनी शाश्वत परंपराओं को लगभग भुलाने की मुद्रा की ओर कदम बढ़ा रहे हैं. वास्तव में प्राकृतिक वातावरण से तालमेल स्थापित

करने के लिए ही भारतीय त्योहार मनाए जाते हैं. इन त्योहारों में संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने का संदेश समाहित है.

भारतीय संस्कृति में त्योहारों का अलग ही महत्व है. वर्ष भर होने वाले छोटे-बड़े त्योहार हमारे समाज को धर्म और संस्कृति से जोड़े रखते हैं. इन्हीं त्योहारों में से ही एक त्योहार है दीपावली. दीपावली का त्योहार जिसे हम प्रकाश का त्योहार कहते हैं. आज क्या यह प्रकाश का त्योहार रह गया है. हम सभी बाहर तो प्रकाश की व्यवस्था कर देते हैं, लेकिन हमने अपने हृदय में कितना प्रकाश किया है. हम आंतरिक रुप से आज भी अंधेरे का हिस्सा हैं. आज के दौर में जिस प्रकार से सामाजिक विषताएं पनप रही हैं, वह इसी अंधकार रुपी जीवन का हिस्सा हैं. दीपावली पर्व बाह्य जगत को प्रकाशित करने के साथ आंतरिक रुप से प्रकाशित होने की भी प्रेरणा भी देता है. यह प्रेरणा ही हमारे जीवन का पथ आलोकित करती है. हम केवल शब्दों के द्वारा शुभकामनाएं देकर एक दूसरे का पथ आलोकित करने की बात तक ही सीमित होते जा रहे हैं. जिनके मन में ज्ञान का दीपक नहीं जला, उसे शुभकामनाएं देने का कोई अधिकार नहीं है.

वास्तव में दीपावली का त्योहार प्रकाश का त्योहार होने के साथ-साथ हमें हमारे अपनों को हमारे करीब आने का त्योहार भी है. क्योंकि हमारे अपने दूर होने के बाद भी इस त्योहार पर अपने घर आते हैं, जिससे कहा जाता है कि यह ऐसा त्योहार है, जो अपनों की दूरी को समाप्त करता है.

दीपावली के त्योहार से जुड़ी एक किंवंदती है कि अयोध्या के राजा भगवान श्रीराम जब लंका पर विजय करके लौटे थे, तब अयोध्या में उनके स्वागत में चारों ओर दीप प्रज्वलित कर आनंद का उत्सव मनाया गया था, उसी आनंद और उत्साह का प्रदर्शन करते हुए हमारे देश में दीपावली का त्योहार मनाया जाता है, लेकिन वर्तमान में आधुनिकता के दौर में कार्यों के चलते लोग एक दूसरे से दूर रहने या दूसरे शहरों में रहने के लिए मजबूर होते हैं, लेकिन जब दीवाली का त्योहार आता है तो वह व्यक्ति चाहे कितनी भी दूर क्यों न हो अपनों के निकट आने का हर संभव प्रयास करता है. तो यहां हम कह सकते हैं कि दीवाली एक ऐसी डोर है जो हमें हमारे अपनों से जोड़ने का काम करती है.

दिवाली जहां अपनों को समीप लाती है, वहीं जो लोग समयाभाव के कारण नहीं मिल पाते हैं, उनको भी मिला देती है. हम जानते हैं कि दिवाली पर कहीं-कहीं दिवाली मिलन के कार्यक्रम होते हैं, जो सामाजिक एकता को बढ़ावा देने का ही काम करते हैं. इसके अलावा दिवाली के पर्व पर एक-दूसरे के घर जाकर शुभकामनाएं प्रदान करना दिवाली मिलन जैसा ही कार्यक्रम बन जाता है. इसलिए कहा जा सकता है कि दिवाली मात्र पटाखे छोड़ने का त्योहार नहीं है, सभी को करीब लाने का भी त्योहार है.

यह भी सर्वविदित है कि वन गमन के दौरान भगवान राम ने निषाद राज को भी गले लगाया, केवट को भी पूरा सम्मान दिया. इतना ही नहीं भगवान राम ने उन सभी को अपना अंग माना जो आज समाज में हेय दृष्टि से देखे जाते हैं. इसका यही तात्पर्य है कि भारत में कभी भी जातिगत आधार पर समाज का विभाजन नहीं था. पूरा समाज एक शरीर की ही तरह था. जैसे शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द होता है, तब पूरा शरीर अस्वस्थ हो जाता था. इसी प्रकार समाज की भी अवधारणा है, समाज का कोई भी हिस्सा वंचित हो जाए तो सामाजिक एकता की धारणा समाप्त होने लगती है. हमारे देश में जाति आधारित राजनीति के कारण ही समाज में विभाजन के बीजों का अंकुरण किया गया. जो आज एकता की मर्यादाओं को तार-तार कर रहा है.

भगवान राम ने अपने वनवास काल में समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का काम पूरे कौशल के साथ किया. समाज की संग्रहित शक्ति के कारण ही भगवान राम ने आसुरी प्रवृति पर प्रहार किया. समाज को निर्भयता के साथ जीने का मार्ग प्रशस्त किया. इससे यही शिक्षा मिलती है कि समाज जब एक धारा के साथ प्रवाहित होता है तो कितनी भी बड़ी बुराई हो, उसे नतमस्तक होना ही पड़ता है. सीधे शब्दों में कहा जाए तो संगठन में ही शक्ति है. इससे यह संदेश मिलता है कि हम समाज के साथ कदम मिलाकर नहीं चलेंगे तो हम किसी-न-किसी रुप में कमजोर होते चले जाएंगे और हमें कोई-न-कोई दबाता ही चला जाएगा. सम्पूर्ण समाज हमारा अपना परिवार है. कहीं कोई भेदभाव नहीं है. जब इस प्रकार का भाव बढ़ेगा तो स्वाभाविक रुप से हमें किसी भी व्यक्ति से कोई खतरा नहीं होगा.

भगवान श्रीराम का जीवन हमारे सामाजिक जीवन के उत्थान के लिये अत्यंत ही प्रासंगिक इसलिए भी है क्योंकि वर्तमान में हम देख रहे हैं कि कुछ स्वार्थी राजनीतिक तत्व अपना हित साधने के लिये समाज में फूट पैदा करने का प्रयास करते हैं. समाज की फूट का दुष्परिणाम हमारे देश ने भोगा है. इसी फूट के कारण ही भारत वर्षों तक गुलाम बना. आज भी देश में लगभग वैसी ही स्थिति है. जो काम पहले अंग्रेज करते थे, वह काम आज राजनीतिक दल कर रहे हैं. हमें आज पुनः सामाजिक एकता के प्रयासों को गति प्रदान करने होगी, तभी हमारा देश शक्तिशाली बनेगा.

सामाजिक एकत्रीकरण के लिए मनाए जाने वाले त्योहारों को हमने ही दीवारों में कैद कर लिया है. हम क्यों नहीं त्योहारों को समाज का हिस्सा बनाते हैं? वास्तविकता यह है कि आज हम अकेले में ही त्योहारों का आनंद लेने का निरर्थक प्रयास करते दिखाई देते हैं. लेकिन अकेले में त्योहार का आनंद वैसा कभी नहीं मिल सकता, जो पहले था. इसलिए हमें अपने त्योहारों को सामाजिकता की ओर ले जाने की ओर अग्रसर होना पड़ेगा, तभी त्योहारों की सार्थकता है और तभी दीवाली की सार्थकता है.

- प्रेमा पाल
क्षे.का., कानपुर

दीपावली : संकल्पना एवं परंपरा के साथ...

भारत पर्वों का देश है. यहाँ मनाया जाने वाला प्रत्येक त्योहार भारत की विविधता इसकी समृद्ध संस्कृति और परंपराओं की वास्तविक अभिव्यक्ति होती है. कार्तिक महीना इस देश के लिए सबसे बड़ा त्योहार दीपावली लेकर आता है. दीपों का यह त्योहार सबके बीच हर्षोल्लास का माहौल तैयार करता है. दीपावली भारतीय संस्कृति का सबसे रंगीन और विविधता भरा पर्व है जब पूरे भारत में दीयों और रोशनी की अलग-अलग छटा देखने को मिलती है.

दीपावली की संकल्पना : एक प्रकार से दीपावली का त्योहार भारत की सामासिक सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधि पर्व है. इसमें भगवान राम की लंका विजय के बाद अयोध्या आगमन से लेकर बुद्ध, महावीर और गुरु नानक तक की स्मृतियां जुड़ी हुई हैं. ऐतिहासिक दृष्टि से यह अत्यंत प्राचीन त्योहार है. बौद्ध ग्रंथों में इसे 'यक्षरात्रि' के रूप में संबोधित किया गया है. यक्ष चूंकि समृद्ध होते थे, इसलिए यह पर्व बड़े उल्लास से मनाया जाता था और सम्भवत: यही कारण है कि समृद्धि से इस पर्व की चेतना आज भी जुड़ी हुई है.

दीपावली का पर्व मिट्टी के दीयों के बिना मनाए जाने की कल्पना नहीं की जा सकती है. प्रज्ज्वलित दीया, मिट्टी और उजास का संयोग है. मिट्टी सृजन की सम्भावना है और उजास इस सम्भावना को परिणाम में बदल देने का संकल्प. लेकिन आज हम उसे केवल कृत्रिम रोशनी करने तक सीमित कर दिया है, जबकि दीपावली अंधकार के आलोक में परिवर्तन का पर्व है. यह स्वयं को दीप्त करने का एक आंतरिक अनुष्ठान है. यदि दीये के अंत:करण में झांककर देखा जाए तो पाएंगे कि वहाँ कितनी आत्मीय तरलता, निश्छलता, मार्मिक संवेदना, अदम्य जिजीविषा और स्वाभाविक आत्माभिमान भरा है. दीये में भरे तेल की तरलता इतनी आत्मीय है कि वह हमारी उंगलियों का स्पर्श पाकर उन्हें अपने नेह से भिगो देती है. यह तरल स्निग्धता इतनी निष्कपट है कि तीली की लौ से जैसे ही स्पर्श पाती है, दीपशिखा बन जगमगाने लगती है. दीपावली के दीपक की इस लौ में न अहंकार होता है और ना दीनता होती है. दीये की बाती की लौ से निकलती रोशनी, आत्मीय ऊष्मा और उजास देती है, तपन नहीं देती. यह उजास बड़े अनौपचारिक भाव से हमारे मन में प्रविष्ट होता है और फिर हमारे सारे अस्तित्व को बाहर और अंदर से जगमगा देती है. इस पर्व की यह भी विशेषता है कि यह न केवल धार्मिक बल्कि आध्यात्मिक दर्शन भी प्रस्तुत करता है. आज कटुता, शत्रुता और ईर्ष्या भरे माहौल में दिवाली संदेश देती है कि मनुष्य को अपने सभी स्वार्थों का त्याग कर केवल धर्म का पालन करना तथा अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते रहना है.

दीपावली का इतिहास: इस त्योहार को समृद्धि की देवी लक्ष्मी से जोड़ा जाता है. लेकिन लक्ष्मी की यह व्यंजना है ही नहीं. ऋग्वेद के श्रीसूक्त में लक्ष्मी के 70 नाम हैं. इनमें लक्ष्मी, ज्वलंती, हरिणी, मनोज्ञा, माता, प्रभासा, हिरण्या और भूदेवी हैं. हमारे लोक ने सार्थक लक्ष्मी स्वरूप को गढ़ लिया. लोकमानस आत्मदीप की आराधना और भूदेवी की वंदना करता है. यही लोक पहले लक्ष्मी के अन्नपूर्णा स्वरूप को पूजता था तथा धान्योत्सव मनाता था, लेकिन कालांतर में लक्ष्मी केवल 'श्री' से जुड़ गईं तथा धान्योत्सव धन का उत्सव बन गया. ईसा पूर्व दूसरी सदी के माथुरी कला में शुंगकालीन लक्ष्मी की एक मातृ प्रतिमा मिली है. इस प्रतिमा में लक्ष्मी हाथ में अन्न की बाली लिए खड़ी हैं. यह उनका अन्नपूर्णा रूप है. पद्म पुराण और स्कन्द पुराण में दीवाली का उल्लेख मिलता है. माना जाता है कि ये ग्रन्थ पहली सहस्त्राब्दी के दूसरे भाग में लिखे गए थे. दीये को स्कन्द पुराण में सूर्य के हिस्सों का प्रतिनिधित्व करने वाला माना गया है.

7वीं शताब्दी के संस्कृत नाटक नागनंद में राजा हर्ष ने इसे दीपप्रतिपादुत्सव: कहा है जिसमें दीये जलाये जाते थे. 9वीं शताब्दी में राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इसे दीपमालिका कहा है जिसमें घरों की पुताई की जाती थी और तेल के दीयों से रात में घरों, सड़कों और बाजारों को सजाया जाता था. फारसी यात्री अलबरुनी ने अपने 11वीं सदी के संस्मरण में दीवाली को कार्तिक महीने में नये चंद्रमा के दिन पर हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला त्योहार कहा है.

अयोध्या की दीपावली के रूप में यह पर्व श्री राम के अयोध्या लौटने की स्मृति से भी जुड़ा है. अयोध्या में मनाया गया यह पर्व हमारी ज्योर्तिमय विरासत बन गया. इसलिए कि राम की विजय राजपाट पाने की विजय नहीं थी, वह मर्यादा की विजय थी, हमारी संस्कृति के सनातन मूल्यों और उन मानवीय गुणों की विजय थी जिनके वे प्रतिनिधि थे. सर्वोच्च रूप में यह माता सीता की आस्था और तपस्या की वह विजय थी, जिसने स्त्री शक्ति की प्रामाणिकता को सिद्ध किया था.

एक कहावत यह है कि दीपावली का पर्व सबसे पहले राजा महाबली के काल से प्रारंभ हुआ था. विष्णु ने तीन पग में तीनों लोकों को नाप लिया. राजा बली की दानशीलता से प्रभावित होकर भगवान विष्णु ने उन्हें पाताल लोक का राज्य दे दिया, साथ ही यह भी आश्वासन दिया कि उनकी याद में भू-लोकवासी प्रत्येक वर्ष दीपावली मनाएंगे. तभी से दीपोत्सव का पर्व प्रारंभ हुआ. यह भी कहा जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु ने राजा बली को पाताल लोक का स्वामी बनाया था और इन्द्र ने स्वर्ग को सुरक्षित जानकर प्रसन्नतापूर्वक दीपावली मनाई थी. कुछ क्षेत्रों में दीवाली को यम और नचिकेता की कथा के साथ भी जोड़ते हैं. दीपावली आलोक की अभ्यर्थना का पर्व है. आलोक का यह अभिनंदन इसलिए किया जाता है क्योंकि आंखें प्रकाश में पंथ निहार लेती हैं, स्थिरता भंग हो जाती है, पांव गतिशील हो उठते हैं और यात्रा आरम्भ हो जाती है.

यह भी कहते हैं कि इसी दिन समुद्र मंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुए थे. यह भी माना जाता है कि दिवाली की ही रात लक्ष्मी और विष्णु विवाह हुआ था. यह भी माना जाता है कि इसी दिन मां दुर्गा ने क्रोधित हो महाकाली का रूप धारण कर असुरों का विनाश करना आरंभ कर दिया. क्रोध में उन्होंने देवों का भी संहार करना शुरू कर दिया. तब महादेव शंकर महाकाली के मार्ग में लेट गए. जैसे ही उनका पैर शिवजी के सीने पर पड़ा, उनका क्रोध शांत हो गया. इसीलिए दीपावली पर काली पूजन का भी विधान है. इन्हीं विविध आलोकों में मनुष्यता ने लोकोन्मुखी उजास की वंदना के लिए दीप और उससे झरते प्रकाश के रूपक को रचा है. दीपावली अंधकार को आलोक में परिवर्तित करने के संकल्प लेने का साक्षी पर्व है.

सिखों के तीसरे गुरु अमरदासजी ने दिवाली को लाल पत्र दिवस के रूप में मनाया तथा सन 1577 में इसी दिन अमृतसर के श्री हरिमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का शिलान्यास हुआ. इसके अतिरिक्त सन 1619 में इसी दिन सिखों के छठे गुरु हरगोबिंद सिंह जी को ग्वालियर में जहाँगीर की कैद से मुक्ति मिली थी. इसकी स्मृति में सिख दिवाली को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाते हुए दीप जलाते है.

सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई में पकी हुई मिट्टी के दीपक प्राप्त हुए हैं. 3500 ईसा पूर्व मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त भवनों में दीपकों को रखने हेतु ताख मिले थे. इसके अतिरिक्त मुख्य द्वार को प्रकाशित करने हेतु आलों की श्रृंखला थी. मोहनजोदड़ो सभ्यता के प्राप्त अवशेषों में मिट्टी की एक मूर्ति के अनुसार उस समय भी दीपावली मनाई जाती थी. उस मूर्ति में मातृ-देवी के दोनों ओर दीप जलते दिखाई देते हैं. इससे यह सिद्ध होता है कि हिन्दू सभ्यता थी जो दीपावली का पर्व मनाती थी.

श्रीकृष्ण ने इंद्र पूजा का विरोध करके गोवर्धन पूजा के रूप में अन्नकूट की परंपरा प्रारंभ की थी. वैसे भी श्रीकृष्ण-बलराम कृषि के देवता हैं. उनकी चलाई गई अन्नकूट परंपरा आज भी दीपावली उत्सव का अंग है. यह पर्व प्राय: दीपावली के दूसरे दिन प्रतिपदा को मनाया जाता है. ऐसा कहा जाता है कि दीपावली के एक दिन पहले श्रीकृष्ण ने अत्याचारी नरकासुर का वध किया था जिसे नरक चतुर्दशी कहा जाता है. इसी खुशी में अगले दिन अमावस्या को गोकुलवासियों ने दीप जलाकर खुशियां मनाई थीं.

बौद्ध ग्रंथ महापरिनिर्बाणसुत्त में उल्लेख है कि जब बुद्ध के शिष्य तथागत के महापरिनिर्वाण के समय उनसे कुछ कहने का आग्रह करते हैं, तब बुद्ध पाली में कहते हैं 'तस्मातिहानंद अत्तदीपविहरथ' अर्थात तुम लोग अपने द्वीप में आप विहार करो अर्थात आत्मनिर्भर बनो. बुद्ध के इस उपदेश को हम 'अत्त दीपो भव:' अर्थात अपने दीपक स्वयं बनो के रूप में ग्रहण करते हैं.

जैन धर्म की दीपावली महावीर जैन के निर्वाण के समय से मनाई जाती है. हरिवंश पुराण के एक श्लोक के जरिए इस बारे में बताया गया है 'ततस्तु: लोक: प्रतिवर्षमादरत् प्रसिद्धदीपलिकयात्र भारते. समुद्यत: पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्र-निर्वाण विभूति-भक्तिभाक.' अर्थात जब महानिवार्ण हुआ तब पावापुरी दीपक की ज्योति से प्रकाशित हो गई, यह ऐसा था जैसे स्वयं भगवान ने इस जगह को जगमग किया हो. इसके बाद जैन धर्म के लोगों ने इस दिन को दीपलिका पर्व के रूप में मनाना शुरू कर दिया.

दीपावली की परम्पराएँ : दीपावली का पर्व सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है. हर क्षेत्र में दीवाली मनाने के कारण एवं तरीके अलग हैं पर सभी जगह कई पीढ़ियों से यह त्योहार चला आ रहा है. लोग अपने घरों का कोना-कोना साफ़ करते हैं, नये कपड़े पहनते हैं. मिठाइयों को एक दूसरे को बाँटते हैं, एक-दूसरे से मिलते हैं. घर-घर में सुन्दर रंगोली बनायी जाती है, दीये जलाए जाते हैं और इन्हीं दीयों की रोशनी मनुष्य के अंतर दीप को भी जलाती है. दीपावली के प्रकाश का यही स्वरूप सत्य की ओर ले चलने की रट लगाता है. भारतीय संस्कृति की अस्मिता 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय. मृत्योर्मामृतं गमय' कहती है. अंधेरे से संघर्ष कर उसे पराजित करने की उमंग यहां कभी क्षीण नहीं होती. दीपावली की अमावस की रात भी धरती पर दीप तारों की सृष्टि करती है.

उजास पर पूर्ण विश्वास पृथ्वी पर दिव्य जीवन को प्रतिष्ठित करने का सामर्थ्य है. दीपावली इसी सामर्थ्य के प्रदर्शन का उत्सव है. इस पर्व पर मिट्टी के दीप घर की मुंडेर के ऊपर झिलमिलाते हैं लेकिन अंतर का दीप इससे प्रज्वलित नहीं होता.

कबीरदास ने सदियों पहले ही इस प्रकाश पर विश्वास कर इस अंतर दीप को प्रज्वलित कर लिया था, तभी वे जग का आह्वान कर कह सके 'सुन्न महल में दिबना बार ले, आसन से मत डोल री, तोहे पिया मिलेंगे' और नेत्रहीन सूर के अंतर नेत्रों में भी प्रकाश के जुगनू जगमगाए थे. दीपावली का उजास इसी प्रत्यक्षीकरण की बेला को बार-बार लेकर आता है.

पलक खुलते ही जब प्रकाश और आंखें एकात्म होती हैं तब दृष्टि का जन्म होता है. यही दृष्टि प्रकाश की आत्मा होती है. जब यह दृष्टि जन्म लेती है तभी प्रकाश प्रतिष्ठा पाता है.

वैदिक ऋषि जब सविता अर्थात सूर्य की अभ्यर्थना करता है तब वह प्रकाश के महाभाव को ईश्वर के रूप में अपनी अंतरात्मा में धारण करने का संकल्प लेता है, इसी संकल्प को गायत्री या सावित्री कहा जाता है. यह मंत्र ऋग्वेद के छंद तथा यजुर्वेद व सामवेद के मंत्र को मिलाकर बना है. 'ओऽम् भूर्भुव: स्व:. तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि. धियो यो न: प्रचोदयात्.' इस मंत्र में सूर्य ही परमेश्वर हैं और मंत्र का आशय है कि जिस दृष्टि निर्माता प्रकाशमान परमात्मा के दिव्य तेज का हम ध्यान करते हैं वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर चलने हेतु प्रेरित करें. दीपावली में इसी परमात्मा रूपी प्रकाश को धारण करने का संकल्प है. ज्ञानी ही सूर्य का सान्निध्य प्राप्त कर सकता है. मनुष्य की वृत्ति यही है कि जो भी शुभ हो, सुंदर हो वह उसके गीत गाता है. फिर दीपावली तो सत्यम् शिवम् सुंदरम् को साकार करने वाला महापर्व और परम्परा का धवल-शिखर है.

- कृष्ण कुमार यादव
क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु

राष्ट्रीय एकता का पर्व दीपावली

पुराने समय में जब रेडियो, टेलिविजन, मोबाइल, सिनेमा इत्यादि मनोरंजन के साधन नहीं थे और मानव जगत काम करते-करते निराशा के तिमिर सागर में डूब पड़ता था तो ये त्योहार ही उनके जीवन में आशा की ज्योति का संचार करता था. यद्यपि मनोरंजन के ये समस्त उपरोक्त साधन आज मौजूद हैं और मनोरंजन का दायरा अत्यंत व्यापक हो गया है तथापि मानव जीवन में त्योहार का महत्व जरा भी कम नहीं हुआ है. दुनिया के विभिन्न देशों में विभिन्न रीति-रिवाजों के साथ कई प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं किंतु भारत तो त्योहार का देश ही है. यहाँ जितने त्योहार मनाए जाते हैं, उतना दुनिया के किसी भी देश में नहीं. इन्हीं त्योहारों में से एक प्रमुख है दीपावली का त्योहार.

पृष्ठभूमि

दीपावली शब्द की उत्पत्ति दीप से हुई है और इस प्रकार दीपावली का अर्थ हुआ दीपों का समूह अर्थात दीप ही दीप, दीपों की माला या दीपों की कतार. जगमगाते दीप ही दीपावली की सबसे बड़ी विशेषता है. जैसा कि हम जानते हैं कि दीपावली कार्तिक माह की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है. अमावस्या यानि घुप्प अंधेरी रात जिसे दीपों की जगमगाहट प्रकाश से नहला देती है और सम्पूर्ण वातावरण आलोकित हो जाता है. कहा जाता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम जब चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटे तो उनके स्वागत में भरत ने अयोध्या नगरी को दीपों से जगमगा दिया था जो कालांतर में एक त्योहार के रूप में प्रचलित हो गया. समय के साथ इस त्योहार का स्वरुप व्यापक होता चला गया तथा लक्ष्मी एवं गणेश की पूजा और आतिशबाजी भी इसमें शामिल हो गई. चूंकि लक्ष्मी को धन की देवी और गणेश को समृद्धि का देवता माना जाता है, अतएव मुहूर्त ट्रेडिंग (नए व्यापार/ कारोबार की शुरुआत के लिए मुहूर्त) और धूत क्रीड़ा को भी इसमें जगह मिल गई.

राष्ट्रीय स्वरुप

जहाँ अन्य त्योहारों का महत्व सांस्कृतिक, धार्मिक और पौराणिक मान्यताओं के कारण है, वहीं दीपावली इन तीनों मान्यताओं के अलावा सुख, सम्पदा, समृद्धि और सौभाग्य के प्रतीक के रूप में भी प्रचलित हो गई है. यही कारण है कि पूरे भारत में दीपावली को बड़े धूमधाम से मनाया जाता है. दीपावली त्योहार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात दीप प्रज्ज्वलन है जिसके सांस्कृतिक महत्व ने इस त्योहार को जनमानस का कंठहार बना दिया है. दीप प्रज्ज्वलन के इस सांस्कृतिक महत्व को निम्नांकित पंक्तियों में समझा जा सकता है:

शुभम् करोति कल्याणम् आरोग्यम् धन सम्पदा
शत्रु बुद्धि विनाशाय: दीप ज्योति नमोस्तुते

अर्थात् दीप ज्योति (दीये से निकलने वाला प्रकाश) जो हर कार्य को शुभ/ सफल बनाता है, जो स्वास्थ्य, धन और सम्पत्ति की प्राप्ति को सुनिश्चित करता है, जो शत्रुओं की बुद्धि यानि दुष्प्रवृत्तियों का विनाश करता है और इसीलिए हम इस दीप ज्योति का नमन करते हैं. दीप के इस सांस्कृतिक महत्व और उसके प्रति धार्मिक आस्था ने न केवल दीप को प्रतिष्ठित बना दिया है अपितु दीपावली को भी अत्यंत लोकप्रिय बना दिया है और आज यह त्योहार राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया है. भारत में न केवल हिंदू अपितु सिख, जैन, बौद्ध और यहूदी धर्म के अनुयायी भी दीप प्रज्वलित करते हैं तथा दीपावली मनाते हैं. विभिन्न धर्मों की तरह भारत के विभिन्न भू-भागों/ राज्यों में दीपावली अत्यंत व्यापकता के साथ मनाई जाती है, भले ही इसे मनाए जाने के स्वरुप, परम्परा, रस्म, पद्धति में न्यूनाधिक भिन्नता हो. स्थिति चाहे जो भी हो, विभिन्नताओं के बीच आस्था, विश्वास, श्रद्धा और उत्साह के साथ पूरे भारत में जिस प्रकार दीपावली मनाई जाती है, वस्तुत: वह राष्ट्रीय एकता में एकसूत्रता का कार्य करता है.

भारत के विभिन्न राज्यों/ भू-भागों में दीपावली

भारत के सभी बड़े महानगरों विशेषत: मुम्बई और दिल्ली में दीपावली को विशेष धूमधाम से मनाया जाता है. परम्परागत लक्ष्मी और गणेश की पूजा, दीप प्रज्ज्वलन तथा आशितबाजी के अलावा नए वस्त्र, बर्तन एवं आभूषण खरीदने के साथ-ही-साथ मित्रों, संबंधियों व पड़ोसियों के बीच उपहार एवं मिठाई का आदान-प्रदान भी किया जाता है. घरों, कार्यालयों, दुकानों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, बहुमंजिली इमारतों इत्यादि को विद्युत बल्बों के झालरों से सजाया जाता है. इन महानगरों में दीपावली की सबसे बड़ी विशेषता मुहूर्त ट्रेडिंग है. चुंकि दीपावली

को सौभाग्य और समृद्धि का पर्व माना जाता है, अतएव इस दिन नए व्यापार/ कारोबार/ दुकान की शुरुआत की जाती है, शेयर बाजार में निवेश किया जाता है तथा नए वाहन और नए आवास खरीदे जाते हैं. दीपावली के अवसर पर होने वाला कुल व्यापार/ कारोबार पूरे वर्ष के दौरान किए गए व्यापार/ कारोबार का एक अहम् भाग होता है.

उत्तर भारत में दीपावली विशेष धूमधाम से मनाई जाती है. दीप प्रज्ज्वलन, लक्ष्मी और गणेश की पूजा, आतिशबाजी, नए वस्त्र, बर्तन, आभूषण, वाहन, भूमि, आवास इत्यादि की खरीददारी की जाती है. घरों, कार्यालयों, दुकानों, पूजा स्थलों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, बहुमंजिली इमारतों इत्यादि को विद्युत बल्बों के झालरों से सजाया जाता है तथा मित्रों, संबंधियों व पड़ोसियों के बीच उपहार एवं मिठाई का आदान-प्रदान किया जाता है, धनतेरस और भैया दूज का पर्व मनाया जाता है, घरों एवं कार्यालयों की सफाई एवं सजावट की जाती है. कहीं-कहीं रंगोली भी बनाई जाती है. उत्तर प्रदेश में इस अवसर पर भैया दूज और चित्रगुप्त पूजन भी किया जाता है. इस अवसर पर वाराणसी और अयोध्या के घाटों को दीपों से सजाया जाता है जिसे देव दीपावली के नाम से जाना जाता है. पंजाब में एवं पंजाब के बाहर सिख समुदाय द्वारा दीपावली को प्रकाश पर्व अर्थात् अंधकार पर प्रकाश की विजय (बुराई पर अच्छाई की विजय) के रूप में मनाया जाता है. दीपावली को गुरु हरगोविंद सिंह से जोड़कर देखा जाता है. इस अवसर पर घरों एवं गुरुद्वारों में दीप जलाया जाता है तथा विद्युत बल्बों का झालर लगाया जाता है.

पश्चिम भारत में दीपावली की छटा निराली होती है. इस अवसर पर घरों, कार्यालयों, दुकानों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की सफाई की जाती है, दीवारों की पुताई की जाती है और नए ढंग से सजावट की जाती है तथा विद्युत बल्बों के झालर से रोशनी की जाती है. रंगोली भी बनाई जाती है. नए वस्त्र, बर्तन, आभूषण, वाहन, भूमि, आवास इत्यादि की खरीददारी की जाती है, लक्ष्मी एवं गणेश की पूजा की जाती है तथा आतिशबाजी की जाती है. मित्रों, संबंधियों व पड़ोसियों को उपहार एवं मिठाई देने की परम्परा यहाँ भी है. गुजरात एवं राजस्थान में यह प्रथा अधिक लोकप्रिय है. राजस्थान में इस अवसर पर अन्नकुट एवं गोवर्धन पूजन मनाया जाता है. इस अवसर पर ताश खेलने एवं जुआ खेलने की प्रथा महाराष्ट्र एवं गुजरात में विशेष लोकप्रिय है. गोवा में दीपावली को नरकासुर वध के रूप में मनाया जाता है. कहीं-कहीं नरकासुर के पुतले का दहन किया जाता है. जुआ खेला जाना इस त्योहार की सबसे बड़ी विशेषता है. इस अवसर पर कैसिनो (जुआ घर) में भारी भीड़ होती है.

पूर्वी भारत विशेषत: बिहार एवं झारखंड में दीपावली को अत्यंत उमंग और उत्साह के साथ मनाया जाता है. लगभग दो सप्ताह पूर्व घरों एवं दुकानों में साफ-सफाई और तत्पश्चात रंगाई-पुताई का काम प्रारम्भ किया जाता है. दीवारों पर आकर्षक चित्र बनाये जाते हैं. झारखंड के आदिवासी बहुल इलाकों में दीवारों पर पशु-पक्षियों, सूर्य, चंद्रमा इत्यादि के चित्र बनाए जाते हैं तथा दीवारों पर सूक्तियां लिखी जाती हैं. नए बर्तन, आभूषण, वाहन, भूमि, आवास इत्यादि की खरीददारी, लक्ष्मी एवं गणेश की पूजा तथा आतिशबाजी का खूब प्रचलन है. बिहार में इस अवसर पर भैया दूज और चित्रगुप्त पूजन धूमधाम से मनाया जाता है जबकि झारखंड में इस अवसर पर गौशाला पूजा, बरद खुंटा एवं सोहराय जैसी परम्परा को बड़े उत्साह से मनाया जाता है. पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, असम और त्रिपुरा जैसे राज्यों में लक्ष्मी एवं गणेश के स्थान पर काली माता की पूजा की जाती है. पूर्वी भारत में दीपावली के अवसर पर मिठाई एवं उपहार लेने-देने की परम्परा सामान्यत: व्यापारी वर्ग तक ही सीमित है.

दक्षिण भारत में दीपावली मुख्यत: कर्नाटक में मनाई जाती है. इसे नरकासुर वध के रूप में मनाया जाता है. इस अवसर पर घरों एवं दुकानों की सफाई की जाती है. घरों, कार्यालयों, दुकानों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, बहुमंजिली इमारतों इत्यादि को सजाया जाता है. लक्ष्मी एवं गणेश की पूजा की जाती है तथा आतिशबाजी की जाती है. नए बर्तन एवं आभूषण खरीदे जाते हैं और रात्रि में दीप जलाए जाते हैं. आंध्र प्रदेश और तेलांगना में इसे सत्यभामा विजय के रूप में मनाया जाता है. इस अवसर पर तेल स्नान किया जाता है तथा खाता बही का वार्षिक नवीकरण किया जाता है. घरों एवं दुकानों की सफाई और सजावट, लक्ष्मी एवं गणेश की पूजा तथा रात्रि में दीप प्रज्ज्वलन किया जाता है. देश के अन्य भागों/राज्यों की तुलना में तमिलनाडु और केरल में दीपावली अपेक्षाकृत कम लोकप्रिय है. इस अवसर पर तमिलनाडु एवं केरल में तेल स्नान किया जाता है तथा घर के बुजुर्ग सदस्य बच्चों के सिर पर तेल मालिश करते हैं. चावल का आटा जिसे कोलम कहा जाता है, के द्वारा रंगोली बनाई जाती है. केरल में इस अवसर पर दीये जलाए जाते हैं जबकि तमिलनाडु में इस अवसर पर एक विशेष प्रकार के स्वास्थ्यवर्धक भोजन का सेवन किया जाता है.

निष्कर्ष

इसमें कहीं दो मत नहीं है कि दीपावली कुछ पूर्वोत्तर राज्यों और तमिलनाडु तथा केरल जैसे राज्यों को छोड़कर पूरे भारत भर में अत्यंत उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है. दीप प्रज्ज्वलन, लक्ष्मी एवं गणेश की पूजा, आतिशबाजी, साफ-सफाई और सजावट जैसी दीपावली की प्रमुख बातें पूरे भारत में सामान्य रूप से देखने को मिलती हैं. विभिन्न राज्यों/ क्षेत्रों में मनाने की विधि और परम्परा में थोड़े-बहुत अंतर के साथ दीपावली सम्पूर्ण भारत में एक महोत्सव के रूप में मनाई जाती है और इस प्रकार यह ज्योति पर्व पूरे भारत को एक सूत्र में बांधता है तथा एकसूत्रता स्थापित करता है. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' जैसी प्रसिद्ध सूक्ति के साथ दीपावली समस्त भारतीयों के हृदय को आशा और विश्वास की ज्योति से आलोकित करता है. समस्त जनमानस अपने-अपने जीवन में एक सकारात्मक बदलाव और सौभाग्य एवं समृद्धि की नई आशा के साथ इस त्योहार के उत्साह में निमग्न हो जाता है. इस प्रकार समस्त देशवासियों के बीच राष्ट्रीय एकता का संचार होता है. माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर 5 अप्रैल, 2020 को जब पूरे देश भर में रात्रि 9 बजे दीप जलाए गए थे तो वस्तुत: यह राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार के रूप में दीपावली की भूमिका का एक परिवर्तित रूप ही था.

ओम प्रकाश बर्णवाल
अं.ले.प.का., रांची

हिन्दी सिनेमा में दीपावली

दीपावली विश्व में भारतीयों द्वारा मनाए जाने वाला, भारत का सबसे प्रसिद्ध त्योहार है, और हिन्दी सिनेमा जगत इस मौके का भरपूर फायदा उठाता रहा है. जब ज़्यादातर लोगों की काम से लंबी छुट्टी रहती है, स्कूल-कॉलेज बंद रहते हैं, अधिकतर लोग अपने परिवार के साथ होते हैं, ऐसे समय में हिन्दी फिल्म जगत अपनी सबसे बड़ी फिल्में प्रदर्शित करता रहा है, और इस महोत्सव में फिल्में प्रदर्शित करके करोड़ों रुपये कमाए हैं. जहां तक दीपावली पर्व को फिल्मों में दिखाने का सवाल है, फिल्मों की कहानी के अनुरूप हिन्दी सिनेमा जगत ने कभी कोई मौका नहीं छोड़ा है. बॉलीवुड ने हमें अक्सर सीखाने की कोशिश की है कि कैसे कोई त्योहार मनाया जाये. पोशाक पहनने से लेकर, भाइयों व दोस्तों के साथ नाचने गाने तक, कैसे सब कुछ भव्य होना चाहिए. कई दशकों से हिन्दी सिनेमा ने बड़े पर्दे पर दीपावली के दीये और आतिशबाजियाँ दिखाई हैं. बॉलीवुड में जब भी किसी निर्माता व निर्देशक को फिल्म के किरदारों का चित्रण करना हो, चरित्रों की खूबसूरती, उनकी आर्थिक स्थिति, वेषभूषा, जीवनशैली की गुणवत्ता दर्शानी हो, तब त्योहारों के राजा दीपावली का अक्सर इस्तेमाल किया गया है. हिन्दी सिनेमा की कई बड़ी प्रसिद्ध फिल्मों में बहुत महत्वपूर्ण दीपावली के दृश्य एवं गीत हैं, जिनके बिना वो फिल्में अधूरी ही लगती हैं.

हिन्दी सिनेमा जगत में दिवाली के नाम से ब्लैक एंड व्हाइट के दौर में, दिवाली (1940), घर घर में दिवाली (1955), दिवाली की रात (1956) जैसी फिल्में बनाई गयी थीं, पर इन फिल्मों को अधिक सफलता नहीं मिली. उसके बाद हिन्दी सिनेमा जगत ने दिवाली के नाम से तो फिल्में नहीं बनाई पर दिवाली को ध्यान में रखते हुये ऐसे दृश्य गढ़े जिसने फिल्मों की सफलता में सहयोग किया.

- 'ऐ मेरी जोहरा जबीं' गीत जो शादी के सालगिरहों पर आज भी गाया जाता है, फिल्म वक़्त (1965) में बलराज साहनी, दिवाली के मौके पर नए व्यापार की शुरू होने के जश्न में गाते हैं. गाने के ठीक बाद भूकंप और बाढ़ आने से उनका पूरा परिवार एकदूसरे से अलग हो जाता है.
- गाइड (1965), देवानंद की यह फिल्म उनकी अदाकारी, दिलचस्प कहानी के साथ-साथ वहीदा रहमान के नृत्यों एवं मधुर संगीत से सुसज्जित है. फिल्म के एक मशहूर गीत 'पिया तोसे नैना लागे रे' में वहीदा, ना सिर्फ नृत्य कर दिवाली मनाती हैं बल्कि उसी नृत्य उत्सव में होली भी मनाती हैं.
- अनुराग (1972), बहुत सारे बड़े फिल्मी सितारों (नूतन, विनोद मेहरा, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, मौसमी चटर्जी) से सजी इस फिल्म के एक हिस्से में एक कैंसर से पीड़ित लड़का, जो बिस्तर पर पड़ा अपनी मृत्यु का इंतज़ार कर रहा होता है, और अपने दादाजी (अशोक कुमार) से कहता है उसे रोशनी का त्योहार दिवाली देखना है. एक बेहद मार्मिक दृश्य में, दिवाली के एक महीने पहले पूरा पड़ोस एक साथ आकर, उस लड़के की अंतिम इच्छा पूरी करते हैं.
- कभी खुशी कभी ग़म (2001) फिल्म में बेहद अमीर रायचंद परिवार दीवाली मना रहा होता है, ऐसे में परिवार के साथ दिवाली मनाने राहुल रायचंद (शाहरुख़) हेलीकॉप्टर से उतर कर घर की तरफ दौड़ लगाता है. घर में दीये की थाली लिए माँ (जया) को कुछ एहसास होता है और वो भी दरवाजे की ओर जाने लगती हैं. बिना जानकारी के वो अपने बेटे की आस में दरवाजे पर खड़ी रहती हैं और बेटा सामने से मुस्कुराता हुआ आता है, और सब बहुत खुश हो जाते हैं. दिवाली के इस सीन को शायद ही कोई दर्शक भुला पाएगा.
- कमल हसन की 1998 में प्रदर्शित फिल्म, चाची 420 के एक दृश्य में उनके किरदार की बेटी, पटाखों से घायल हो जाती है, और चाची बने कमल, उसे स्विमिंग पूल में डाल कर बचाते हैं, जिस घटना से उनके किरदार को उनकी बेटी की देखभाल करने की नौकरी मिलती है.
- मोहब्बतें (2000) फिल्म में, दिवाली के मौके पर नारायण शंकर (अमिताभ) के गुरुकुल के छात्र, नए संगीत शिक्षक राज आर्यन (शाहरुख़) के प्रोत्साहित करने पर गुरुकुल के सख्त नियमों के खिलाफ, अपनी प्रेमिकाओं से मिलने जाते हैं. दिवाली के इस मौके पर 'पैरों में बंधन है' गीत में, सब नाच गा रहे हैं और बहुत सुंदर दृश्य में पानी में तैरते दीये दिखाये गए हैं.
- बॉलीवुड की सबसे लोकप्रिय फिल्मों में से एक हम आपके हैं कौन (1994) में जब पूजा (रेणुका शाहने) एक बच्चे को जन्म देती हैं तो, उनके देवर प्रेम (सलमान) और बहन निशा (माधुरी) के साथ पूरा परिवार एक साथ खुशी में 'धिकताना धिकताना' गीत गाते हुए नाचते हैं और गीत में दिवाली का मौका आते ही हाथों में फुलझड़ियाँ लेकर थिरकते हैं और पटाखे जलाते हैं.

- महेश मांजरेकर निर्देशित फिल्म वास्तव (1999) में, रघु (संजय दत्त) एक गैंगस्टर है जो दिवाली में अपने परिवार से मिलने अपने ठिकाने से बाहर आता है. अपने घर जाकर अपनी माँ (रीमा लागू) को अपनी करतूतें बताता है और अपने गले में पहने हुए सोने का मूल्य बताता है. 'ये देख पचास तोला' संजय दत्त के करियर के सबसे मशहूर डायलॉग्स में से एक है.
- आशुतोष गोवारीकर द्वारा निर्देशित फिल्म 'स्वदेस' (2004) में जहां रामपुर गाँव में बिजली नहीं होती और नासा के वैज्ञानिक मोहन भार्गव (शाहरुख़) गाँव में बिजली उत्पन्न करते हैं. इस सबके बावजूद पूरा गाँव दीपावली के मौके पर दीयों से जगमगा जाता है. पर्यावरण के अनुकूल तरीके से दिवाली मानते गाँव वालों के साथ शाहरुख़ भी थिरकने लगते हैं. किन्तु इस शुभ मौके पर दादाजी का निधन होता है और खुशी का ये दिन दुख में बदल जाता है.
- आमिर खान द्वारा अभिनीत एवं निर्देशित फिल्म 'तारे ज़मीन पर' (2007) में, डिस्लेक्सीया से पीड़ित ईशान (दर्शील) को बोर्डिंग स्कूल भेजने की बात होती है. ऐसे में दीवाली के मौके पर वो कोने में चुपचाप बैठा होता है, तब मोहल्ले के लड़के के उकसाने पर पटाखे अपने हाथ मे लेकर उसे कहता है कि उसे डर नहीं लगता, जबकि अंदर से वो बहुत सहमा हुआ है और फिर रोने लगता है.
- 'आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया' (2001) फिल्म में मशहूर गाना 'आई है दिवाली सुनो जी घरवाली', एवं होम डिलीवरी (2005) फिल्म का गीत 'मेरे तुम्हारे सबके लिए हैप्पी दिवाली', अक्सर दिवाली के आसपास लोग गुनगुनाते हुए मिल जाएँगे.

हिन्दी फिल्मों में दीपावली को, होली जितना तो शामिल नहीं किया गया है किन्तु दीपावली के समय फिल्में प्रदर्शित कर फिल्म जगत ने पैसे बहुत कमाए हैं. हिन्दी सिनेमा जगत के सबसे बड़े सितारे अक्सर अपनी फिल्में त्योहारों के मौसम में दीपावली सप्ताहांत के आसपास ही प्रदर्शित करवाते हैं. ऐसा कहा जा सकता है कि उनकी फिल्मों के लिए, दीपावली का समय आरक्षित रहता है. शाहरुख़ खान की दिवाली पर प्रदर्शित फिल्में शत-प्रतिशत सुपरहिट रही हैं. जब एक से अधिक फिल्में दीपावली में प्रदर्शित होती हैं, तब सिनेमा जगत का माहौल काफी गरम रहता है और सितारों व निर्माताओं की कुछ झड़पें भी सामने आ जाती हैं. अक्सर दीपावली के सप्ताहांत में दो अथवा तीन बड़ी फिल्में प्रदर्शित होती ही हैं. ज़्यादातर फिल्में काफी मोटी कमाई कर पाती हैं और कुछ फिल्मों को भारी नुकसान भी उठाना पड़ता है. दीपावली के समय अधिकतर ऐसी फिल्में ही प्रदर्शित होती हैं जिसका पूरा परिवार साथ में आनंद ले सके. युवा अपने दोस्तों के साथ बड़े समूह में सिनेमाघरों में जाते हैं. छुट्टी और त्योहार के इस माहौल में हिन्दी सिनेमा जगत लोगों को साथ आने का मौका देता है, मनोरंजन देता है और यादें भी.

नितेश पाठक
गरियाबंद शाखा, रायपुर

दीपावली – बदला हुआ परिवेश

प्रस्तावना : भारत को त्योहारों की भूमि माना जाता है. इसी आधार पर सभी त्योहारों का अपना अर्थ है. इनमें से दीपावली एक अद्वितीय और तकरीबन सबसे ज्यादा मनाया जाने वाला त्योहार है. आज के दौर में हम अपनों से कई कारणों के चलते दूर होते जा रहे हैं. ऐसे में तीज-त्योहारों पर अपनों का याद आना लाजमी है. वहीं उनके साथ बचपन में मनाए गए त्योहारों का याद आना भी कई बार भावुक कर जाता है.

दीपावली का बदला हुआ परिवेश : आधुनिकता के दौर में दीपावली मनाने का अंदाज भी बदल रहा है. आस्था व परंपरा के साथ व्यवसायीकरण से यह पर्व अछूता नहीं है. त्योहारों पर उपहार देने की हमारी हिन्दुस्तानी संस्कृति की काफी पुरानी परंपरा रही है. पहले उपहारों के पीछे की भावना देखी जाती थीं आज क्वालिटी और ब्रांड देखे जाते हैं. सामने वाले ने जिस स्तर का उपहार दिया है, हम भी उसी स्तर का देते हैं. पहले घर की महिलाएं कई दिन पहले ही मिठाई व पकवान की तैयारी में लग जाती थी, बुजुर्ग महिलाएं मार्गदर्शन देती थी. आज तरह-तरह की मिठाई व पकवान बाजार में सहज ही उपलब्ध है. व्यस्तता के चलते व समय बचाने को लेकर मिष्ठान और पकवान के लिए बाजार पर निर्भरता काफी बढ़ गयी है.

दीपावली की किंवदंतियाँ : पहले दीवाली के मौके पर सरसों के तेल से दीये जलाने की परपंरा थी, फिर मोमबतियां आ गयी. आज आकर्षक चायनिज लाइट व झालरों ने उनकी जगह ले ली. आज तो मुश्किल से कहीं दीये दिखायी देते हैं. कुम्हारों की रोजी-रोटी भी छिन गई है. आज के दौर में कुछ आसमाजिक तत्व इस पवित्र उत्सव के मौके पर शराब पीते हैं और जुआ खेलते हैं.

उपसंहार : कोरोना संक्रमण के निराशा भरे दौर के बाद जीवन में उत्सव और उल्लास भरने वाला दीपोत्सव यानि दीपावली का त्योहार आ ही गया.

दीपावली पर न सिर्फ माता लक्ष्मी एवं भगवान गणेश की पूजन करना चाहिए बल्कि भगवान विष्णु का पूजन भी विशेष फलदायी माना जाता है. भगवान विष्णु के पूजन से ही लक्ष्मी माता प्रसन्न होती हैं. इसके अलावा गोवर्धन की पूजा भी की जानी चाहिये.

'दीपावली में सिर्फ पटाखे नहीं, ईर्ष्या को भी जला डालो,
और पर्यावरण को भी स्वच्छ बनाओ'

- संदीप दहिया
सीएमसीसी, के.का.,

हिन्दी साहित्य में दीपावली

साहित्य समाज का रचनात्मक प्रतिबिम्ब है. हिन्दी साहित्य आदिकाल से सांस्कृतिक-धार्मिक प्रवृत्तियों से पोषित है. किसी भी देश और समाज की सांस्कृतिक विरासत और परंपरा उसकी अपनी भाषा में प्रकट होती है. यही कारण है कि हिन्दी समाज का समृद्ध देशज वैभव हिंदी में परिलक्षित होता है. अनादिकाल से मनुष्य अपने संघर्षमय जीवन की कटु स्मृतियों को विस्मृत करने हेतु और जीवन में शांति और उल्लास के लिए अपनी-अपनी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार विभिन प्रकार के त्योहार मनाते आ रहे हैं.

भारतवर्ष में मनाए जानेवाले सभी त्योहारों में दीपावली का महत्व हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक है. दीपावली देश का सबसे सुंदर त्योहार है. इस बात को हम ऐसे भी कह सकते हैं कि दीपावली स्वच्छता का त्योहार है. हिंदी साहित्य की सभी धाराओं में दीपावली को प्रकाश पर्व के रूप में महत्व मिला है और हिंदी साहित्य के विभिन्न रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में इसके महत्व और उद्धेश्य का वर्णन किया है. यह पर्व ''असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय" को चरितार्थ करता है. हम भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है और असत्य सदैव परास्त होता है. इस पर्व की धार्मिक व ऐतिहासिक मान्यताओं से हम भली-भांति परिचित हैं यथा त्रेता युग में भगवान श्रीराम जब रावण का वध करने के उपरांत अयोध्या वापस लौटे थे, तब उनके आगमन पर अयोध्या नगरी में असंख्य दीप जलाकर उनका स्वागत किया गया था. कार्तिक अमावस्या के दिन ही सिखों के छठे गुरु हरगोविन्द सिंह जी (1606-1644), बादशाह जहाँगीर की कैद से मुक्त होकर अमृतसर वापस लौटे थे. बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध के अनुयायियों ने 2500 वर्ष पूर्व उनके स्वागत में हजारों-लाखों दीपक जलाकर दीपावली मनाई थी. जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने दीपावली के दिन ही पावापुरी (जिला-नालंदा, बिहार) में मानव शरीर का त्याग किया था.

अब हम हिंदी साहित्य में दीपावली पर प्रकाश डालते हैं.

साहित्य अकादमी पुरस्कार और पद्म भूषण से सम्मानित आधुनिक हिंदी के कबीर कहे जाने वाले हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-1979) अपने 'आलोक पर्व निबंध' में कहते हैं :-

दीपावली प्रकाश का पर्व है. इस दिन जिस लक्ष्मी की पूजा होती है, दीपावली का पर्व आद्या शक्ति के विभिन्न रूपों के स्मरण का दिन है.

एक अन्य स्थान पर हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं :-

कम-से-कम ढाई-तीन हजार वर्षों से मानव चित्त के उमंग और उल्लास की कहानी इस पर्व के साथ जुड़ी है. दो सौ पीढ़ियों तक जो पर्व मनुष्य के चित्त को आनंद से उद्वेलित कर सका है, यह क्या मामूली पर्व है.? राज्यों और राजवंशों के उत्थान पतन होते रहे, बड़े-बड़े धर्म-संप्रदाय उठते-गिरते रहे और चंचला लक्ष्मी का प्रसाद न जाने कितने लोगों को प्राप्त हुआ और कितने उससे वंचित हो गए, पर दीपमाला का उत्सव नहीं रुका .

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी व अपनी देश भक्ति की भावना से भरी कविताओं के लिए प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी (1906-1988) अपनी कविता 'जगमग-जगमग' में दीपावली का अति सुंदर चित्रण करते हैं :-

हर घर, हर दर, बाहर, भीतर, नीचे ऊपर, हर जगह सुघर,
कैसी उजियाली है पग-पग, जगमग जगमग जगमग जगमग !

डॉ. हरिवंश राय बच्चन (1907-2003) अपने जग प्रसिद्ध काव्य 'मधुशाला' में दीपावली पर कुछ ऐसे लिखते हैं :-

दुनिया वाले, किन्तु किसी दिन आ मदिरालय में देखो
दिन को होली रात दिवाली रोज मनाती मधुशाला .

हिंदी साहित्य के छायावाद की धारा के प्रमुख कवि ज्ञानपीठ पुरस्कार एवं पद्मभूषण से सम्मानित सुमित्रानंद पंत (1900-1977) की यह पंक्ति उनकी कविता- 'हे मेरे अमर सुरावाहक' में दीपों से दिव्य झलक देखने की बात कहते हैं :-

चिर स्नेह हीन मेरा दीपक,
दीपित न करोगे तुम जब तक,
कैसे पाऊँगा दिव्य-झलक?

पंत जी अल्मोड़े में विवेकानंद जी के आगमन पर हुई दीपावली को अपनी कविता 'बाल प्रश्न' में उकेरते हुए लिखते हैं :-

माँ ! अल्मोड़े में आए थे
जब राजर्षि विवेकानंद,
दीपावली क्यों की? क्या वे माँ,
मंद दृष्टि कुछ रखते हैं?

हिंदी साहित्य के छायावाद की धारा के प्रमुख कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (1896-1961) लिखते हैं :-

रंग गयी पग-पग धन्य धरा,
हुई जग जगमग मनोहरा.
वर्ण गंध धर, मधु मरंद भर,
तरु-उर की अरुणिमा तरुणतर
खुली रूप-कलियों में पर भर
स्तर-स्तर सुपरिसरा.

निराला जी ने फूलों के चित्रित दीप ही जलाकर बसंत में दीपावली मना डाली.

दूसरी ओर पद्मविभूषण, पद्मभूषण एवं

ज्ञानपीठ पुरस्कारों से सम्मानित वेदना की कवयित्री महादेवी वर्मा (1907-1987) इस त्योहार के कर्म को उजागर करते हुए लिखती हैं :-

'मैं मंदिर का दीप-सदा नीरव जलाता हूँ.'

साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कारों से सम्मानित हिंदी साहित्य की प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रवर्तक और 'तार-सप्तक' के संपादक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय (1911-1987) ने जिस किसी आँगन के पार वाला द्वार खुला हुआ पाया. उसी का दीपक उठा लिया और फिर उसे अपने शब्दों में इस तरह प्रस्तुत किया :-

मेरे छोटे घर कुटीर का दीया,
तुम्हारे मंदिर के विस्तृत आँगन में,
सहमा-सा रख दिया गया.

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) अपनी कविता 'दीपदान' में लोगों के जीवन से अँधियारा दूर करने के लिए कहते हैं.

कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947) ने अपनी कविता 'दमकती दीवाली' में दीपावली को स्वच्छता और उमंग का प्रतीक बताया है :-

भारत सरकार से दो-दो बार सम्मानित (पहले पद्म श्री, उसके पश्चात पद्मभूषण से) महाकवि गोपाल दास नीरज (1925-2018) अपनी रचना 'जलाओ दीये पर ध्यान रहे इतना' में दीपावली को धरती के हर अंधकार को दूर करने को कहते हैं :-

जलाओ दीये पर ध्यान रहे इतना
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए.

कवि केदारनाथ सिंह (1934-2018) अपनी कविता 'दीपदान' में दीपों पर कहते हैं :-

जाना, फिर जाना,
उस तट पर भी जाकर दीया जला आना,

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और कवि भारतरत्न अटलबिहारी बाजपेयी (1924-2018) दीपों पर यूं लिखते हैं :-

आओ फिर से दीया जलाएं भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाई से हारा, अंतरतम का नेह निचोड़े,
बुझी हुई बाती सुलगाएँ, आओ फिर से दीया जलाएं.

राजभाषा हिन्दी पर आघात करने वाले राजभाषा संशोधन विधेयक के विरोध में अपना पद्मभूषण अलंकरण लौटाने वाले सुप्रसिद्ध कवि और भारत माता के सच्चे लाल माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968) अपनी कविता 'दीप से दीप जले' में कहते हैं :-

सुलग-सुलग री जोत, दीप से दीप मिलें
कर-कंकण बज उठे, भूमि पर प्राण फलें.

डॉ. महेंद्र भटनागर (1926-2020) अपनी रचना 'ज्योति पर्व' में कहते हैं :-

मिट्टी के लघु-लघु दीपों से जगमग हर एक भवन !
अँधियारे की लहरों से भूमि भरी,

जबकि हिंदी के प्रसिद्ध ललित निबंधकार मूर्तिदेवी पुरस्कार से सम्मानित कुबेरनाथ राय (1933-1996) अपने निबंध संग्रह 'मराल' में दीपावली को मात्र धन-समृद्धि का पर्व मानने को भ्रांति बताते हुए बड़े पते की बात लिखते हैं. उनके शब्दों में :-

भारत का गरीब से गरीब आदमी भी जिसका एकमात्र गौरव उसका धर्मबोध ही है, माटी का एक जोड़ा दीया अपने दरवाजे के सामने अवश्य रखता है. उन दीपकों से उसका अहंकार नहीं, उसकी श्रद्धा प्रकाशित हो रही है. यह श्रद्धा उसके अंतर्निहित मनुष्यता की गरिमा है और श्रद्धा धर्मबोध और पवित्रताबोध से जुड़ी है, अत: यह हमारे अवचेतन से धर्म-मोक्ष के मार्ग पर ठेलती है.

राजस्थान के प्रसिद्ध लेखक विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी अपनी कहानी 'दीपावली की कहानी : जीत का महोत्सव' में कहानी के पात्र किरण के पिता के माध्यम से कहते हैं :-

मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि जिंदगी को सही रूप से जीने के लिए जरूरी है कि जीवन में उल्लास बना रहे, जीने की इच्छा बनी रहे, दिवाली यही कार्य करती है. बिना किसी आदेश या दवाब के सभी लोग दिवाली के पूर्व काम करने में जुट जाते हैं.

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजनैतिज्ञ मृदुला सिन्हा (गोवा की पूर्व राज्यपाल) अपने ललित निबंध 'कार्तिक हे सखी पुण्य महीना' में दीपावली के दिन को प्रभु रामचंद्र जी के अयोध्या आगमन और लक्ष्मी जी की पूजा से जोड़ती हैं :-

23 वर्षों के अथक परिश्रम के उपरांत बांग्ला के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की प्रामाणिक जीवनी 'आवारा मसीहा' लिखने वाले और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित विष्णु प्रभाकर ने अपनी पहली कहानी 'दिवाली के दिन' शीर्षक से लिखी थी.

यहाँ हमने हिंदी साहित्य के कुछ ही रचनाकारों का उल्लेख किया है जबकि दीपावली हिंदी साहित्य में बिल्कुल बढ़-चढ़कर आती है और हर शाखा में अपना परचम दीयों के रूप में लहराते हुए सबकी जिंदगी को रोशन कर देती है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी साहित्य में दीपावली को अत्यंत गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त है. हिन्दी साहित्य की हरेक धाराओं में इसे व्यंजित किया गया है अर्थात् हिंदी साहित्य में दीपोत्सव का उल्लेख बहुत व्यापक है. हिन्दी साहित्य में और किसी पर्व के लिए शायद ही इतनी कल्पनाएं और संवेदनाएँ बुनी गई हों.

- ज्योत्स्नेश्वर पाण्डेय
क्षे.म.प्र.का., रांची

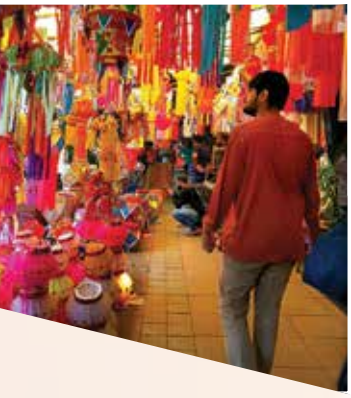

दीपावली और खरीददारी

व्यावसायिक पहलू

दीपावली, दिवाली या दीवाली शरद ऋतु में हर वर्ष मनाया जाने वाला एक प्राचीन हिन्दू त्योहार है. दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है जो ग्रेगोरी कैलेंडर के अनुसार अक्टूबर या नवंबर महीने में पड़ता है. दीपावली भारत के सबसे बड़े और सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है. दीपावली दीपों का त्योहार है. आध्यात्मिक रूप से यह 'अन्धकार पर प्रकाश की विजय' को दर्शाता है. भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्योहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से अत्याधिक महत्व है. माना जाता है कि दीपावली के दिन श्रीराम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात् अयोध्या लौटे थे. अयोध्यावासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से प्रफुल्लित हो उठा था. श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए. कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी. तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं. भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है, झूठ का नाश होता है. दीपावली के दिन भगवान गणेश और मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है. दरअसल दीपावली संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है और वह दो शब्द हैं 'दीप' अर्थात 'दीपक' और 'आवली' अर्थात 'लाइन' या 'शृंखला' जिसका मतलब हुआ 'दीपकों की शृंखला'. दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है. कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती हैं. दीपावली से पहले ही घर-मोहल्ले, बाजार सब साफ-सुथरे व सजे-धजे नज़र आते हैं.

व्यावसायिक पहलू: उपभोक्ता खरीद और आर्थिक गतिविधियों के संदर्भ में दीपावली, पश्चिम में क्रिसमस के बराबर है. यह पर्व नए कपड़े, घर के सामान, उपहार, सोने और अन्य बड़ी खरीददारी का समय होता है. इस त्योहार पर खर्च और ख़रीद को शुभ माना जाता है क्योंकि लक्ष्मी को धन, समृद्धि, और निवेश की देवी माना जाता है. दीपावली भारत में सोने और गहने की ख़रीद का सबसे बड़ा मौसम होता है. मिठाई और आतिशबाजी की ख़रीद भी इस दौरान अपनी चरम सीमा पर रहती है. भारत में प्रत्येक वर्ष दीपावली के दौरान लगभग पांच हज़ार करोड़ रुपए के पटाखों की खपत होती है.

दीपावली के समय व्यापारियों को बहुत फायदा होता है. पिछले वर्ष को देखें तो ऐसा लग रहा था कि व्यापारियों को कोरोना और लॉकडाउन के चलते नुकसान उठाना पड़ सकता है मगर लॉकडाउन खुलते ही लोगों ने खरीददारी करनी शुरू कर दी थी, जिसके बाद त्योहारी सीजन में ये खरीददारी दोगुनी हो गई. दीपावली के मौके पर लोगों ने पूरी तरह से विदेशी सामानों का बहिष्कार किया और जमकर खरीददारी की. ऐसे में व्यापारियों के संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) की रिपोर्ट के अनुसार देशभर के व्यापारियों ने दीपावली के समय लगभग रुपए 72,000 करोड़ का सामान बेचा क्योंकि विदेशी सामानों का पूर्ण बहिष्कार किया गया था. कन्फेडरेशन, जो लगभग 7 करोड़ व्यापारियों और 40,000 व्यापार संघों का प्रतिनिधित्व करता है के अनुसार दीपावली के इस सीजन में चीन को 40,000 करोड़ रुपये का अनुमानित नुकसान हुआ. प्रमुख शहर जैसे नागपुर, लखनऊ, अहमदाबाद, जयपुर, जम्मू जैसे 20 शहरों से जुटाई गई रिपोर्ट के आधार पर ये पता चला है कि छोटे और पटाखा बेचने वाले व्यापारियों को रुपये 10,000 करोड़ का नुकसान हुआ है क्योंकि सरकार ने पटाखों पर बैन लगा दिया था. दीपावली यूं तो सभी तरह के व्यवसायों के लिए उपयुक्त त्योहार है परंतु कुछ व्यवसाय ऐसे है जिनकी बिक्री दीपावली में लगभग दुगुनी या उससे भी ज्यादा हो जाती है. आइये इन व्यवसायों के बारे में संक्षेप में जानते हैं.

दीपावली और स्वर्ण-आभूषण का व्यवसाय : दीपावली के दिन भगवान गणेश और माँ लक्ष्मी की पूजा की जाती है. हिन्दू धर्म के

अनुसार दीपावली पर स्वर्ण आभूषणों की खरीद को बहुत ही शुभ माना जाता है. ऐसा माना जाता है कि इस दिन स्वर्ण आभूषण खरीदने से माँ लक्ष्मी की कृपा आप पर सदैव बनी रहती है और आपको धन-धान्य की कभी कमी नहीं होती है. दीपावली के त्योहार में सभी छोटे-बड़े ज्वैलर्स अपनी दुकान को अच्छे से सजाते हैं और हर तरह के आभूषण तैयार रखते हैं जिससे कि कोई भी ग्राहक उनकी दुकान से खाली हाथ न जाए. कुछ ज्वैलर्स ग्राहकों को लुभाने के लिए उपहार और लकी ड्रॉ रखते हैं. दीपावली के समय ज्वैलर्स की अच्छी आमदनी होती है.

दीपावली और ऑटोमोबाइल व्यवसाय: जैसा कि हम सभी जानते हैं कि दीपावली का त्योहार नयी वस्तुएं खरीदने के लिए सबसे उपयुक्त समय होता है. लोग इस दिन नयी कार या मोटरसाइकल या फिर अन्य वाहन खरीदना शुभ मानते हैं. दीपावली के समय लगभग सभी ऑटोमोबाइल कंपनी ग्राहकों को लुभाने के लिए तरह-तरह के डिस्काउंट ऑफर लेकर आती हैं. ग्राहकों को भी इस त्योहार का इंतज़ार रहता है जिससे उन्हें गाड़ियों पर अच्छे-अच्छे ऑफर मिल सकें. इस समय गाड़ियों की डिमांड बहुत अधिक होती है. जितनी कार या मोटरसाइकल व्यवसायी पूरे साल में बिक्री करता है उतनी अकेले दीपावली के त्योहार के समय कर लेता है.

दीपावली और इन्फ्रास्ट्रक्चर व्यवसाय: दीपावली के लगभग एक महीने पूर्व यानि कि नवरात्र एवं दशहरा के समय से ही लोग नया घर और जमीन खरीदना शुरू कर देते हैं. बड़े और छोटे हर तरह के बिल्डर्स ग्राहकों को लुभाने में लग जाते हैं. कोई रेट में डिस्काउंट देता है तो कोई उसी कीमत पर ज्यादा जगह उपलब्ध कराता है. छोटे-बड़े हर तरह के शहरों में दीपावली का समय जमीन और घर खरीदने के लिए सबसे उपयुक्त समय होता है. बिल्डर्स भी इस समय का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं और चाहते हैं कि ऐसा सीज़न हमेशा बना रहे.

दीपावली और कंज़्यूमर ड्यूरेबेल प्रोडक्टस: दीपावली के समय कंज़्यूमर ड्यूरेबेल प्रोडक्टस के बाज़ार में रौनक आ जाती है. फ्रिज, वॉशिंग मशीन, टेलिविजन इत्यादि के विक्रेता अपनी दुकान भरकर रखते हैं जिससे कि ग्राहकों की हर तरह की मांग को पूरा किया जा सके और त्योहारी सीज़न का लाभ उठाया जा सके. अन्य उत्पादों की तरह कंज़्यूमर ड्यूरेबेल उत्पाद अत्याधिक मात्रा में खरीदे और बेचे जाते हैं.

दीपावली और बैंकिंग व्यवसाय: उपर्युक्त वस्तुओं की खरीददारी का सीधा संबंध बैंकिंग उद्योग से भी है. मौजूदा परिस्थितियों में हर किसी के पास उतनी पूंजी नहीं होती है जिससे वह घर, कार या अन्य उत्पाद नगद पैसे देकर खरीद सकें. इसलिए ग्राहक अपनी योग्यता अनुसार बैंक से ऋण लेकर इन उत्पादों की खरीददारी करता है. बैंक भी अपने ग्राहकों के लिए इस सीज़न में तरह-तरह के ऑफर लेकर आते हैं जैसे ज़ीरो प्रोसेसिंग शुल्क, कम ब्याज दर इत्यादि. इस माह में बैंक के रीटेल एसेट में अन्य माह की तुलना में काफी अधिक वृद्धि होती है.

दीपावली और पेंट (Paint) का व्यवसाय: दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है. लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई का कार्य त्योहार से पहले ही आरंभ कर देते हैं. घरों की मरम्मत, रंग-रोगन, सफेदी आदि का कार्य होने लगता है. लोग दुकानों को भी साफ-सुथरा कर सजाते हैं. इस दौरान पेंट के व्यवसाय से जुड़े लोगों को अत्याधिक मुनाफा होता है. दिहाड़ी मजदूर और पेंट करने वाले लोगों को भी इस समय अत्याधिक रोजगार मिलता है. इसी प्रकार कई अन्य व्यवसाय जैसे कपड़े, लाइट-झालर, पटाखे, मिठाई, गणेश-लक्ष्मी मूर्ति इत्यादि की बिक्री भी जोरों से होती है और इन व्यवसायों से जुड़े लोगों को दीपावली के समय बहुत मुनाफा होता है.

मौजूदा व्यावसायिक स्थिति का अवलोकन: कोरोना के मामलों में आई कमी व अधिकतर आबादी के वैक्सीनेशन के पश्चात् यह अनुमान लगाया जा रहा है कि दीपावली के दौरान इस बार व्यापारियों को पिछले वर्ष के मुकाबले ज्यादा मुनाफा हो सकता है. बाज़ारों में भी पहले से ज्यादा रौनक देखने को मिल रही है. पिछले वर्ष को देखें तो ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में कारों की बिक्री 18 प्रतिशत बढ़ी थी, इसी तरह घरों/फ्लैट्स की बिक्री और बुकिंग में तेजी देखने को मिल रही है इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि बिल्डर्स के लिए यह दीपावली खुशियाँ लेकर आने वाली है. इसी तरह अन्य व्यवसाय जो कोरोना की वजह से सुस्त पड़े थे, उनमें भी तेजी देखने को मिल रही है और दीपावली में इन व्यवसायों में चार चाँद लगने की उम्मीद है. अगर व्यवसाय में वृद्धि होगी तो बैंकिंग एवं देश की जीडीपी में स्वत: वृद्धि होगी जो हमारे देश के लिए एक अच्छा संकेत है. इस प्रकार हम यह मान सकते हैं कि दीपावली का त्योहार व्यापारियों और उनके व्यवसाय के लिए सबसे अच्छा समय होता है. इस समय बाजार में जो रौनक रहती है वह देखते ही बनती है.

अभिषेक कुमार
क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु

दीपोत्सव एवं बैंकिंग जगत्

मानव मात्र की चाह होती है कि वह अपने जीवन को उत्साह एवं उमंग के साथ व्यतीत करे. प्रत्येक वर्ष जब मौसम प्रसन्न होता है और घरों में साफ-सफाई, रंग-रोगन किया जाता है, बच्चों की परीक्षाएं हो जाती हैं और बैंकरों की अर्ध-वार्षिक लेखाबंदी भी पूर्ण हो जाती है; न अधिक गर्मी और न कंपकंपाने वाली ठंड का प्रकोप होता है; ऐसे अवसर पर आता है दीपोत्सव! यह पर्व हमारे देश के लगभग सभी भागों में विभिन्न रूपों में मनाया जाता है, जिससे इसे राष्ट्रीय पर्व की संज्ञा दी जा सकती है.

बाजारों में रौनक हो, लोगों के पास क्रय क्षमता हो, सबके मन में धार्मिक एवं सामाजिक कारणों से खरीददारी करने की इच्छा हो तो क्या ऐसे समय को हम बैंकरों के अनुकूल नहीं समझा जाना चाहिए!? मेरा मन कहता है कि ऐसे काल को बैंकरों के लिए स्वर्ण काल की तरह स्वीकार करना चाहिए. प्राचीनकाल में दीपोत्सव को साहुकारों या महाजनों का पर्व माना जाता था. इतना ही नहीं कई स्थानों पर तो इसे वैश्य त्योहार कहा गया है, किंतु आज परिस्थितियाँ बदली हैं. यह पर्व अब जन-जन का न केवल आनंदोत्सव बन गया है, बल्कि अपनी वैश्विक स्तर पर सर्वग्राहयता के चलते अमेरिकी राष्ट्रपति के निवास में भी इसकी धूम दिखाई पड़ती है.

वैसे तो कोई बैंकर, प्रत्येक व्यक्ति एवं वर्ग के लिए सब कुछ आसान एवं सुगम बनाने हेतु तत्पर रहता है, फिर भी यदि हम दीपावली के इस महान पर्व में किसी बैंकर के योगदान को समझने का प्रयास करें तो पाएंगे कि हम इसमें अपनी एक बड़ी एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. यदि हम दीपावली के दिनों को बैंकिंग जगत् से जोड़कर देखें तो पाते हैं कि बैंकर इन दिनों को अपने स्तर पर न केवल अलग तरह से मना सकता है, बल्कि वह समाज को इस सुंदर एवं समृद्धि के उत्सव को हर्षोल्लास के साथ मनाने में अपनी बड़ी भूमिका अदा कर सकता है.

धन तेरस और बैंकर

धन तेरस का दिन दीपोत्सव का प्रथम दिन है. परंपरागत बाजारों में इस दिन खूब रौनक रहती है. बर्तनों एवं आभूषणों की बिक्री अधिक होती है. इसके साथ ही वस्त्रों का क्रय-विक्रय भी किया जाता है. बहुत सी कपड़ा दुकानें रातभर खुली रहती हैं. ऐसे में बैंकरों के पास न केवल अपने क्रेडिट कार्ड के माध्यम से खरीददारों की सहायता करने का सुअवसर है, बल्कि दुकानदारों एवं उत्पादकों को ऋण सुविधा उपलब्ध करवाने का भी अवसर होता है. वैसे भी भारतीय सर्राफा बाजार एवं वस्त्र उद्योग बहुत मजबूत है तथा इसमें वित्तपोषण की भी असीम संभावनाएं हैं. अत: हम बैंकरों को न केवल दीपावली, बल्कि उससे पहले से ही इस पर्व की पूर्व तैयारी हेतु वित्तपोषण की व्यवस्था करनी चाहिए. दीपावली की पूर्व तैयारी हेतु कैंपेन तथा मेलों का आयोजन किया जा सकता है. मिट्टी के परंपरागत बर्तन एवं दीपक आज भी अधिकांश घरों में धन तेरस के दिन ही खरीदे जाते हैं. छोटे बच्चों की पसंदीदा रंग-बिरंगी मिट्टी की गुल्लकें होती हैं. हमारे देसी कुंभकारों का कौशल इस दिन प्रमुखता से देखने को मिलता है. ऐसे कारोबारों को आज संभावनाओं के रूप में देखा जाना चाहिए.

दीपावली के पहले दिन मिठाइयों का अधिकाधिक उत्पादन व्यवसायिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर होता है. मिष्टान व्यवसाय भी देश का एक बड़ा कारोबार है, किंतु अब भी यह क्षेत्र बैंकरों की पहुंच से बाहर है. अधिकांशत: मिठाई विक्रेता या उत्पादक स्व-वित्तपोषित होते हैं तथा उनके काम पर वित्तीय संस्थानों का विशेष ध्यान नहीं होता है. आवश्यकता इस बात की है कि इस ओर की संभावनाओं को हम तलाशें तथा आगे बढ़ें.

रूप चौदस और बैंकर

रूप चौदस या नर्क चौदस जिसे कई बार छोटी दीपावली भी कहा जाता है, दीपावली का दूसरा एवं महत्पूर्ण दिन है. इस दिन को रूप-सौंदर्य से भी जोड़कर देखा जाता है. ऐसे में यदि हम रूप-सौंदर्य को निखारने वाले, लोगों को आरोग्य प्रदान करने वाले उत्पादों को अपने वित्तपोषण की सहायता से बढ़ावा दें तो इससे हम आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को और अधिक सशक्त बना सकेंगे.

मुख्य दीपावली एवं बैंकर

बैंकरों के लिए मुख्य दीपावली का महत्व बहुत अधिक है. इस दिन बाजारों की रौनक, घरों की साज-सज्जा, मिठाइयों की खुशबू, आतिशबाजी की चकाचौंध, सब मिलकर मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करते हैं. धन और ज्ञान की देवी का एक साथ पूजन कर इस अवसर पर हम सब के लिए समृद्धि की कामना करते हैं. लोग उपहार एवं भेंट का आदान-प्रदान करते हैं और हृदय तल से सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हैं. इस पर्वाधिराज पर हम बैंकर इन सभी कामों में जन सामान्य की सहायता कर सकते हैं. हम उन्हें इस पर्व पर न केवल कारोबार करने हेतु आर्थिक रूप से पोषित कर सकते हैं, बल्कि नवाचार के विषय में जागरूक बना सकते हैं. इस दिन कृषि उत्पादों का भी पूजन में उपयोग किया जाता है. विशेष रूप से गन्ने तथा कई मौसमी फलों को हवन एवं पूजन सामग्री के रूप में उपयोग में लाया जाता है. इन फल विक्रेताओं तथा गन्ना उत्पादकों की सहायता भी बैंकर अपने छोटे-छोटे ऋणों तथा प्रधानमंत्री स्वनिधि जैसी योजनाओं के माध्यम से कर सकता है. देश के विभिन्न भागों में इस पर्व पर कुछ खास मिठाइयों को बनाने का चलन रहता है. ऐसे उत्पादकों को

बड़े पैमाने पर अपनी मिठाइयों को बनाने तथा अपेक्षाकृत बड़े बाजार में बेचने का अवसर हम बैंकर अपने द्वारा प्रदान की जाने वाली ऋण राशि के माध्यम से कर सकते हैं. दीपावली के अवसर पर रंगोली तथा मांडने बनाने का चलन देशभर में रहता है. ऐसे में कलाकारों को प्रोत्सहान तथा रंग निर्माताओं के लिए अपने उत्पादों को आसानी से बाजार तक पहुंचाने का अवसर हम बैंकर प्रदान कर सकते हैं. इसी तरह से पर्यावरण को क्षति न पहुंचाने वाली आतिशबाजी के निर्माण को प्रोत्साहन देकर हम अपने परिवेश एवं जन सामान्य दोनों को मदद पहुंचा सकते हैं.

सिक्के के दो पहलू की तरह इस पर्व से भी कुछ अभिशाप जुड़े हुए हैं. समाज के कुछ भ्रष्ट तत्वों ने इस पर्व पर जुआ खेलना शुरू कर दिया है. अब तो ऑनलाइन माध्यम से ऐसे अपराधी अपने मंसूबों को अंजाम देने का प्रयास करते हैं. ऐसे आर्थिक अपराधों से बचने हेतु हम लोगों को सजग बना सकते हैं. कई प्रकार के ऑनलाइन गेम्स संचालित किये जाते हैं जो लोगों के खून-पसीने की कमाई को लूटने के लिए होते हैं. ऐसे गेम्स के प्रति हम बैंकर अभियान चलाकर जन सामान्य को सचेत कर राष्ट्र एवं समाज की हानि को रोक सकते हैं. आखिर ऑनलाइन माध्यम से किसी के खाते से धन की क्षति हम बैंकरों की ही तो क्षति है न!

दीपावली के पश्चात् प्रतिपदा का पर्व आता है जो कि पश्चिमी भारत में नव वर्ष तथा देश के अन्य भागों में अनेक तरह से मनाया जाता है. जहाँ नगर निवासी इस अवसर पर एक दूसरे से मिलने-जुलने तथा प्रसाद एवं मिठाइयाँ बाँटने में व्यस्त हो जाते हैं तो ग्रामीण क्षेत्रों में इस अवसर पर लोग अपने पशुधन को खूब सजा-संवारकर उनसे जुड़े विभिन्न आयोजन करते हैं. यह अवसर होता है प्रकृति द्वारा हमें प्रदान किये गए नि:शुल्क उपहारों को संजोने का. इसी दिन भगवान श्री कृष्ण ने गोकुलवासियों को अपने पर्वत एवं गौ धन के सम्मान का महत्व बताते हुए उसका सम्मान करने हेतु सजग किया था. ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि हम प्रकृति प्रदत्त उपहारों को संजोएं तथा इस हेतु अपनी भूमिका को अधिकाधिक करें. दीपावली के इस चतुर्थ दिवस भगवान महावीर स्वामी ने लगातार 48 घंटों तक अपने अंतिम उपदेश देकर मोक्ष मार्ग पर गमन करते हुए निर्वाण को प्राप्त किया था. इस तरह से देश के जैन धर्मावलंबियों हेतु इस दिन का बहुत अधिक महत्व है. इसी तरह गुजरात के निवासी दीपावली की रात से चार दिन तक अपने घरों से बाहर रहकर देशाटन एवं तीर्थाटन किया करते हैं. यह उन व्यस्त लोगों के लिए एक अवसर होता है कि वे देश को समझें, अपने चारों ओर के परिवेश को जाने. ऐसे में एक बैंकर चाहे तो अपने व्यवसाय को बहुआयामी बना सकता है. अलग-अलग समुदायों तथा मतावलंबियों की आवश्यकता के अनुरूप कई उत्पाद तैयार किये जा सकते हैं.

दीपावली का पाँचवा दिन जो कि भैयादूज या भाईदूज के नाम से जाना जाता है, बहुत महत्वपूर्ण और अनूठा है. इस दिन बहन के घर भाई जाता है. इस पर्व से कई पौराणिक आख्यान जुड़े हैं. जो भी हो पर इस दिन का महत्व इस बात से है कि मिठाइयों, वस्त्रों तथा कई अन्य उपहारों का भी इस अवसर पर आदान-प्रदान किया जाता है. यह पर्व भाई-बहन के सुमधुर संबंधों को देखकर हमें सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहने तथा प्रत्येक संबंध का यथोचित सम्मान करने की प्रेरणा प्रदान करता है. संबंधों से बहुत कुछ सीखने को हमें मिलता है. ऐसे में एक बैंकर भाई-बहन के इस अटूट रिश्ते वाले पर्व के माध्यम से समाज को बहुत कुछ दे सकता है. आज उपहारों को प्राप्त करने हेतु बहुत से प्लैटफार्म उपलब्ध हैं. जैसे निजी प्लैटफार्म हर पर्व पर मेला एवं सेल लगाया करते हैं, क्यों न हम बैंकर भी इन पर्वों पर अपने उत्पादों को लेकर सेल का आयोजन करें. इन पर्वों पर दी जाने वाली विशेष छूटों के माध्यम से हम लोगों को बैंकिंग जगत् के अधिक निकट ला सकते हैं.

वैसे तो औपचारिक रूप से दीपावली पाँच दिन का पर्व है, किंतु भैयादूज के पश्चात् आने वाली पंचमी को भी इसके अंतर्गत माना जा सकता है. इस दिन को गुजरात में लाभ पंचमी के रूप में मनाते हैं तो कुछ लोग इसे ज्ञान पंचमी के तौर पर मनाते हैं. लोग ज्ञान प्राप्ति के उपकरणों की पूजा करते हैं तथा गुजरात के धनिक व्यापारी इस दिन अपनी-अपनी दुकानें खोलकर नए वर्ष की शुरुआत करते हैं. ऐसे में नए काम को करने में हम बैंकर अधिकाधिक सहायता पहुंचा सकते हैं. इस दिन लोग परंपरागत रूप से अपने छोटे बच्चों को पाठशाला भेजने की शुरुआत करते हैं. जीवन के प्रत्येक पहलू तथा समाज के प्रत्येक वर्ग को अपने में समेटे हुए दीपावली का पर्व प्रत्येक वर्ग की खुशहाली हेतु है. हम बैंकर सभी की समृद्धि में अपना योगदान दे सकते हैं. दीपावली से ठीक ग्यारह दिन पश्चात् देवल उठनी ग्यारस का पर्व आता है. बच्चे अपने शेष रहे पटाखे जलाते हैं तथा दीपावली को अंतिम विदाई देते हैं. बहुत से शुभ कार्य इस दिन से ही शुरू किये जाते हैं. इतना ही नहीं विवाह एवं लग्न के सुयोग भी इस दिन के पश्चात् ही बनते हैं. देश में कुछ समाजों में केवल इसी दिन विवाह जैसे मांगलिक कार्य किये जाते हैं.

देव उठनी ग्यारस को भी दीपावली का आखिरी दिन माना जा सकता है. यह दिन सब के लिए महत्व का होता है क्योंकि इस दिन के पश्चात् ही हम अच्छे और शुभ मुहूर्त वाले कार्य कर पाते हैं. अर्थव्यवस्था की दृष्टि से यह दिन खास है क्योंकि इस दिन के पश्चात् ही लोग अपने नए मकानों में शिफ्ट होने की योजना बनाते हैं. नए कारोबार तथा नई दुकानों की शुरुआत भी इस दिन के पश्चात ही की जाती है. बैंकर यहाँ भी अपनी महती भूमिका अदा कर सकता है.

इस तरह से हम पाते हैं कि दीपोत्सव के ये दिन हमारे समाज को न केवल एक व्यवस्था प्रदान करता है, बल्कि नव चेतना एवं नव ऊर्जा का संचार कर देश एवं समाज को स्फूर्ति एवं स्पंदन प्रदान करता है. आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बैंकर भी इस पर्व की समृद्ध परंपरा में अपना भरसक योगदान दें ताकि देश एवं समाज को अधिकाधिक उन्नत एवं प्रगतिशील बनाया जा सके.

- अर्पित जैन
क्षे. का., भोपाल (दक्षिण)

ऊटी
पहाड़ों की रानी

'सैर कर दुनिया की गाफिल ज़िंदगानी फिर कहाँ, ज़िंदगी गर कुछ रही तो ये जवानी फिर कहाँ' राहुल सांकृत्यायन की यह प्रसिद्ध पंक्ति उन लोगों के लिए हैं, जिन्हें घूमना बहुत ही पसंद है. वैसे भारत में पर्यटन स्थल तो काफी हैं किन्तु पहाड़ों की यात्रा रोमांच से भरपूर काफी मनोरम एवं उत्साहवर्धक होती है. ऊटी, दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित नीलगिरि की पहाड़ियों में बसा एक सुंदर हिल स्टेशन है, जिसे पहाड़ों की रानी (Queen of Hills) भी कहा जाता है. यहाँ पहाड़ों की खूबसूरती के अलावा प्रकृति का अनुपम सौन्दर्य भी देखने को मिलता है, जो आँखों को चकाचौंध करने के साथ मन को शांति और शीतलता प्रदान करता है. ऊटी में नीलगिरी पर्वत की कई श्रृंखलाएँ हैं. पहाड़ी से पहाड़ों, घाटियों और पठारों के नयनाभिराम दृश्य निहारना बेहद खूबसूरत अनुभव होता है. यहां दूर-दूर तक फैली हरियाली, चाय के बागान, तरह-तरह की वनस्पतियां आपको मंत्रमुग्ध कर देगी. इसके अलावा दोडाबेट्टा पीक, लैम्ब्स रॉक, कोडानाडू व्यू पाइंट, बोटनिकल गार्डन्स, अपर भवानी झील, नीलगिरी माउंटेन रेलवे, सेंचुरी एवेलां और ऊटी झील आदि कई प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं जो पर्यटकों को अद्वितीय और जीवंत अनुभव प्रदान करते हैं.

- विवेक साव
क्षे. का., सेलम

भारतीय भाषाओं के प्रहरी
राहुल देव

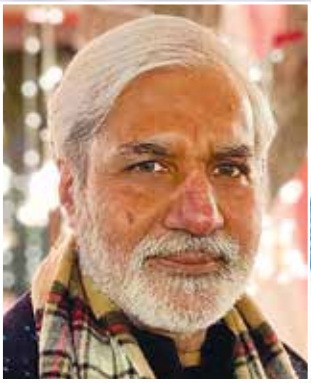

प्रसिद्ध हिंदी पत्रकार राहुल देव ने हमेशा अपने मूल्यों का पालन किया है और आज तक वे अपने पेशे में अपनी मूल भाषा और निष्पक्ष राय पेश करने की इच्छा शक्ति रखते हैं. पत्रकारिता के गिरते मूल्यों और घटती साख के बीच राहुल देव एक ऐसा नाम है, जो पत्रकारिता के सामाजिक सरोकारों और भारतीय भाषाओं के वजूद के लिए लंबी लड़ाई लड़ रहे हैं. हिन्दी पत्रकारिता के जगत में राहुल देव जी का नाम बेहद सम्मान के साथ लिया जाता है.

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर उनकी गहरी पकड़ है. 'दि पायोनियर', 'करेंट, दि इलस्ट्रेटड वीकली, दि वीक, प्रोब, माया, जनसत्ता में पत्रकार के रूप में कार्य किया है. आपने 30 साल से भी अधिक वक्त इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में बिताया है.

वर्ष 1977 में लोकप्रिय चैनल 'आज तक' पर एंकरिंग की जिम्मेदारी संभालने वाले राहुल देव पत्रकारिता में भाषा के स्वरूप और उसके संस्कार को लेकर बेहद संजीदा हैं. समाचार-पत्रों और न्यूज चैनलों में भाषा के सरलीकरण और बोलचाल की भाषा के नाम पर भारतीय भाषाओं के साथ हो रहे खिलवाड़ से चिंतित नजर आते हैं. भाषा की पवित्रता को लेकर उनका आग्रह बेहद सम्मानजनक है.

'सम्यक फाउंडेशन' के माध्यम से वे सामाजिक विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, एचआईवी-एड्स और सामाजिक मूल्यों के प्रति लोगों को जागरूक करने में लगे हैं. साथ ही युवाओं को समाजोन्मुखी पत्रकारिता का प्रशिक्षण देना और उनसे शोधकार्य का अभ्यास भी वे बखूबी करा रहे हैं.

झक सफेद दाढ़ी और सफेद बालों से दमकते इस व्यक्तित्व के साथ 'यूनियन सृजन' के दिल्ली संवाददाता, श्री सुनील दत्त और श्री कमल कुमार से हुई बातचीत.

पत्रकार के रूप में आपकी यात्रा? क्या आप शुरू से ही पत्रकार बनना चाहते थे?

मेरा जन्म पंजाब के जालंधर शहर में हुआ लेकिन मेरी सारी शिक्षा दीक्षा और लालन-पालन लखनऊ में हुआ है या आप कह सकते हैं कि मेरे मिजाज लखनवी हैं. लखनऊ में ही प्रेम विवाह किया और लखनऊ से ही मैंने अपनी पत्रकारिता आरंभ की. जहां तक मेरे पत्रकार बनने का सवाल है तो स्नातक होने तक मुझे यह नहीं मालूम था कि मुझे क्या करना हैं. पिताजी चाहते थे कि मैं डॉक्टर बनूँ क्योंकि वह दवाइयां बेचने का कार्य करते थे और वो शायद डॉक्टरों से ज्यादा प्रभावित थे. लेकिन मेरी रुचि डॉक्टरी में नहीं थी. पिता जी को शुरू से ही पढ़ने में रुचि होने की वजह से हमारे घर में हिंदी और इंग्लिश की किताबें रहती थी इसीलिए पढ़ाई के साथ-साथ साहित्य पढ़ने का शौक मुझे लग गया. एम. ए. अंग्रेजी साहित्य में मैंने प्रवेश लिया. हिंदी साहित्य पढ़ना शौकिया तौर पर आचार्य चतुरसेन से शुरू कर गुलशन नंदा और जासूसी कहानियां पढ़ने तक चलता रहा.

इसी दौरान देश में आपातकाल लगा और देश के हालात बहुत खराब हो गए. आपातकाल के दौरान यादव राव देशमुख जी हमारे घर में आकर रहे. वह एक पत्रकार थे और संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी तथा आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्ता थे. सरकार ने उनके खिलाफ वारंट जारी किया हुआ था इसलिए कई महीनों तक वह हमारे घर में छुप कर रहे और उन्होंने ही पहली बार मेरे अंदर के पत्रकार को महसूस किया. उन्होंने मेरे पढ़ने, लिखने के शौक को बारीकी से देखा. जब आपातकाल हटा तो उन्होंने

नई पत्रिका शुरू की 'युग विवेक' और मुझे इस पत्रिका में संपादक की जिम्मेदारी सौंपी, अनुवाद और संपादन करना सिखाया. उनकी मदद से ही उत्तर प्रदेश के सबसे प्रमुख अखबार 'पायनियर' में मुझे प्रवेश मिला. तब से मैं वेतन प्राप्त करने वाला एक पत्रकार बन गया और जब मेरी एम ए की पढ़ाई पूरी हुई, मैं विधिवत पत्रकार बन चुका था.

पिताजी के कहने पर मैंने बाद में एम बी ए भी किया लेकिन अपने जीवन में मैंने पत्रकारिता को ही चुना.

'पायोनियर' की समय की और आज की पत्रकारिता में आप क्या अंतर देखते हैं?

वह भारत की पत्रकारिता का मध्य युग था. देखते-देखते ऑफसेट प्रिंटिंग आई. उस समय छपाई की तकनीकी अलग थी. एक एक अक्षर का ब्लॉग बनाया जाता था और प्रिंटिंग बहुत ही दुष्कर कार्य माना जाता था. ज्यादातर कार्य हाथ से किए जाते थे. ऑफसेट प्रिंटिंग के बाद छपाई बेहतर हुई. रंगीन पृष्ठ छपने लगे. प्रिंटिंग के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए. अब तो डिजिटल मशीनें आ गई हैं.

पत्रकारिता की विषय वस्तु उस समय उच्च कोटी की थी, उसमें गहराई थी. विद्वान लोग पत्रकारिता से जुड़े हुए थे. 'पायोनियर' के प्रधान संपादक डॉक्टर एस एन घोष, उस समय के देश के बड़े नामी संपादकों में से एक थे. उनकी ऐसी धाकड़ धमक थी कि जब वे ऑ फिस में होते थे तो उनके होने का एहसास हरदम रहता था. उनसे सीधे बात करने की किसी में हिम्मत नहीं होती थी. उन्होंने जो लिख दिया उसका बहुत गहरा प्रभाव होता था. राजनीति तो आरंभ से ही पत्रकारिता का मुख्य विषय रही है लेकिन खेल, मनोरंजन आदि विषय इतने विविध नहीं थे जितने कि आज हैं. तब फैशन इतना प्रमुख नहीं था. कहा जाए तो सॉफ्टर साइड ऑफ जर्नलिज्म तब इतना विकसित नहीं था. संपादकीय पन्ना और संपादकीय स्तंभ का अपना प्रभाव और स्थान था. संपादकीय पृष्ठ का प्रशासन कार्यप्रणाली पर भी काफी प्रभाव पड़ता था और समाज के विशाल और विस्तृत निर्माण में एक विशिष्ट भूमिका उस समय अखबार निभाते थे. वैसे उस समय अखबारों की संख्या बहुत कम थी. टीवी तो इक्का-दुक्का ही घरों में पाए जाते थे. कुल मिलाकर स्वतंत्र पत्रकारिता के नाम पर सिर्फ अखबार ही थे. कुछ पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती थी परंतु राजनीतिक पत्रिकाएं बहुत कम थी. हिंदी पत्रिका में 'धर्मयुग' 'माधुरी' आदि साहित्यिक पत्रिकाएं प्रकाशित होती थी. साप्ताहिक पत्रिकाओं का दौर आपातकाल के बाद शुरू हुआ. 'दिनमान' ने अपनी एक अलग जगह बनाई थी. अज्ञेय जी ने उसे एक अलग दिशा, नई भाषा और नया मुहावरा दिया. अज्ञेय जी की प्रखर, मुखर और एक तरह की आक्रामक भंडाफोड़ करने वाली पत्रकारिता हमने देखी.

पत्रकारिता कैसी होनी चाहिए, उसकी विषय वस्तु, तौर तरीका और चरित्र उस

समय भी कटघरे में रहता था और आज भी प्रश्नों के घेरे में हैं. स्वतंत्र भारत में ये प्रश्न बने हुए हैं और आगे भी यह प्रश्न हमेशा बने रहेंगे.

उत्तर प्रदेश की पत्रकारिता, उसकी भाषा आदि के बारे में कुछ बताइए?

मेरे साथ संयोग यह हुआ कि जब मैं उत्तर प्रदेश में था, अँग्रेजी पत्रकार था. पत्रकारिता आरंभ करने के 9 साल बाद दिल्ली में आकर मैं हिन्दी पत्रकार बना. मैं अंग्रेजी पत्रकार था, अंग्रेजी में ही लिखता और पढ़ता था लेकिन मेरी मातृभाषा तो हिंदी थी और मेरे मन की भाषा भी हिंदी थी. क्योंकि मेरी शिक्षा दीक्षा लखनऊ में ही हुई और बाल्यकाल में ही पंजाब से हम लोग लखनऊ में बस गए थे. घर में शुरू से ही हिंदी का वातावरण था और हिंदी साहित्य का मुझे शौक लग चुका था लेकिन हिंदी पत्रकारिता का कोई प्रत्यक्ष अनुभव मुझे नहीं था. हालांकि कुछ पत्रिकाओं के लिए मैंने हिंदी लेखन का कार्य भी किया है लेकिन इतना मैं कह सकता हूं कि उस समय हिंदी और अंग्रेजी दोनों पत्रकार पत्रकारिता की भाषा पर बहुत अधिक ध्यान दिया करते थे. भाषा में गलतियां ना हो, व्याकरण की दृष्टि से वे ठीक हो, वाक्य उपयुक्त बनाए गए हो और भाषा सरल होने के साथ-साथ उसमें सही शब्दों का चुनाव हमारे मापदंड होते थे. हम किसी भाषा के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते, यह हमें बताया और सिखाया गया था. यह सब करते-करते हमने धीरे-धीरे यह भी सीखा कि अच्छी भाषा किसे कहते हैं और उस पर कैसे पकड़ बनाई जाती है. अंग्रेजी में मेरी जो रगड़ाई हुई उसने मुझे हिंदी पत्रकारिता में भी बहुत सहायता की क्योंकि जब मैं हिंदी का संपादक बना तो मैंने उन्हीं मापदंडों को हिंदी पत्रकारिता में भी लागू किया और उन सभी मापदण्डों को लागू करवाया जो मैं 'पायोनियर' में लागू करता था. स्वतंत्र भारत ने अशोक जी के नेतृत्व में 'स्वतंत्र भारत सुमन' नाम की एक साप्ताहिक पत्रिका आरंभ की तब प्रशिक्षु के तौर पर उसके संपादन के कार्य से मैं जुड़ गया. अशोक जी हिंदी के बहुत बड़े संपादकों में से एक हैं. विश्वसनीयता, प्रभाव की दृष्टि से समाज में उनका बहुत सम्मान था. हिंदी में उनका जो संपादन था वह उच्च कोटि का था. अच्छी हिंदी के संस्कार मुझे उन्हीं से मिले. 'पायोनियर' और 'स्वतंत्र भारत' दोनों के लोग एक साथ, एक ही हॉल में बैठकर कार्य करते थे. उस अनुभव के आधार पर मैं आपको बता रहा हूं कि अच्छी, सही, दुरुस्त, भाषा की अपेक्षा हर पत्रकार से होती है, होनी भी चाहिए परंतु दुर्भाग्यवश आज वह अपेक्षा आधी भी नहीं रह गई है. आज के संपादक अपने पत्रकारों, लेखकों से उच्च स्तर की भाषा की ना

तो मांग रखते हैं, ना ही अपेक्षा करते हैं, हम पाते हैं कि आज की पत्रिकाओं, अखबारों, टीवी चैनलों पर भाषा विशेषकर हिंदी बहुत ही कमजोर और निम्नकोटि की है. उस समय हिंदी पत्रकारों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह साहित्य जगत और बौद्धिक जगत से परिचित हो जो उनकी संवेदनशीलता को प्रभावित करें.

क्या आप मानते हैं कि कहीं-ना-कहीं हमने अपनी भाषा से समझौता कर लिया है?

एक तो टीवी ने संपूर्ण समाज की भाषा और पत्रकारिता पर गहरा प्रभाव डाला है. अंग्रेजी और हिंदी का संसार अलग-अलग हैं और इस बात से आप भी सहमत होंगे कि अपने बच्चों का जो भाषा संसार हैं और आपका अपना जो भाषिक संस्कार है वह अलग-अलग है. हिंदी के संपादकों ने भाषा पर धीरे-धीरे ध्यान देना कम कर दिया है. प्रबंधन की संपादकों से अपेक्षाएं भी धीरे-धीरे बदल गई हैं. एक लंबा दौर ऐसा चला कि प्रबंधन संपादकों से अपेक्षा की जाने लगी कि वह संपादन के अलावा कुछ और भी करें, वे प्रबंधन की भूमिका भी निभाए, प्रबंधकों को नेताओं से मिलवाने में भूमिका अदा करें, मालिकों की दूसरे तरीके से सहायता करें. राजनीति में भी उनकी पैठ होनी चाहिए तथा उनके राजनीतिक संपर्क अच्छे होने चाहिए.

परिणामस्वरूप संपादकों का ध्यान भी धीरे-धीरे राजनीति और राजनीतिक लाभ प्राप्त करने की दिशा में बढ़ गया और पत्रकारिता के जन, सांस्कृतिक, ग्रामीण सरोकार आदि पीछे छूट गए. संपादकों की अपनी जीवन शैली तथा अपेक्षाएं भी बदलने लगी और जो बड़े शहरों में होता है, वह छोटे शहरों में होने लगा और छोटे शहरों में जो होता था वह गांवों में होने लगा.

क्या इसका कारण आप सिर्फ अंग्रेजी को मानते हैं?

नहीं, बिलकुल नहीं. लेकिन हमारी अंग्रेजी और अंग्रेजी बोलने वालों के सामने हीनता महसूस करने की जो ग्रंथि है जिसमें हिंदी समाज के पत्रकार भी शामिल है, ये उसके कारण हैं. मैं अंग्रेजी का विद्यार्थी, अंग्रेजी का प्रेमी और हिंदी का पत्रकार भी हूँ. 26 सालों से मैं हिंदी का ही पत्रकार रहा हूं और आज बहुत कम लोग जानते हैं कि मेरी पत्रकारिता का आरंभ अंग्रेज़ी भाषा से हुआ था या किसी समय मैं अंग्रेजी का पत्रकार था. अब तो मेरी पहचान हिंदी पत्रकार और भारतीय भाषाओं के लिए लड़ने वाले की है.

अपवादों को छोड़ दिया जाए तो हिंदी समाज एक आत्म लज्जित समाज है. अंग्रेजी बनाम भारतीय भाषाओं का जो एक संकट है वह केवल हिंदी प्रदेशों में नहीं है बल्कि समस्त भारतीय भाषाओं के लिए हैं. आज अंग्रेजी उच्च वर्ग की भाषा बन गई है और हिंदी शोषित वर्ग की. हिंदी में भाषा को लेकर जो हीन भाव उत्पन्न हुई है वह बहुत ज्यादा प्रबल है. हम हिंदी पत्रकारों पर उसका प्रभाव ज्यादा पड़ा है. गैर-हिंदी प्रदेशों में जैसे कि अगर आप महाराष्ट्र में रहे हो तो वहां पत्रकार अपनी मराठी भाषा से ज्यादा जुड़ा हुआ है. मराठी बोलने में ज्यादा गर्व महसूस करता है और जिद की हद तक गर्व करता है और अंग्रेजी भी ठीक-ठाक जानता है. हिंदी पत्रकार अंग्रेजी से बचता भी हैं और उससे आक्रांत भी हैं. वह हीन भाव से ग्रस्त है और इसलिए अपने आपको बचाने के लिए अपनी भाषा में अंग्रेजी के शब्दों को ठूंसने की कोशिश करता रहता हैं. बड़ी संख्या में संपादक भी इस हीनता की ग्रंथि से ग्रस्त है. एक लेखक या संपादक के लिए यह उचित नहीं है. क्योंकि इन लोगों की एक अलग भूमिका, बड़ी जिम्मेदारी होती है समाज निर्माण, व्यक्तित्व निर्माण में! भाषा मानस का निर्माण करने वाली शक्ति है, परंतु हिंदी में इस भाव का अभाव नजर आता है.

हिंदी के साथ क्षेत्रीय भाषाओं पर भी संकट आ गया है. क्षेत्रीय भाषाओं का विकास नहीं हो पा रहा है. क्या पत्रकारिता का भी क्षेत्रीय भाषा के विकास पर प्रभाव पड़ता है?

बिल्कुल पड़ता है और पड़ना भी चाहिए. ऐसी पत्रकारिता ही क्या जिसका प्रभाव उसके अपने समाज, अपनी भाषा पर ना पड़े. पत्रकारिता मानस और भाषा निर्माण करती है. आज भी अखबार का महत्व कम नहीं हुआ हैं. आज भी जनसामान्य के लिए सबसे बड़ा और एकमात्र प्रमुख स्रोत अखबार है. हमारा देश एक बहुभाषी देश हैं और देश में नौकरशाही भी है जिसमें पूरे देश से लोग आते हैं और इसी वजह से अंग्रेजी उनके कामकाज की भाषा बन जाती है. सारा वाणिज्य तथा उच्च स्तरीय कामकाज अंग्रेजी में ही है. दूसरी बात है पंजाबियों की! पंजाबियों में यह अंग्रेजी से लगाव का भाव और अपनी भाषा से हीनता का भाव बीमारी की हद तक है. आज पंजाब में कोई पंजाबी अखबार इतना मजबूत नहीं है, जितना अंग्रेजी और हिंदी अखबार. मुझे दुख होता है क्योंकि कहीं ना कहीं हमारी एक समृद्ध क्षेत्रीय भाषा धीरे-धीरे खत्म हो रही है और एक दिन यह सिर्फ बोलचाल की भाषा रह जाएगी.

आपने अनेक जगह, हर क्षेत्र में काम किया है. बड़े मीडिया हाउस से आप जुड़े रहे लेकिन क्या आपको कभी लगा कि कुछ ऐसा जो आप चाहते थे लेकिन कर नहीं कर पाए?

वह तो हर समय लगता है. बल्कि जितना मुझे रोज करना चाहिए उतना भी मैं नहीं कर रहा हूं, ऐसा भी मुझे लगता है. मुझमें कोई आत्मसंतोष का भाव नहीं है.

शायद मैं काफी कुछ कर सकता था लेकिन मैं नहीं कर पाया और अभी नहीं कर पा रहा हूं. यह काम ऐसा है जिसमें आप अपना पूरा जीवन होम कर सकते हैं क्योंकि भाषा का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का नहीं है बल्कि यह पूरी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बचाने का प्रश्न है. अगर भाषा चली गई तो संस्कृति नहीं बचेगी, भारतीयता नष्ट हो जाएगी. इस विषय में मेरी दृष्टि एकदम स्पष्ट है. देश की गरीबी, बेरोजगारी या जितनी भी दूसरी समस्याएं हैं, भाषा की समस्या के सामने बहुत छोटी है. गरीबी, बेरोजगारी से हम निपट लेंगे बल्कि रोज ही निपट रहे हैं लेकिन अगर हम अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को भूल गए तो फिर हम क्या करेंगे? भाषा का प्रश्न देश के सामने बहुत बड़ा प्रश्न है और

मेरी राय में इससे बड़ा कोई और प्रश्न ही नहीं है. हमें इसमें पूरी सेना को दूसरे स्वतंत्रता संग्राम की तरह लगा देना चाहिए, एक आंदोलन शुरू करना चाहिए हिंदी और देश की सभी क्षेत्रीय भाषाओं के लिए. लेकिन हम नहीं कर पा रहे हैं. मैं भी सुविधा भोगी और आलस्य का शिकार हो गया हूँ.

राहुल जी, आपके जीवन का सबसे सुनहरा, समय कौन सा रहा?

मुंबई का! जब मैं मुंबई में 'जनसत्ता' का स्थानीय संपादक था, वह मेरे पत्रकारिता जीवन का स्वर्णिम काल था. मैंने वहां पत्थर खाएं, गालियां खाई, कमर पर लाठी भी पड़ी, पत्रकारों का दमन करने वाली शक्तियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी. इसीलिए वह मेरे जीवन के सबसे गौरवशाली पल हैं. मुंबई में मैंने सिर्फ अखबारों का संपादन ही नहीं किया बल्कि दैनिक 'संझा जनसत्ता' शुरू किया, हिंदी की पहली पत्रिका 'सबरंग' शुरू की. ये मेरे अच्छे कामों में गिने जा सकते हैं. मुंबई में मेरी सामाजिक सक्रियता बहुत थी. सामाजिक स्तर पर वहां जो मैं कर सका, वह मुझे थोड़ा सा संतोष देता है. हिंदी समाज, पत्रकार संघ बनाकर हिंदी पत्रकारों को संगठित करने में मैंने छोटी सी भूमिका भी निभाई. मुंबई में हुए हिंदू-मुस्लिम दंगे के दौरान उन दंगों में एक सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका भी मैंने निभाई. मैं राज्यपाल की शांति समिति का सक्रिय सदस्य था. मैंने धारावी में कई दिनों तक रात-दिन कार्य किया. पत्रकार और कार्यकर्ता दोनों के रूप में दोनों समुदायों के पास जाना, उनके पास जाकर रहना पड़ता था. हमारा उद्देश्य दोनों समुदायों के लोगों के बीच शांति और संवाद स्थापित करना था. शबाना आजमी और दिलीप कुमार जैसे प्रभावशाली व्यक्तित्व भी हम लोगों के सहयोगी थे. मैं इसे अपना स्वर्ण युग इसलिए कहता हूँ क्योंकि पत्रकारों का काम सिर्फ पत्रकारिता करना नहीं होता बल्कि समाज में आगे बढ़कर सामाजिक गतिविधियों में भी भाग लेना, सड़क, जमीन पर उतर के कार्य करना होता है. मैं हमेशा पत्रकारिता के साथ कई सामाजिक संस्थाओं के साथ हूँ. मैंने स्वयं भी एक सामाजिक संस्था बनाकर दंगों में पीड़ित लोगों की सहायता की है. बाल स्वास्थ्य में काम किया, एड्स के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाई, यूनिसेफ के साथ काम किया.

आपकी कोई ऐसी मौलिक रचना, जो आप हमारे पाठकों के साथ साझा करना चाहते है?

कुछ नहीं. मैं तो लिखता ही नहीं हूं. बहुत कम लिखता हूं. मैंने कोई पुस्तक नहीं लिखी. मैं साहित्य का व्यक्ति नहीं हूँ, साहित्य का पाठक हूं. मेरा सारा लेखन पत्रकारिता और वैचारिक लेखन हैं. मैं अब भी लिखता हूँ लेकिन वे संपादकीय लेख हैं.

आपको और आपके जीवन को बहुत ज्यादा प्रभावित करने वाले लेखक?

मैं सबसे ज्यादा सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' से प्रभावित हूं. कवियों में भवानी प्रसाद मिश्र, हजारी प्रसाद द्विवेदी. कमलेश्वर पसंदीदा लेखक हैं. हिंदी में आधुनिक साहित्य, नया वैचारिक साहित्य भी बहुत अच्छा लिखा जा रहा है. मेरा आध्यात्मिक पुस्तकों, धर्म ग्रंथ शास्त्रों में भी रुझान हैं. इसीलिए मैं साहित्य से ज्यादा उन्हें पढ़ता हूँ. गीता मेरा प्रिय ग्रंथ है. मेरी सोच और दृष्टिकोण को सबसे ज्यादा जे कृष्णमूर्ति जी ने प्रभावित किया है.

भाषा के बारे में आपकी लड़ाई हैं, यह जो यह एक अघोषित युद्ध है, उसके बारे में बताईए.

मेरे लिए तो यह घोषित युद्ध है. मैं एक बात कहूंगा कि भाषा के बारे में धीरे-धीरे पढ़ते, सोचते हुए एक अलग ही दृष्टि मुझे मिली है, जिससे मैं अपने कई मित्रों की तुलना में भाषा के इस पूरे व्यापार और संकट को बखूबी देख और समझ पाता हूँ. अब लगता है कि अगर पहले ही सचेत हो गया होता, तो ज्यादा सीख, समझ कर कठोर धरातल पर भाषा के लिए कुछ कर पाता. मैंने कुछ किया है, यह कहना गलत है. वह अपने आप हो गया है. मैंने आज तक किताब नहीं लिखी लेकिन अब लिखना चाहता हूँ. वैसे टीवी के कारण मुझे ज्यादा प्रसिद्धि मिली. वरना मुझसे भी बहुत ज्यादा समझदार लोग थे और हैं लेकिन सही मंच न मिलने के कारण आज उन्हें कोई नहीं जानता. टीवी की लोकप्रियता के कारण मुझे एक आसान और प्रमुख पहचान मिल गई. इसी वजह से मेरे हिंदी के प्रति विचारों और बातों को लोगों ने ध्यान से सुना और उस पर अमल भी किया.

किसी भी बात का आगाज करना बहुत मुश्किल काम होता है और राहुल जी ने भाषा के क्षेत्र में आगाज किया है. पत्रकारिता के साथ-साथ हिंदी भाषा के विकास के लिए आपने जो कार्य किए हैं सराहनीय हैं. बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो भाषा के लिए इतना काम करते हैं. उनका मानना है कि भाषा कोई भी हो, उसकी पवित्रता बनी रहनी चाहिए. अंग्रेजी बोलो तो शुद्ध. हिन्दी में बातचीत करो तो उसमें अंग्रेजी के शब्द न हों.

क्योंकि हम जब हिंदी में अंग्रेजी के शब्द ठूँसते है तब हम कहीं ना कहीं हिंदी की हत्या करते है और कोई भी स्वाभिमानी समाज ऐसा नहीं करेगा. हिन्दी की स्थिति अगर यही रही तो 2050 तक भारत में लिखाई और पढ़ाई के सारे काम अंग्रेजी में किए जा रहे होंगे और हिन्दी और सभी भारतीय भाषाएँ सिर्फ मनोरंजन की भाषाएं बनकर रह जाएंगी. संक्षेप में सारी भारतीय भाषाओं के समक्ष आज अपने अस्तित्व का संकट खड़ा है. यदि आज भी हम नहीं जागेंगे तो अंग्रेजी के प्रति मोह हमारी सारी भारतीय भाषाओं को खा जाएगा.

- सुनील दत्त
क्षे.का., दिल्ली (दक्षिण)

- कमल कुमार
क्षे.का., दिल्ली (उत्तर)

दिवाली : विभिन्न मान्यताएँ

दिवाली का शब्द संस्कृत शब्द दीपावली से उत्पन्न हुआ. दीप का अर्थ है दीया और आवली का अर्थ है अनुक्रम. दिवाली का त्योहार दीपमाला, ज्योति पर्व तथा प्रकाश उत्सव नाम से भी जाना जाता है. भारत के अलग-अलग राज्यों में दिवाली का उत्सव मनाने की परंपरा भी उस राज्य के रीति-रिवाजों के अनुसार ही मनाई जाती है. उत्सव मनाने की विधि, उनकी ऐतिहासिक संबंधी कथाओं एवं आचारों में थोड़ा-बहुत अंतर होने पर भी धार्मिक रूप से देखा जाए तो हिन्दू, जैन, सिख, बौद्ध सभी को दीवाली त्योहार एक ही संदेश देता है और वह है 'बुराई पर अच्छाई की', 'अज्ञान पर ज्ञान की' 'अंधकार पर रोशनी की' तथा 'झूठ पर सत्य की जीत'.

दीपावली के त्योहार से जुड़ी लोक प्रचलित कथा यह है कि अयोध्या के राजा भगवान श्रीराम जब लंका पर विजय प्राप्त करके लौटे थे, तब अयोध्या वासियों ने उनके स्वागत में चारों ओर दीप प्रज्ज्वलित कर उत्सव मनाया था. उसी दिन अयोध्या नगर दीपों की रोशनी से जगमगा उठी. उसी आनंद और उत्साह का प्रदर्शन करते हुए हमारे देश में दीपावली का त्योहार मनाया जाता है. दीवाली के त्योहार को ज़्यादातर हिंदू संपत्ति एवं सौभाग्य प्रदान करनेवाली माँ लक्ष्मी से जोड़ते हैं. यह त्योहार माँ लक्ष्मी के साथ जुड़े होने पर भी भगवान राम, कृष्ण, यमराज, उनकी बहन यमी, दुर्गा, काली, हनुमान, गणेश, कुबेर, धन्वन्तरी, विश्वकर्मा आदि देवताओं की पूजन एवं कथाएँ भी आपस में जुड़ी हुई हैं.

दिवाली का त्योहार भारत के विभिन्न राज्यों में धूमधाम एवं हर्ष व उल्लास के साथ मनाया जाता है. इस दौरान घर की मरम्मत एवं साफ-सफाई, रंगाई-पुताई करते हैं. अलंकरण की सामाग्री से घर शोभायमान सजाते हैं. पारंपरिक व्यंजन बनाना, रंगोली बनाना, रिश्तेदार एवं मित्रों में मिठाइयाँ एवं तोहफे बाँटना, पटाखे छोड़ना और लक्ष्मी पूजा करना आदि बातें लगभग सभी राज्यों में प्रचलित हैं. अंतर सिर्फ पारंपरिक व्यंजनों के स्वाद, वस्त्रों और पूजा करने की विधि में दिखाई देता है.

दिवाली त्योहार लगभग सभी राज्यों में 5 दिनों तक चलता है.

पहले दिन धनतेरस को धन्वन्तरी और भगवान यमराज की पूजा की जाती है. माना जाता है कि भगवान धन्वन्तरी समुद्र मंथन के समय अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे. उनके नाम से इस दिन को 'धनत्रयोदशी' नाम से जाना जाता है. कहीं-कहीं लोकमान्यता के अनुसार इस दिन सोना, चाँदी, लोहे की वस्तुएँ अपनी क्षमता के अनुसार खरीदने की परंपरा है. कहा जाता है कि ऐसा खरीदने से उसमें तेरह गुना की वृद्धि हो जाती है. इतना ही नहीं, अकाल मृत्यु से बचने के लिए घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर दीप जलाने की भी प्रथा है. इस रात यम के नाम से पूजा करके दीपमाला दक्षिण दिशा में रखने से अकाल मृत्यु से मुक्ति मिलती है, ऐसा कहा जाता है.

दूसरा दिन नरक चतुर्दशी, रूप चतुर्दशी, छोटी दिवाली नाम से जाना जाता है. मान्यता है कि नरकासुर राक्षस के संहार होने की खुशी में नरक चतुर्दशी मनाई जाती है.

तीसरे दिन दिवाली के मुख्य दिन माँ लक्ष्मी एवं गणेश की पूजा होती है एवं शाम को दीप जलाकर माँ लक्ष्मी का स्वागत करते हैं. कहा जाता है कि देवता और दानव जब समुंदर मंथन कर रहे थे उस समय माँ लक्ष्मी आविर्भाव हुईं और माता ने दिवाली की रात को ही भगवान विष्णु को विवाह करने के लिए चुन लिया. इसलिए माँ लक्ष्मी के साथ संकटों को दूर करनेवाले और शुभ शुरुआत प्रदान करनेवाले गणेश की पूजा करने की परंपरा है.

चौथे दिन गोवर्धन पूजा करने की प्रथा है कहा जाता है कि भगवान कृष्ण गोकुलवासियों को देवराज इंद्र के एवज में गोवर्धन की पूजा करने को कहते हैं. जिससे अपमानित होकर इन्द्र प्रलय के समान बरसात करवाते हैं. ब्रजवासियों को वर्षा के रूप में आनेवाली विपत्ति से रक्षा करने के लिए भगवान कृष्ण गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठाते हैं. कृष्ण भगवान के इस कार्य से देवराज इन्द्र को पता चलता है कि कृष्ण भगवान साक्षात् भगवान विष्णु का अवतार है और वह उनसे क्षमा माँगते हैं. इसी दौरान हर साल दिवाली के अगले दिन गोवर्धन पूजा तथा अन्नकूट पर्व मनाया जाता है.

पाँचवें दिन भाई दूज मनाते हैं, जिसे यम द्वितीया भी कहा जाता है. इस दिन बहनें भाई की आरती उतार कर मिठाइयाँ खिलाती हैं तथा भाई अपनी बहनों को उपहार देते हैं. माना जाता है कि यमराज को उनकी बहन यमुना ने अपने घर बुलाकर तरह-तरह के पकवान बनाकर उन्हें भोजन खिलाया जिससे संतुष्ट होकर यमराज ने वर दिया कि इस दिन अगर मानव अपनी बहन के हाथों से बनाया भोजन खाता है, तो उन्हें नर्क लोक से छुटकारा मिलेगा और लंबी आयु प्राप्त होगी.

भारतीय संस्कृति में त्योहारों का महत्व है लेकिन दीपावली का पावन पर्व पूरे देश में एक ही दिन मनाया जाता है जो विविधता में एकता को दर्शाता है. साथ में यह त्योहार दूरी को समाप्त कर हमें अपने घर-परिवार के करीब आने, प्राकृतिक वातावरण से तालमेल स्थापित करने तथा परंपराओं को बनाये रखने के लिए अवसर प्रदान करता है. दिवाली पर्व बाह्य जगत को प्रकाशित करने के साथ आंतरिक रुप से ज्ञान के दीपक को प्रकाशित करने की भी प्रेरणा देता है. समाजिक एकता को कायम रखना तथा संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करना इस त्योहार का मकसद है. इसी सद्भाव को मन में लेकर स्वच्छता का ख्याल रखकर पटाखे रहित एवं पर्यावरण हितैषी दीपावली मनाने का संकल्प लेंगे.

- श्रीमती एनवीएनआर अन्नपूर्णा
एआरबी, विशाखपट्टणम

दिवाली - प्रकाश का अलौकिक पर्व

है जीवन यज्ञ अधूरा, बिना जले ज्ञान का दीप,
दें मोहजाल की आहूति, आलोकित मन रहे समीप.

दीपावली-जीवन और प्रकाश का सम्मेलन. दीपावली-आंतरिक चेतना को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का उत्सव. दीपावली-देवी-देवताओं की अनवरत आराधना में पूर्ण भक्तिभाव व विधि-विधान से जुड़े रहने का पर्व. कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाने वाला दीपावली पर्व एक है, पर्याय अनेक हैं - ये त्योहार केवल मन के आनंद-उल्लास का पर्व न होकर आत्मा से द्वेष भाव मिटाकर प्रेम-एकता, मेल-मिलाप का संदेश भी देता है जो न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि आध्यात्मिक, भौतिक व सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है.

जब भी विभिन्नताओं के समूह भारतवर्ष की बात होती है तो वहाँ मनाए जाने वाले त्योहार उसकी संस्कृति की गौरवगाथा बयान करते हैं. यूँ तो प्रत्येक त्योहार का कुछ-न-कुछ विशिष्ट अर्थ होता है. इस विशिष्ट अर्थ के साथ इसका कोई-न-कोई महत्व अवश्य होता है जिससे मानव की प्रकृति व दशा झलकती है. दीपावली का ये त्योहार अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान, बुराई पर अच्छाई और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक है जो परस्पर एकता, एकात्मकता, एकरूपता और एकरसता का पाठ पढ़ाती है.

प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक ज्योति जलती रहती है. जब भी बैर, कुंठा, ईर्ष्या, आलस्य, बुरे आचरण, प्रमाद, कटु शब्दों, हिंसा आदि के अंधकार विस्तार लेने लगते हैं तो इस ज्योत की लौ मद्धिम जरूर हो जाती है लेकिन बुझती नहीं. अंधकार रूपी हमारी राक्षसी मनोवृत्तियाँ जब हमारा मार्ग अवरूद्ध कर देती हैं तो चारों ओर का वातावरण अंधकारमय हो जाता है जिसमें घिरा हुआ दिशाहीन व्यक्ति फिर चाहे लाख कोशिश कर ले, जितने हाथ-पैर मार ले उसके प्रयास कभी सफल नहीं होते. अज्ञान की छाई इस कालिमा को ज्ञान के प्रकाश पुंज से रोशन करना होगा. आत्म-साक्षात्कार के इस पर्व पर भीतर की सुषुप्त चेतना को जगाना होगा और ये तभी संभव है जब किसी भी काम को करने से पहले हम ज्ञान को स्वयं के भीतर आत्मसात कर लें.

यह बात सच है कि मानव ने हमेशा प्रकाश को ही चाहा. हममें से कोई भी अंधकार की उंगली थाम कर नहीं चलना चाहता है. अंधकार जीवन की समस्या है और प्रकाश उसका समाधान. प्रकाश का न होना ही अंधकार कहलाता है जिसे मिटाना प्रकाश की प्रवृत्ति है. जीवन जीने के लिए सहज प्रकाश की आवश्यकता है और मानव सदैव अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की कामना लिए उस दीप की तलाश में रहा है जो मंज़िल तक ले जाने वाली राहों को आलोकित करता रहे.

ओझल आँखों से हो गई, मंज़िल अँधेरी रातों में,
ज्योति बुझे न अंतर्मन की, लें दीया जला एक हाथों में.

इस प्रकाश पर्व की सबसे बड़ी बात यह है कि ये अपने भीतर पवित्रता और सात्विकता की भावना संजोए हुए है, जो हमारे भीतर की कलुषता और हीनता की भावना का नाश कर सच्चाई, आत्मविश्वास तथा निष्कपटता की श्रेष्ठ भावना को जन्म देता है. आज मनुष्य को ऐसे प्रकाश स्तंभ की आवश्यकता है जो उसे सन्मार्ग दिखा सके. यही प्रकाश जब मनुष्य की अंतर्चेतना से जागृत होता है तब संकल्प की प्रेरणा मिलती है और लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग.

यद्यपि जनमानस में दीपावली एक सांस्कृतिक पर्व के रूप में अपनी व्यापकता सिद्ध कर चुका है फिर भी यह तो मानना ही होगा कि जिन ऐतिहासिक महापुरुषों के घटना-प्रसंगों से इस पर्व की महत्ता जुड़ी है वे अध्यात्म जगत के शिखर-पुरुष थे, जो अपने भीतरी आलोक से आलोकित हुए, वो सबके लिए ज्योतिर्मय हो गए और जिन्होंने भीतरी शक्तियों के स्रोत को जगाया, जो अनंत शक्तियों के स्रोत बन गए. उन्होंने अपने भीतर की दीपावली को मनाया तो आज हम उनके उपलक्ष्य में दीपावली मना रहे हैं. इस दृष्टि से यह प्रकाश पर्व लौकिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता का भी संगम है जिसमें डुबकी लगाने वाला इंसान भीतर के शाश्वत प्रकाश की आभा से जगमग हो जाता है. इससे अंधकार का साम्राज्य तो नष्ट होता ही है, ज्ञान का दीप जल उठता है जिससे भीतर और बाहर दोनों प्रकाशमान हो जाता है.

प्रकाश का ये लौकिक पर्व हमारे भीतर धर्म का दीप जलाकर मोह-मूर्च्छा के अंधकार दूर करने के साथ ही आकांक्षाओं और इच्छाओं के परिणामस्वरूप निर्माण हुई पर्यावरण प्रदूषण और अनैतिकता जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए भी ज़रूरी है. 21वीं सदी के मनुष्य के सामने जो भी समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी हैं, उनका जनक वो स्वयं ही तो है. अनावश्यक हिंसा का जघन्य कृत्य करने से अनैतिकता, भय, हिंसा, दीपावली का यह लौकिक पर्व तभी सार्थक है जब हम मन के भीतर भी दीये जलाएं क्योंकि दीया कहीं भी जले उजाला ही देता है. आत्म-साक्षात्कार के इस पर्व पर भीतर की सोई हुई चेतना को जगाकर दुर्बलताओं को मिटाकर एक नई जीवनशैली की शुरूआत का संकल्प लें.

दीपावली का त्योहार स्पष्टीकरण का त्योहार है. हमें समझना होगा कि ख़ुशी, आनंद, उल्लास सब हमारे मन के ही भाव हैं. हमारे भीतर का वातावरण या माहौल तय करता है कि हम ख़ुश कब हैं और जब हम ख़ुश होते हैं उत्सव तभी बन जाता है. हमारे भीतर के विशाल जगत से अज्ञान का तमस दूर हो जाता है और स्थिर चित्त-वृत्ति और एकाग्रता लौट आती है.

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का आसुरी शक्तियों पर विजय के पश्चात अयोध्या आगमन का ज्योति दिवस, शक्ति की देवी माँ काली की उपासना, धन-वैभव की देवी महालक्ष्मी की आराधना, रिद्धि-सिद्धि, समृद्धि का संगम, ज्योति से ज्योति जलाने का पर्व ये दीपावली हमें आध्यात्मिक अंधकार पर आन्तरिक प्रकाश की विजय गाथा सिखाता है.

आमतौर पर प्रकाश के इस त्योहार में हम सभी बाहरी साफ-सफाई और साज-सज्जा पर ख़ासा ध्यान देते हैं. उसे सँवारने-निखारने का प्रयास करते हैं. उसी तरह भीतर चेतना के आँगन पर पड़े कचरे को साफ़ कर उसे संयम से सजा-सँवार कर आत्मारूपी दीपक की अखंड ज्योति को प्रज्ज्वलित कर दिया जाय तो मनुष्य शाश्वत सुख, शांति एवं आनंद को प्राप्त कर सकता है.

प्रकाश के इस पर्व पर हमें जीवन को प्रकाशमय बनाना है जिससे हमारे आसपास की प्रत्येक वस्तु प्रकाश से भर जाए. दीया जलते-जलते हमें जीवन से न भागने तथा परिवर्तन को स्वीकार करने का जो संदेश देता है उसे स्वीकार करना चाहिए क्योंकि पलायन करने से मनुष्य के दामन पर कायरता का धब्बा लगता है जबकि परिवर्तन में विकास की संभावनाएँ जीवन की सार्थक दिशाएँ खोज लेती हैं. जब हम इस प्रकाश पुंज से आत्मारूपी दीपक को प्रज्ज्वलित करेंगे तो फ़िर अंधकार का साम्राज्य कहाँ तक ठहर पाएगा!

हर्षोल्लास, सुख, शांति, आनंद है, दीयों की कतार में,
जीवन आलोकित करें, प्रकाश पर्व के इस त्योहार में.
ज्ञान की बाती सुलगाकर, मिटा दें अज्ञान का अवशेष,
भेद तिमिर ये नव आभा से, बना दें दीपावली विशेष..

- नवल कुमार झा
ईआरडी, के.का.,

दीपावली कैसे और क्यों मनायी जाती है

दीपावली सबसे बड़ा और सबसे आकर्षक पर्व है. इस पर्व को हर धर्म के लोग मनाते है, यहाँ धर्म की कोई पाबन्दी नहीं होती. दीपावली रोशनी और खुशियों का त्योहार है, इसलिए इस त्योहार को बच्चे, बूढ़े, बड़े सब मिलकर मनाते हैं. रोशनी का त्योहार दीपावली भारत के सबसे बड़े त्योहारों में से एक है. यह त्योहार अंधकार पर प्रकाश की विजय को दर्शाता है. भारतवर्ष में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है. इसे दीपोत्सव भी कहते हैं. यह त्योहार 5 दिनों तक चलने वाला एक महापर्व है. दीपावली का त्योहार देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी धूमधाम से मनाया जाता है.

दीपावली कब मनाई जाती है : हिंदू कैलेंडर के अनुसार दीपावली आश्विन के महीने में कृष्ण पक्ष के 13वें चंद्र दिन (जो अंधेरे पखवाड़े के रूप में भी जाना जाता है) पर मनाया जाता है. यह परम्परागत रुप से हर साल मध्य अक्तूबर या मध्य नवम्बर में दशहरा के 18 दिन बाद मनाया जाता है. यह हिन्दुओं का बहुत महत्वपूर्ण त्योहार है.

दीपावली का त्योहार हर साल बहुत सारी खुशियों के साथ आता है और पाँच दिनों से अधिक समय धनतेरस से भाई दूज पर पूरा होता है. कुछ स्थानों पर जैसे कि महाराष्ट्र में यह छह दिनों में पूरा होता है.

दीपावली क्यों मनायी जाती है : ऐतिहासिक रुप से, दीपावली भारत में बहुत प्राचीन काल से मनाया जा रहा है, जब लोग इसे मुख्य फसल के त्योहार के रुप में मनाते थे. हालांकि कुछ लोग इस विश्वास के साथ इस त्योहार को मनाते हैं कि इस दिन देवी लक्ष्मी की शादी भगवान विष्णु के साथ हुई थी. पूर्वी भारत के कई हिस्सों में इस त्योहार को माता काली (शक्ति की काली देवी) की पूजा करके मनाते हैं. देश के अधिकांश हिस्सों में इस शुभ त्योहार को बुद्धिमत्ता के देवता गणेश (हाथी के सिर वाले भगवान) और माता लक्ष्मी (धन और समृद्धि की माता) की पूजा करके मनाते हैं.

लोग दीपावली उत्सव का जगमगाते हुये दीपकों के प्रकाश, स्वादिष्ट मिठाईयों का आनंद लेकर मनाते है. यह त्योहार भारत और देश के बाहर भी वर्षों पहले से मनाया जा रहा है. दीपावली मनाने की परम्परा हमारे देश के इतिहास से भी पुरानी है. भारत में दीपावली की उत्पत्ति का इतिहास विभिन्न प्रकार की किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं को शामिल करता है जो प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों जिन्हें पुराण भी कहते है में वर्णित है. दीपावली की ऐतिहासिक उत्पत्ति के पीछे का वास्तविक कारण पहचानना बहुत आसान नहीं है. प्राचीन इतिहास के अनुसार, दीपावली की ऐतिहासिक उत्पत्ति के बहुत से कारण हैं. उनमें से कुछ पौराणिक और ऐतिहासिक कारण निम्नलिखित हैं.

भगवान राम की विजय और आगमन : हिन्दू महाकाव्य रामायण के अनुसार, भगवान राम राक्षस राजा रावण को मारकर और उसके राज्य लंका को जीतकर अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अपने राज्य अयोध्या बहुत लम्बे समय (14 वर्ष) के बाद वापस आये

थे. अयोध्या के लोग अपने सबसे प्रिय और दयालु राजा राम, उनकी पत्नी और भाई लक्ष्मण के आने से बहुत खुश थे. उनके आने की खुशी में अयोध्या के निवासियों ने दीपावली अपने घर और पूरे राज्य को सजाकर, मिट्टी से बने दिये और पटाखे जलाकर मनाई थी. तब से लेकर आज तक हमारे देश में इस त्योहार को हर वर्ष मनाया जाता है.

लक्ष्मी मां का जन्मदिन: देवी लक्ष्मी धन और समृद्धि की स्वामिनी है. यह माना जाता है कि राक्षस और देवताओं द्वारा समुद्र मंथन के समय देवी लक्ष्मी दूध के समुद्र (क्षीर सागर) से कार्तिक महीने की अमावस्या को ब्रह्माण्ड में आयी थी. यही कारण है कि इस दिन को माता लक्ष्मी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में दीपावली के त्योहार के रूप में मनाना शुरू कर दिया. कहा जाता है कि हर साल दीपावली के समय लक्ष्मी माँ की शादी का जश्न हर कोई अपने घरों को रोशन करके मनाता है.

भगवान विष्णु ने लक्ष्मी को बचाया : हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक महान दानव राजा बाली था, जो सभी तीनों लोक (पृथ्वी, आकाश और पाताल) का मालिक बनना चाहता था, उसे भगवान विष्णु से असीमित शक्तियों का वरदान प्राप्त था. पूरे विश्व में केवल गरीबी थी क्योंकि पृथ्वी का सम्पूर्ण धन राजा बाली द्वारा रोका हुआ था. भगवान के बनाये ब्रह्मांण्ड के नियम जारी रखने के लिए भगवान विष्णु ने सभी तीनों लोकों को बचाया था (अपने वामन अवतार, 5वें अवतार में) और देवी लक्ष्मी को उसकी जेल से छुड़ाया था. तब से, यह दिन बुराई की सत्ता पर भगवान की जीत और धन की देवी को बचाने के रूप में मनाया जाना शुरू किया गया.

भगवान कृष्ण ने नरकासुर को मार डाला : मुख्य दीपावली से एक दिन पहले का दिन नरक चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है. बहुत समय पहले, नरकासुर नाम का राक्षस राजा प्रदोषपुरम में राज्य करता था. वह लोगों पर अत्याचार करता था और उसने अपनी जेल में 16000 औरतों को बंदी बना रखा था. भगवान कृष्ण (भगवान विष्णु के 8वें अवतार) ने उसकी हत्या करके नरकासुर की हिरासत से उन सभी महिलाओं की जान बचाई थी. उस दिन से यह बुराई पर सत्य की विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है.

राज्य में पांडवों की वापसी : महान हिंदू महाकाव्य महाभारत के अनुसार, निष्कासन के लम्बे समय (12 वर्ष) के बाद कार्तिक महीने की अमावस्या को पांडव अपने राज्य लौटे थे. कौरवों से जुए में हारने के बाद उन्हें 12 वर्ष के लिये निष्कासित कर दिया गया था. पांडवों के राज्य के लोग पांडवों के राज्य में आने के लिए बहुत खुश थे और मिट्टी के दीपक जलाकर और पटाखे जलाकर पांडवों के लौटने का दिन मनाना शुरू कर दिया.

पांडवों का वनवास हुआ था पूरा : महाभारत के अनुसार कार्तिक अमावस्या के दिन ही पांडवों का वनवास पूरा हुआ था और इनका बारह साल का वनवास पूरा होने की खुशी में इनसे प्रेम करने वाले लोगों ने अपने घरों में दीये जलाए थे.

विक्रमादित्य का राज तिलक हुआ था : हमारे देश के महाराजा विक्रमादित्य जिन्होंने दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य पर राज किया था, उनका राज तिलक भी इसी दिन किया गया था.

फसलों का त्योहार : खरीफ फसल के समय ही ये त्योहार आता है और किसानों के लिए ये त्योहार समृद्धि का संकेत होता है और इस त्योहार को किसान उत्साह के साथ मनाते हैं.

जैन धर्म के लोगों के लिए विशेष दिन : जैन धर्म में पूजनीय और संस्थापक ने दीपावली के दिवस पर ही निर्वाण प्राप्त किया था. इसलिए जैन धर्म में भी यह दिवस महत्वपूर्ण है.

सिख समुदाय के लिए विशेष दिन : इस दिन को सिख धर्म के गुरु अमर दास ने रेड-लेटर डे के रूप में संस्थागत किया था, जिसके बाद से सभी सिख इस दिन अपने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं. सन् 1577 ई. में दीपावली के दिन ही अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की आधारशिला भी रखी गई थी.

हिंदू नव वर्ष का दिन : दीपावली के साथ ही हिंदू व्यवसायियों का नया वर्ष शुरू हो जाता है और व्यवसायी इस दिन अपने खातों की नई किताबें शुरू करते हैं और नए साल को शुरू करने के पहले अपने सभी ऋणों का भुगतान करते हैं.

दीपावली कैसे मनायी जाती है : दीपावली का त्योहार तो हम हर वर्ष कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनाते हैं लेकिन इसकी तैयारियां बहुत पहले से ही शुरू हो जाती हैं. दीपावली एक ऐसा त्योहार है जिसे पूरे देश में मुख्य रूप से मनाया जाता हैं तथा इसमें हर पंथ, संप्रदाय के लोग भाग लेते हैं. इस दिन माँ लक्ष्मी की पूजा की जाती है, इसलिए सभी लोग अपने घर को अच्छे से साफ़ कर दुल्हन की तरह सजाते हैं और घर के अन्दर-बाहर हर जगहों को दीपों से सजा देते हैं. घर में विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ बनायीं जाती हैं. घर के सभी लोग नए-नए कपड़े पहनते हैं और अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को तोहफे भेंट करते हैं. दीपावली की रात अमावस्या की रात होती है इसलिए इस रात को सभी लोग अपने घर के बाहर दीप जलाते हैं ताकि उस दीप की रोशनी से पूरी दुनिया में प्रकाश फैले और अंधकार मिट जाये. यह त्योहार पांच दिनों तक मनाया जाता है. धनतेरस से भाई दूज तक यह त्योहार चलता है. धनतेरस के दिन व्यापारी अपने नए बहीखाते बनाते हैं. अगले दिन नरक चौदस के दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करना अच्छा माना जाता है. अमावस्या यानी कि दीपावली का मुख्य दिन, इस दिन लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है. खील-बताशे का प्रसाद चढ़ाया जाता है. नए कपड़े पहने जाते हैं. फुलझड़ी, पटाखे छोड़े जाते हैं. दुकानों, बाजारों और घरों की सजावट दर्शनीय रहती है. अगला दिन परस्पर भेंट का दिन होता है. एक-दूसरे के गले लगकर दीपावली की शुभकामनाएं दी जाती हैं. लोग छोटे-बड़े, अमीर-गरीब का भेद भूलकर आपस में मिल-जुलकर यह त्योहार मनाते हैं.

दीपावली का त्योहार सभी के जीवन को खुशी प्रदान करता है. जीवन जीने का उत्साह प्रदान करता है. कुछ लोग इस दिन जुआ खेलते हैं जो घर एवं समाज के लिए बड़ी बुरी बात है. हमें इस बुराई से बचना चाहिए. पटाखे सावधानीपूर्वक छोड़ने चाहिए. इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि हमारे किसी भी कार्य एवं व्यवहार से किसी को दुख न पहुंचे, तभी दीपावली का त्योहार मनाना सार्थक होगा.

- प्राची गोयल
क्षे.म.प्र.का., अहमदाबाद

विभिन्न क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय / क्षेत्रीय कार्यालय / स्टाफ महाविद्यालय / प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित हिंदी दिवस समारोह

क्षे.म.प्र.का. दिल्ली एवं क्षे.का. दिल्ली (दक्षिण)

क्षे.म.प्र.का. अहमदाबाद, क्षे.का. अहमदाबाद एवं क्षे.का. गांधीनगर

क्षे.म.प्र.का. बेंगलूरु एवं क्षे.का. बेंगलूरु (दक्षिण)

क्षे.म.प्र.का. मंगलूरु एवं क्षे.का. मंगलूरु

क्षे.म.प्र.का. भोपाल एवं क्षे. का. भोपाल (सेंट्रल)

क्षे.म.प्र.का. रांची एवं क्षे.का. रांची

क्षे.म.प्र.का. वाराणसी एवं क्षे.का. वाराणसी

क्षे.म.प्र.का. भुवनेश्वर, क्षे.का. भुवनेश्वर एवं क्षे.का. कटक

स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु

स्टा.प्र.कें. भुवनेश्वर

क्षे.म.प्र.का. कोलकाता एवं क्षे.का. कोलकाता मेट्रो

क्षे.म.प्र.का. हैदराबाद एवं शहर स्थित सभी कार्यालय

क्षे.म.प्र.का. विशाखपट्टनम एवं क्षे.का. विशाखपट्टनम

क्षे.म.प्र.का. विजयवाड़ा

क्षे.म.प्र.का. पुणे

क्षे.का. बेंगलूरु (उत्तर)

क्षे.का. दुर्गापुर

क्षे.का. हुबली

क्षे.का. नेल्लूर

क्षे.का. बेलगावी

क्षे.का. चेन्नै (पश्चिम)

क्षे.का. शिवमोग्गा

क्षे.का. तिरुचिरापल्ली

क्षे.का. एर्णाकुलम

क्षे.का. कोट्टयम

क्षे.का. आणंद

क्षे.का. ओंगोल

क्षे.का. अमरावती

क्षे.का. कोषिकोड़

क्षे.का. भोपाल (दक्षिण)

क्षे.का. राजकोट एवं जूनागढ़

क्षे.का. शिमला

क्षे.का. संबलपुर

क्षे.का. पटना

क्षे.का. बठिंडा

क्षे.का. धनबाद

क्षे.का. समस्तीपुर

क्षे.का. दिल्ली (एनसीआर)

क्षे.का. सेलम

क्षे.का. नासिक

क्षे.का. आगरा

क्षे.का. प्रयागराज

क्षे.का. कानपुर

क्षे.का. मऊ

क्षे.का. अमृतसर

क्षे.का. हावड़ा

क्षे.का. करनाल

क्षे.का. रीवा

क्षे.का. गाजीपुर

क्षे.का. बिलासपुर

क्षे.का. मदुरै

क्षे.का. भागलपुर

क्षे.का. नागपुर,

क्षे.का. रायपुर

नई दीपावली

इस बार दीवाली के त्योहार पर मैंने पूरे पंद्रह दिनों का अवकाश स्वीकृत करवाया था और अपनी पत्नी नेहा के साथ पहली बार अपने घर जा रहा था. दो दिन तक हमने पूरे घर के लिये ख़ूब शॉपिंग की थी जिसे ट्रॉली बैग्स में संभालना अब मेरे ही ज़िम्मे था.

रेलवे प्लेटफॉर्म पर जितना शोर भीड़ का नहीं था उससे कहीं अधिक रेलवे की उद्घोषणाओं का था. हमारी ट्रेन एक घंटा देर से चल रही थी. सुबह जल्दी उठने के कारण नेहा की नींद पूरी नहीं हुई थी सो वह बैठे-बैठे ही ऊँघ रही थी. उसके मासूम चेहरे को देख कर मेरे मन मस्तिष्क में दो वर्ष पूर्व दीवाली के उदास मंज़र नाचने लगे. मुझे याद आया कि,,,,,

मैं उन दिनों अपने कस्बे सोनपुर से नब्बे किलोमीटर दूर शहर में एलआईसी में बतौर अधिकारी नियुक्त हुआ था और प्राय: प्रत्येक शनिवार को बस से सोनपुर आ जाया करता था. मेरे पिता शिवदयाल सिंह ठाकुर सोनपुर के प्रतिष्ठित और रसूखदार किसान थे. बड़ी बहन के विवाहोपरांत घर में माता-पिता के अलावा छोटी बहन गायत्री थी जो मुझसे दो वर्ष छोटी थी. हाल ही में मेरे विवाह के लिये प्रीतमपुर से नेहा का रिश्ता आया था और हम लोगों ने पहली मुलाकात में नेहा को पसंद कर लिया था. मैं हर हफ़्ते जब सोनपुर पहुँचता, मेरी बहन गायत्री और हमारे पड़ोसी विश्वेश्वर बाबू की बहू गरिमा मुझे नेहा का नाम ले ले कर ख़ूब छेड़तीं.

गरिमा भाभी विश्वेश्वर बाबू के इकलौते पुत्र सुजीत की पत्नी थीं. हाँलाकि वो लगभग पच्चीस वर्ष की थीं और गायत्री बीस की फिर भी दोनों की आपस में ख़ूब बनती थी.

अरे पंकज, बड़े खोये-खोये से लग रहे हो क्या नेहा की चिट्ठी आई है? गरिमा भाभी ने मुझे छेड़ते हुए कहा. बस इतना कह कर वो गायत्री के साथ ठहाका लगा कर हँस पड़ीं. मुस्कुराता हुआ मैं झेंप कर रह गया.

पहली मुलाकात में नेहा से यों तो मेरी कोई बात नहीं हुई थी मगर उसकी सादगी और गंभीरता से मैं बहुत प्रभावित हुआ था. विवाह की सहमति का अब जवाब मेरे पिताजी को देना था, मगर उन्हें तो जैसे कोई जल्दी नहीं थी. कस्बे में नवरात्र की धूम थी. दशहरा सिर पर था घर में साफ-सफाई रँगाई-पुताई जैसे अभियान छिड़ गए थे.

अचानक रेलवे एनाउंसमेंट ने मेरी तन्द्रा भंग की. हमारी ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आने वाली थी. मैंने नेहा को नींद से जगाया और थोड़ी ही देर में हमने ट्रेन में अपनी रिज़र्व सीटें सँभाल लीं.

ऊपर की बर्थ पे नेहा को जल्दी ही नींद आ गई और मैं नीचे वाली बर्थ पर लगभग पसर गया और फिर उन्हीं यादों में खो गया.

सब कुछ ठीक चल रहा था

मगर यहीं से आरंभ हुआ ज़िंदगी का एक नया मोड़.

मंगलवार को मैं अपने ऑफिस में बैठा था तभी मेरी निजी डाक आई जो प्रीतमपुर से थी. यह नेहा की चिट्ठी थी जिसे देखकर मैं बेहद उत्साहित हो गया. तुरंत खोल कर पढ़े बिना रहा नहीं गया. मगर पढ़ते ही मन पर जो वज्रपात हुआ वो अवर्णनीय था. पत्र छोटा और कुछ यूँ था -

प्रिय पंकज जी,

मैं असमंजस में हूँ कि क्या लिखूँ मगर मैं जानती हूँ कि आप समझदार और विवेक के धनी व्यक्ति हैं. हाँलाकि आपकी या आपकी तरफ़ से विवाह संबंधी फ़िलहाल कोई जवाब नहीं आया है मगर इससे पहले कि कोई रज़ामन्दी बने, मैं आपको यह बताना चाहती हूँ कि मैं आपसे विवाह करने में असमर्थ हूँ क्योंकि मैं किसी और से प्रेम करती हूँ और उससे विवाह करना चाहती हूँ . मेरे पास कोई अन्य विकल्प नहीं है अत: आप ही इस विवाह से इनकार कर दें तो मुझ पर आपकी बहुत कृपा होगी. मैं आपकी सदैव ऋणी रहूँगी.

आपकी मित्रता की आकांक्षी

नेहा सिंह

पत्र पढ़ते ही मेरे हाथ काँपने लगे, मैं कल्पनालोक के गगन से मानो यथार्थ के कठोर धरातल पर आ गिरा था. मेरे स्वप्न चंद पंक्तियों ने चूर कर दिये थे.मेरे भीतर भावनाओं का एक सैलाब सा उमड़ पड़ा था. ऐसा प्रतीत होता था मानो मस्तिष्क में सैंकड़ों घण्टे एक साथ बजाए जा रहे हों. मैंने स्वयं को कुछ स्थिर किया और पत्र मोड़कर जेब के हवाले किया.

मैं मैनेजर के केबिन में रखे टेलीफ़ोन से घर के लैंडलाइन नम्बर को डायल करने का सोच कर भारी मन से उठा ही था कि मैनेजर साहब की आवाज़ आई -

पंकज जी, आपके घर से फोन है !

मैं लपक कर उनके केबिन में गया और टेबल पर रखे रिसीवर को कान से लगा कर बोला - हैलो !.....

भैया बड़ी बुरी ख़बर है ..... गायत्री की लगभग रोती हुई आवाज़ से मैं घबरा गया.

भैया, सुजीत भैया का एक्सीडेंट हो गया और अस्पताल से ख़बर आई कि वो नहीं रहे.

मैं अवाक रह गया थोड़ी ही देर में मैं सोनपुर की बस में बैठा था.

गरिमा भाभी के साथ काल ने क्रूर मज़ाक़ किया था.मैं अपनी पीड़ा पूरी तरह भूल गया बल्कि इस विपदा के समक्ष मेरा दु:ख कुछ था ही नहीं.

गरिमा भाभी की वो चुलबुली हरकतें वो अपनापन मेरे सामने घूम रहे थे. दो-ढाई वर्ष पूर्व ही तो सुजीत भैया से उनका विवाह हुआ था. इस दीपावली पर उनके मन में बहुत उत्साह था.

मेरी ज़िंदगी में एक ही दिन में दो ऐसी हृदयविदारक घटनाएँ कभी नहीं घटी थीं.

यहाँ समय ही नरकासुर बन के ख़ुशियों का हरण कर रहा था.

समय धीरे-धीरे हर ज़ख्म भरता है मगर गरिमा भाभी की मुसीबतों का तो जैसे पारावार ही न था.

आए दिन सास के ताने अब उनका जीना दुश्वार किये दे रहे थे. इसके पीछे दो कारण थे एक तो उनकी सास शायद अपने तीस वर्षीय बेटे की अचानक मौत के सदमे से उबर नहीं पा रही थी और दूसरा, शादी के दो वर्षों बाद एक भी संतान का न होना,और अब तो खानदान का आख़िरी चराग़ भी बुझ गया था. सुजीत के बाद अब विश्वेश्वर बाबू के खानदान का कोई नामलेवा नहीं था.

हमारे परिवार से भी उनका यह दु:ख देखा नहीं जाता था गायत्री अब कभी-कभार गरिमा भाभी से मिलने चली जाती या उन्हें अपने घर ले आती.

पच्चीस-छब्बीस वर्ष की आयु और सामने सारी ज़िंदगी. इधर नेहा के इनकार वाली बात मैंने गायत्री के अलावा किसी से नहीं कही.

उधर सास और दोनों ननदों के ताने अब पहले की अपेक्षा अधिक तेज़ हो गए थे जो अब अत्याचार की श्रेणी में रखे जा सकते थे, लेकिन गरिमा भाभी की चुप्पी के कारण उन्हें तानों और फब्तियों के साथ-साथ अब शारीरिक प्रताड़ना भी झेलनी पड़ रही थी.उनके शरीर पर चोट के निशान इसकी गवाही देते थे कि उनके साथ मारपीट भी होती है.

मैं चूँकि गरिमा भाभी से उम्र में छोटा था अत: उन्हें बहुत अधिक सुझाव तो नहीं दे सकता था मगर उन्हें मैंने प्रताड़ना की शिकायत दर्ज कराने की विनती की. साथ ही उन्हें अपने मायके चले जाने का आग्रह भी किया. किंतु उनकी माताजी तो स्वयं पिताजी की पेंशन पर आश्रित थीं अत: भाभी अपनी माँ का आर्थिक एवं मानसिक बोझ नहीं बढ़ाना चाहती थीं.

इस खंडित हो चुकी दीपावली के बाद एक सुखद ख़बर मिली कि विश्वेश्वर बाबू ने अपनी बहू का पुनर्विवाह करने का निश्चय किया है. यह सुन कर मेरा मन उनके प्रति श्रद्धा से भर उठा. वो चाहते तो जीवन भर उन्हें एक मुफ़्त की नौकरानी की तरह इस्तेमाल कर सकते थे.

इसी बीच मेरा तबादला ऐसी जगह हो गया जहाँ से सोनपुर लगभग दो सौ किलोमीटर था अत: अब मेरा हर हफ़्ते सोनपुर आना भी सम्भव नहीं हो पाता था.

मगर इस बार जब मैं सोनपुर आया तो पता चला कि गरिमा भाभी की शादी करवाने के पीछे विश्वेश्वर बाबू के परिवार की सोची समझी रणनीति है. उन्हें किसी ने बताया था कि बहू के विवाह के बाद उसका आपकी प्रॉपर्टी पर कोई हक़ नहीं रहेगा और सारी संपत्ति दो बहनों में बँट जाएगी अन्यथा उसके तीन हिस्से होंगे.

मेरे लिये यह एक ख़बर ज़रूर थी मगर यह क्या कम था कि भाभी की ज़िंदगी फिर से पटरी पर आ जाएगी.

मगर मेरी यह संतुष्टि भी अधिक देर की मेहमान न रह सकी गायत्री ने मुझे यह बताया कि गरिमा भाभी को एक पचास के पेटे की उम्र के विधुर से ब्याहा जा रहा है और भाभी ने इस विवाह के लिये अपनी स्वीकृति भी दे दी है. इस सूचना ने मेरे तन-बदन में मानो आग लगा दी. मगर अब क्या हो सकता था.

रविवार का दिन था मैंने घर आई गरिमा भाभी से पूछा - भाभी, क्या यह सच है कि किसी प्रौढ़ विधुर से विवाह करने की आपने सहमति दी है?

मेरे इस अचानक किये गए प्रश्न से वो कुछ विचलित हुईं मगर ख़ुद को संभालते हुए बोली - हाँ, वो अच्छे व्यक्ति हैं,धनी हैं.

बस इसीलिये ?

हाँ, और क्या ! उनका एक बेटा विदेश में है और दूसरा कलकत्ता में जो उनकी सुध नहीं लेता. मुझे यहाँ से बेहतर जीवन वहाँ मिलेगा इस बात की तसल्ली है पंकज.

सचमुच भाभी ? मेरी तरफ देख कर यही बात फिर कहिए ज़रा.

उन्होंने उदास चेहरे पर बरबस मुस्कान लाकर मेरी ओर देख कर कहा-

पंकज, अब बात पसंद नापसंद की नहीं है जब तक सुजीत जीवित थे इस घर की बात और थी मगर एक विधवा के रूप में मुझे अपनी उमंगों को तिलांजलि देनी ही पड़ेगी. गायत्री अब आकर बाजू में ही खड़ी थी. उसने भी भाभी की इस बात पर असहमति जताई और बोली-

भाभी, तुम्हारी और उन सज्जन की उम्र में पच्चीस साल का फ़र्क़ है. इस विवाह से बेहतर है कि तुम कोई नौकरी कर लो और अपनी माँ के साथ रहो.

भाभी को जैसे यह बात नागवार गुज़री.

फिर भी मैंने हिम्मत बटोर कर कहा - भाभी तुम उससे शादी मत करो प्लीज़.

भाभी एक पल के लिये ठिठकी मगर अगले ही पल तेज़क़दमी करती हुई फाटक खोल के निकल गईं.

एक सप्ताह गुज़र गया.

मैंने विश्वेश्वर बाबू से सीधे ही बात करने का निश्चय किया और बग़ैर किसी से कुछ कहे सीधे उनसे मिलने जा पहुँचा.

आओ आओ पंकज कब आए ? उन्होंने भीतर आने का इशारा करते हुए पूछा.

बस आज ही आया बाबूजी. आजकल हर शनिवार आना नहीं हो पाता है क्योंकि मेरा तबादला दूसरी जगह हो गया है. आप सुनाएँ कैसा चल रहा है, मैंने औपचारिक सवाल किया.

बस बेटा, इस वर्ष सितंबर में रिटायरमेंट है. सुजीत था तो एक सहारा था, अब बच्चियाँ गाहे बगाहे आ जाती हैं हाल चाल लेने.

मुझे मौक़ा मिल गया मैंने तुरंत गरिमा भाभी के विवाह के विषय में अपनी बात रखीं और नए दूल्हे की उम्र के विषय में प्रश्न किया, जिससे उनके संवाद में कुछ झुँझलाहट और तल्ख़ी आ गई थी.

तो अब क्या कोई जवान आदमी तलाश करते बैठेंगे?- वो बोले.

छोटा मुँह बड़ी बात बाबूजी, मगर यह तो भाभी की उम्र के साथ अन्याय है.आपकी भी बेटियाँ हैं ईश्वर न करे यह स्थिति उनके साथ हुई होती तो भी क्या आपका फ़ैसला यही होता?

मेरे इस प्रश्न पर वो तमतमा कर ख़ामोश रह गए मगर,,,, कमरे में काकी चाय लाती हुई बोली -

समाज में कोई ऐसी कुलच्छिनी से शादी करना नहीं चाहता जो दो साल में अपने पति को खा गई हो, अरे,,,, अपन मानते हैं कि बहू की इसमें कोई ग़लती नहीं मगर समाज का मुँह कौन दाबे? हमारे ज़माने में तो विधवा को अकेले अपना जीवन काटना पड़ता था हम तो फिर भी उसका भला सोच रहे हैं.

मुझे दोनों की बातों से यह एहसास हो गया कि गायत्री भाभी से इन्हें अब कुछ लेना-देना नहीं है

कप मेज पर रखने के लिए कुर्सी से उठता हुआ बोला - फिर भी आप मेरी बात पर विचार कीजियेगा.

घर लौट कर मैंने सारी बात गायत्री से कही. सब सुनने के बाद गायत्री ने मुझसे सीधा प्रश्न किया- भैया, क्या तुम गरिमा भाभी से शादी के लिये तैयार हो सकते हो?

अब चौंकने की बारी मेरी थी, मगर गायत्री का यह प्रश्न मेरे अंतर्मन में अजीब सी गुदगुदी करने लगा.

तू ये कैसी बात कर रही है ?

गायत्री बोली, मैंने परसों ही भाभी से भी यह प्रश्न किया था.

तो वो क्या बोलीं ? - मैंने बग़ैर एक पल गँवाए उत्सुकता से प्रश्न कर दिया.

उन्होंने कहा- पंकज मुझसे लगभग साढ़े तीन वर्ष छोटा है.

तो क्या यह उनकी असहमति का कारण था ? मैंने पूछा.

नहीं भैया, शायद आपका जवाब ही उन्हें किसी नतीजे पर पहुँचा सके. एक स्त्री कभी ऐसे निर्णय नहीं लेती दूसरी बात, वो अपनी पीड़ा दूसरे के सर मढ़ दे ऐसी स्वार्थी भी नहीं हो सकती.

मैं मैं मैं,,,, तो तैयार हूँ गायत्री. मैंने न जाने क्यों तुरंत अपनी सहमति दर्शाई.

भैया, मैंने जब नेहा के शादी से इनकार वाली बात उन्हें बताई तो वो बहुत दु:खी हो गईं. उनकी आपके प्रति हमदर्दी मैं साफ देख सकती थी. इधर आपकी भी उनके प्रति इतनी परवाह कोई बेवजह नहीं थी, आप उन्हें लेकर बहुत परेशान थे और इसीलिये मैंने आपसे यह प्रश्न करने से पहले भाभी से पूछा. मुझे बस आपकी स्वीकृति से मतलब था. और विवाह भी तो प्रेम और परवाह की नींव पर टिकता है.और प्रेम हमदर्दी से भी उपज सकता है.

मुझे पता न था कि गायत्री इतनी समझदार है. मगर जब यह बात पिताजी के कान में पड़ी उनकी ठकुराई जाग उठी. उन्होंने दो टूक कह दिया कि यह शादी नहीं होगी. और अगर यह ज़िद है तो पंकज के लिये इस घर में कोई जगह नहीं. शायद उन्हें गायत्री के विवाह के लिये भी चिंता रही होगी.

इधर अब तक चुप गरिमा भाभी की चुप्पी में गायत्री ने आख़िर सहमति खोज ली. यानी यह निर्णय एक परिणिति थी उन दो ह्रदयविदारक घटनाओं की, जिसमें कोई एहसान या स्वार्थ मायने नहीं रखता था. यह उन अनपेक्षित घटनाओं से उपजा वास्तविक प्रेम था जो सामाजिक रीतियों की बेड़ियों को तोड़ कर एक नए जीवन की तलाश में था.

मैंने भी पिताजी के विरोध के बावजूद , तैश में घर छोड़ कर गरिमा से विवाह कर लिया. अब समस्या थी कि मुझे गरिमा का नाम लेने में संकोच होता था अत: गरिमा के आग्रह पर मैंने उसका नाम ही नेहा रख दिया क्योंकि मुझे इस नए रिश्ते के लिये यह नाम अधिक सहज लग रहा था. मैं उसके साथ शहर चला आया.

अब यदा-कदा गायत्री माँ के साथ मिलने चली आती तो सोनपुर की ख़ैर-ख़बर मिल जाती. दो वर्ष हँसी-ख़ुशी बीत गए. मेरा तबादला अन्यत्र हो चुका था. अब गरिमा उर्फ नेहा प्रेग्नेंट थी, जिसकी ख़बर सुन कर पिताजी की ठकुराई भी पिघलती प्रतीत हुई. आख़िर दो साल भी हो चुके थे.

ऑफिस में अचानक फोन पर उनकी आवाज़ सुनकर मेरी आंखें भर आईं और जैसे ही उन्होंने कहा बेटा, गायत्री के लिये एक अच्छा रिश्ता आया है तू बहू को लेकर घर आ जा इस दीवाली पर. इस दीवाली को हम यादगार बनाएँगे.

यही सब सोचते विचारते मेरी आँखों से अनायास झरने फूट पड़े थे और इस वक़्त हमारी ट्रेन हमें अपने गंतव्य की ओर लिए चली जा रही थी क्योंकि अब तक हम जिसका इंतजार करते थे इस बार वही दीपावली हमारा इंतज़ार कर रही थी.

- राजकुमार कोरी 'राज़'
बैतुल शाखा, भोपाल (द.)

अर्थ, वैभव, समृद्धि का परिचायक दीपावली पर्व

दीपावली का अर्थ :-

'दीपावली' का अर्थ है दीपों की पंक्ति. दीपावली शब्द 'दीप' एवं 'आवली' की संधि से बना है. आवली अर्थात् पंक्ति, इस प्रकार दीपावली शब्द का अर्थ है, दीपों की पंक्ति.

भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्योहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्याधिक महत्व है. इसे दीपोत्सव भी कहते हैं. 'तमसो मां ज्योतिर्गमय' अर्थात् 'अंधेरे से ज्योति अर्थात् 'प्रकाश की ओर जाइए' यह उपनिषदों की आज्ञा है. इसे सिख, बौद्ध तथा जैन धर्म के लोग भी मानते हैं. माना जाता हैं कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे. अयोध्यावासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से उल्लासित था. श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीप जलाए. कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीपों की रोशनी से जगमगा उठी तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं. यह पर्व ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार अधिकतर अक्टूबर या नवंबर महीने में पड़ता है.

दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है. कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती हैं. लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई का कार्य आरंभ कर देते हैं. घरों में मरम्मत, रंग-रोगन, सफेदी आदि का कार्य होने लगता है. लोग दुकानों को भी साफ-सुथरा कर सजाते हैं. बाजारों में गलियों को भी सुनहरी झड़ियों से सजाया जाता है. दीपावली से पहले ही घर-मोहल्ले, बाज़ार सब साफ-सुथरे व सजे-धजे नज़र आते हैं. दीप जलाने की प्रथा के पीछे अलग-अलग कारण या कहानियाँ हैं. राम भक्तों के अनुसार दीपावली वाले दिन अयोध्या के राजा राम लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध करके अयोध्या लौटे थे.

'दीप जलाओ, दीप जलाओ नेक राह पर चलते जाओ
धन-समृद्धि खूब बढ़ाओ खुशियों के दीप जलाओ..

वैभव का परिचायक पर्व

दीपावली के त्योहार को मनाने के लिए लोग इस दिन के लिए नए कपड़े खरीदते हैं. बच्चे खेलने के लिए खिलौने एवं पटाखे खरीदते हैं.

दीपावली का यह त्योहार पांच दिनों के लिए चलता है जिसके पहले दिन धनतेरस होती है.

धनतेरस के दिन लोग ज़्यादा-से-ज़्यादा खरीददारी करना पसंद करते हैं. इस दिन लोग अपने घर पर कुछ-ना-कुछ बर्तन ज़रूर लेकर जाते हैं. साथ ही इस दिन लोग सोने व चांदी के आभूषण खरीदना भी पसंद करते हैं. लोगों का मानना है कि इस दिन खरीददारी करने से घर में बरकत होती है.

दीपावली का दूसरा दिन नरक चतुर्थी के रूप में मनाया जाता है क्योंकि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने राक्षस नरकासुर को मार गिराया था. कुछ लोगों द्वारा इस दिन को छोटी दीपावली के रूप में भी मनाया जाता हैं. इस दिन घर के बाहर पांच दीपक जलाए जाते हैं. प्राचीन परंपरा के अनुसार इस दिन लोग दीपक का काजल अपनी आंखों में डालते हैं. उनका मानना है कि इससे आंखे खराब नहीं होती हैं.

तीसरा दिन दीपावली त्योहार का मुख्य दिन होता है. इस दिन महालक्ष्मी की पूजा की जाती है. साथ ही विद्या की देवी मां सरस्वती और भगवान श्री गणेश की पूजा की जाती है. इस दिन घर में रंगोली बनाई जाती है और तरह-तरह की मिठाइयां बनाई जाती हैं. दीपावली के दिन सभी लोग शाम के समय मां लक्ष्मी की पूजा करते हैं. इस दिन घर को दीपक जलाकर रोशनी से जगमगा दिया जाता है. इस दिन भारत में रात के समय सबसे ज़्यादा रोशनी होती है.

दीपावली के चौथे दिन को गोवर्धन पूजा की जाती हैं क्योंकि इस दिन भगवान कृष्ण ने इंद्र के क्रोध से हुई मूसलाधार वर्षा से लोगों को बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत अपनी एक अंगुली पर उठा लिया था. इस दिन घर के बाहर महिलाएं गोबर रखकर पारंपरिक पूजा करती हैं.

दीपावली त्योहार का आखिरी दिन भाई दूज के रूप में मनाया जाता है. इस दिन बहन भाई को रक्षा सूत्र बांधती है और तिलक लगाकर

मिठाई खिलाती हैं. बदले में भाई उनकी रक्षा का वचन देते हैं और उन्हें कुछ उपहार भी देते हैं. यह दिन कुछ-कुछ रक्षाबंधन त्योहार की तरह ही होता हैं.

समृद्धि का परिचायक पर्व

दीपावली के जगमगाते पर्व पर हम सभी चाहते हैं कि मां लक्ष्मी स्थायी रूप से हमारे घर में विराजित हों. धन, धान्य, यश, सुख, समृद्धि, वैभव, कीर्ति, पराक्रम, ऐश्वर्य, सौभाग्य और सफलता से हमारा जीवन खूबसूरत बन जाए. ब्रह्म पुराण के अनुसार दीपावली पर अर्धरात्रि के समय महालक्ष्मी घरों में विचरण करती हैं. इस दिन घर को साफ-सुथरा कर संवारा और सजाया जाता हैं. दीपावली मनाने से श्री लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर स्थाई रूप से घर पर निवास करती हैं. दीपावली का त्योहार सांस्कृतिक और सामाजिक सौहार्द का प्रतीक हैं. इस त्योहार से सभी के जीवन में खुशियां आती हैं. इसी त्योहार के कारण लोगों में आज भी सामाजिक एकता बनी हुई है. दीपावली का त्योहार खुशहाली और समृद्धि का सूचक होता हैं. इस दिन धन-संपदा की देवी लक्ष्मी और शुभ कार्य की शुरुआत कराने वाले श्री गणेश का पूजन किया जाता है. लक्ष्मी, गणेश को खुश करने के लिए लोग विधि विधान से पूजा करते हैं. आभूषण, सोने के सिक्के व लक्ष्मी गणेश की मूर्तियों को लोग घर लाते हैं.

उपसंहार

दीपावली अपने अंदर के अंधकार को मिटाकर समूचे वातावरण को प्रकाशमय बनाने का त्योहार है. बच्चे अपनी इच्छानुसार बम, फुलझड़ियां तथा अन्य पटाखे खरीदते हैं और आतिशबाज़ी का आनंद उठाते हैं. हमें इस बात को समझना होगा कि दीपावली के त्योहार का अर्थ दीप, प्रेम और सुख-समृद्धि से है. इसलिए पटाखों का इस्तेमाल सावधानीपूर्वक और अपने बड़ों के सामने रहकर करना चाहिए. दीपावली का त्योहार हमें हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देता हैं. दीपावली का त्योहार सांस्कृतिक और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक हैं. हिंदी साहित्यकार गोपालदास नीरज ने भी कहा है, 'जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा कहीं पर रह न जाए.' इसलिए दीपोत्सव यानि दीपावली पर प्रेम और सौहार्द को बढ़ावा देने के प्रयत्न करने चाहिए.

सिम्पल कंवर
क्षे. का., दिल्ली (दक्षिण)

दीयों की रोशनी – अपनी भाषा

अंधकार को दूर करने के लिए हम दीये जलाते हैं. इन दीयों की मद्धम-मद्धम जलती रोशनी से समस्त वातावरण प्रकाशमय हो उठता है. दीयों की रोशनी केवल किसी जगह पर रोशनी फैलाती है या जीवन में भी रोशनी फैलाती है यह उस व्यक्ति या परिवार पर निर्भर करता है जिसके यहां दीया जल रहा है. गरीब परिवार जिसके पास घर नहीं है, जो झोपड़ी में रहता है, उसके लिए दिन में उजाला सूरज की रोशनी से होता है तो 'रात का सूरज' दिखता है 'दीया'.

उस बूढ़े मां-बाप से पूछो जिसके बच्चे परदेश में रहते हैं, उनके लिए दीये तब रोशनी देते हैं जब उनके बच्चे उनसे मिलने आते हैं. उनकी दीपावली उसी दिन होती है जब उनके बच्चे उनके साथ होते हैं.

छोटे बच्चे से पूछो तो भोला प्यारा मन हर दिन दीयों की रोशनी में दिवाली देखता है. कोई भी अवसर हो, यदि घर में दीये जले हैं तो दीपावली है. जब कोई विद्यार्थी कठिन परिश्रम करके कोई परीक्षा उत्तीर्ण होता है तो उसके लिए दीयों की रोशनी दीपावली की खुशी देती है. दीयों की जगमगाती रोशनी उसके महीनों के, वर्षों के परिश्रम को दर्शाती है. जब कोई खिलाड़ी काफी ज्यादा मेहनत करके ओलंपिक में पदक जीतता है तो उसके घर में, उसके प्रशंसकों के घर में जो दीये जलते हैं वह उसके अथक मेहनत के परिणाम को दर्शाते हैं. जो मेहनत उसने वर्षों तक दिन-रात की, आज उसका परिणाम इन दीयों की रोशनी में दिख रहा है.

जब कोई जवान युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो जाता है तो उसकी याद में जलने वाले दीयों की रोशनी उसकी वीरता का गुणगान करती है. यह रोशनी उन्हें सदा-सदा के लिए अमर कर देती है. जब कोई अपना किसी दुर्घटना या बीमारी जैसे कोरोना वायरस प्राकृतिक आपदा के कारण असमय हमसे सदा के लिए दूर चला जाता है तो उसकी याद में जलने वाले दीयों की रोशनी हमारी आंखों को नम कर देती है. अंततः दीपावली के दीये जो हमें हर वर्ष अपनों के साथ अपनी खुशियों की डोर में बांधे रखते हैं हमें भारतीय होने का गौरव प्रदान करते हैं. दीपावली के दीयों की रोशनी केवल एक त्योहार ही नहीं बल्कि एक परंपरा, अपनापन एवं भाईचारे की सूचक है.

दीये की रोशनी तो एक सी रहती है किंतु इनकी भाषा विशाल है और मानव जीवन के सभी भावों को समाहित किए हुए है.

राजेश कुमार
वसूली विभाग, के. का.,

दीपावली का 'दर्शन'

प्राचीन भारत में दीपावली को फसल कटाई के प्रतीक में मनाया जाता था. दीपक का उल्लेख स्कंद किशोर पुराण में सूर्य के प्रतीक के रूप में किया गया है, जो सभी जीवन के लिए प्रकाश और ऊर्जा देनेवाली ब्रह्मांडीय शक्ति का रूप है. दीपावली रोशनी, खुशी का त्योहार है, जिसे सभी मिल-जुलकर मनाते हैं. भारत असंख्य दीयों की भूमि में बदल जाता जो हर धर्म, हर घर और हर दिल को जोड़ता है. हमारा जीवन भी दीये जैसा है. ज्ञान का दीया जलाकर अपने भीतर जो ज्योति है उसे जानकर सिद्धता प्राप्त होती है. धार्मिक संस्कृति की ताकत दीपावली जैसे त्योहारों और निस्वार्थ सेवा के माध्यम से पौराणिक कहानियों और महाकाव्यों को जीवंत करती हैं. दीपावली त्योहार वेदों एवं प्राचीन हिंदू शास्त्रों के गहरे दार्शनिक सत्यों को सामने लाता हैं. दीपावली अक्सर हिंदू धर्म और अन्य धार्मिक संस्कृतियों के सामान्य वैदिक सिद्धांतों को व्यक्त करती है, जिससे वे जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों के लिए लाभदायक हो जाते हैं.

दीपावली एक जीवन की रेखा बनाती है जो हिंदू और अन्य धार्मिक संस्कृतियों को परिवार, समुदाय और भारत से जोड़ती है. दीपावली लोगों को आपस में जोड़कर भाई-चारा बढ़ाती है और सबको साथ लाती है. दीपावली विविधता में भी सामंजस्य बनाए रखती है. मानव जीवन में आनंद और शांति शाश्वत है. हिंदू दृष्टिकोण में, खुशी (आनंद) की खोज के लिए आत्मा, मन और शरीर के एकीकरण को महत्व दिया जाता है.

दीपावली आध्यात्मिकता, धर्म, दर्शन, संस्कृति, सेवा और सामाजिक मूल्यों का एक आनंदमय संयोग और अभिव्यक्ति है. आनंद और खुशी आध्यात्मिकता का सहज भाव है. अच्छाई और बुराई के संघर्ष में अच्छाई की जीत होती है. यह दीपावली का दार्शनिक पहलू है. जीत दीपावली के रूप मे मनाई जाती है.

सभी भारतीय परंपराओं के लोगों को एक साथ लाने में (जैसे हिंदू, जैन, सिख, बौद्ध और अन्य) दीपावली के विभिन्न पहलुओं का महत्व हैं. हिंदुओं के लिए, सार्वभौमिक रूप से दीपावली उत्सव बुराई (रावण, नरकासुर, आदि) पर अच्छाई (भगवान राम या भगवान कृष्ण) की विजय है.

वसुबारस, गोवत्स द्वादशी, नंदिनी व्रत : वसुबारस गाय की पूजा के लिए समर्पित दीपावली का पहला दिन है. समुद्र मंथन के समय पांच कामधेनु उत्पन्न हुए थे, जिनमें से यह व्रत नन्द नाम के धेनु को संबोधित है. हालाँकि, यह त्योहार सबसे प्रमुख रूप से महाराष्ट्र राज्य में मनाया जाता है जहाँ यह गायों और गाय के वत्स (बछड़ों) के सम्मान से जुड़ा है.

हिंदू पौराणिक कथाओं में, गायों को पवित्र और भगवान का अवतार माना जाता है. भारतीय संस्कृति में गायों का बहुत महत्व है. उन्हें गोमाता भी कहा जाता है. गोमाता सात्विक हैं, इसलिए कहा जाता है कि इस पूजा के माध्यम से सभी को उनके सात्विक गुणों को स्वीकार करना चाहिए. गोमाता सत्त्वगुणी हैं, जो अपने गोबर से खाद देकर खेती के लिए उपयुक्त होती हैं, जो कृषि के लिए उपयोगी बैलों को जन्म देती हैं. कहा जाता है कि जहां गाय की रक्षा, पालन-पोषण और सम्मान होता है वहां व्यक्ति, समाज, राष्ट्र समृद्धि के बिना नहीं रहता. इस दिन कई जन्मों की मनोकामना पूरी करने के लिए दीपोत्सव की शुरुआत सबसे पहले गाय के साथ गाय के बछड़े की पूजा के साथ होती है.

धनतेरस, धनत्रयोदशी, यम दीपम :

यह दिन स्वास्थ्य और चिकित्सा के देवता, आयुर्वेद के प्रतीक भगवान धन्वंतरि को भी दर्शाता है. कुछ समुदाय, विशेष रूप से जो आयुर्वेदिक और स्वास्थ्य संबंधी व्यवसायों में सक्रिय हैं, धनतेरस पर भगवान धन्वंतरि की प्रार्थना या हवन, अनुष्ठान करते हैं. भगवान धन्वंतरि से स्वास्थ्य और सेहतमंद रखने हेतु प्रार्थना करते है.

धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है. इसके पीछे यह कारण माना जाता है कि यह चंद्रमा का प्रतीक है जो शीतलता प्रदान करता है. संतोष को सबसे बड़ा धन कहा गया है. जिसके पास संतोष है वह स्वस्थ है, सुखी है, और वही सबसे धनवान है.

यम दीपम् में ऐसा माना जाता है कि जो प्राणी धनतेरस की शाम यम के नाम पर दक्षिण दिशा में दीया जलाकर रखता है उसकी अकाल मुत्यु नहीं होती है. यह मृत्यु के देवता यमराज को प्रसन्न करता है और अकाल मृत्यु को रोकता है.

नरक चतुर्दशी, काली चौदस, छोटी दिवाली, हनुमान पूजा, रूप चौदस:

ऐसी मान्यता है कि भगवान कृष्ण ने नरकासुर राक्षस का वध किया था. शास्त्रों के अनुसार, नरकासुर राक्षस ने 16 हजार कन्याओं को बंधक बनाया था और भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध कर उन सभी कन्याओं को राक्षस से मुक्त कराया था. नरक चतुर्दशी को मुक्ति पाने वाला पर्व कहा जाता है. कुछ हिंदुओं के लिए, यह पितरों, या अपने पूर्वजों की अपवित्र आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करने का दिन है और पुनर्जन्म में उनकी यात्रा के लिए उनका मार्ग प्रशस्त करता है. किसी भी आत्मा को 'नरक', या नरक की पीड़ा से मुक्ति मिल जाती है, साथ-ही-साथ आध्यात्मिक मंगलता की याद दिलाती है.

यह दिन कुछ उत्तर भारतीय क्षेत्र में रूप चौदस के रूप में भी मनाया जाता है, जहां महिलाएं सूर्योदय से पहले स्नान करती हैं, स्नान क्षेत्र में एक दीया (दीपक) जलाती हैं, उनका मानना है कि यह उनकी सुंदरता को बढ़ाने में मदद करता है.

भारत के कुछ हिस्सों में विशेष रूप से गुजरात में हनुमान पूजा की जाती है. काली चौदस का दिन बंगाल में माँ काली के जन्मदिन के

रूप मे भी मनाया जाता है. काली माँ के आशीर्वाद से शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफलता मिलती है तथा सांसारिक कष्ट दूर हो जाते हैं. ऐसा माना जाता है कि काली चौदस की रात को आत्माएं घूमती हैं और हनुमान, जो शक्ति और सुरक्षा की देवता हैं, उनकी पूजा से मनुष्य के जीवन से सभी अंधकार दूर होने लगते हैं. हनुमानजी की भक्ति लोगों को दुख और संकट से बचाने मे सक्षम मानी जाती है. चौदह वर्ष के वनवास को पूरा करने के बाद प्रभु श्रीराम की अयोध्या वापसी की खुशी में भी दिवाली मनाई जाती है.

लक्ष्मी पूजन, काली पूजा:

लक्ष्मी पूजन से घर पर धन और सुख-समृद्धि आती है. देवी लक्ष्मी का आशीर्वाद हमें हमारे सांसारिक और आध्यात्मिक पहलुओं कों फिर से शुरू करने की प्रेरणा देता है. लक्ष्मी पूजा यह कृतज्ञता की प्रार्थना है जो सभी लोगों द्वारा भविष्य की समृद्धि के लिए की जाती है. इस दिन बंगाली हिंदू समुदाय शक्ति की देवी काली की पूजा करते हैं जिससे बुराई नष्ट होने की मान्यता है. सुख, स्वास्थ्य, धन और शांति का आशीर्वाद पाने के लिए लक्ष्मी पूजन, काली पूजन किया जाता है.

दीपावली एकता का संदेश देती है, जहां सामाजिक और सामुदायिक मिलन होता है. प्रमुख मंदिरों और घरों को रोशनी से सजाया जाता है, उत्सव के भोजन सभी के साथ साझा किए जाते हैं, दोस्तों और रिश्तेदारों को याद किया जाता है और उपहार दिए जाते हैं.

उत्तर, पश्चिम और मध्य क्षेत्रों के कुछ ग्रामीण समुदायों में इस दिन गोवर्धन पूजा की जाती है. गोवर्धन पूजा को अन्नकूट पूजा भी कहा जाता है. भगवान कृष्ण गोवर्धन पर्वत को उठाकर गायों और कृषक समुदायों को इंद्र के क्रोध से उत्पन्न लगातार बारिश और बाढ़ से बचाते हैं. इस पर्व में प्रकृति के साथ मानव का सीधा संबंध दिखाई देता है. गुजरात में, अन्नकूट नए साल का पहला दिन है (बेस्तू वरस) और इसे आवश्यक वस्तुओं, या सबरा (शाब्दिक रूप से, 'जीवन में अच्छी चीजें') की खरीद के माध्यम से मनाया जाता है.

भाई दूज, भाऊ-बीज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजा:

त्योहार के अंतिम दिन को भाई दूज, भाऊ बीज, भाई तिलक या भाई फोटा कहा जाता है. यह बहन-भाई के बंधन को रक्षा बंधन की भावना के समान मनाता है. इस दिन बहनें, भाई की लंबी उम्र की कामना के लिए यम के नाम का दीपक घर के बाहर जलाती हैं. इससे अकाल मृत्यु का भय दूर होता है. ये त्योहार भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है.

कारीगर, हिंदू और सिख समुदाय चौथे दिन को विश्वकर्मा पूजा दिवस के रूप में मनाते हैं. विश्वकर्मा वास्तुकला, भवन, निर्माण, कपड़ा कार्य और शिल्प व्यापार में प्रमुख हिंदू देवता हैं. करघे, व्यापार के उपकरण, मशीनों और कार्यस्थलों को साफ किया जाता है और आजीविका के लिए प्रार्थना की जाती है.

जैन समाज द्वारा दीपावली, महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के रूप में मनाई जाती है. जैन धर्म के लिए यह त्योहार त्याग और तपस्या का त्योहार है. मुगल सम्राट जहाँगीर द्वारा ग्वालियर किले की जेल से गुरु हरगोबिंद की रिहाई की याद में सिख धर्म में 'बंदी छोड़' दिवस मनाते हैं. गुरु हरगोबिंद जी ने अकेले रिहा होने से इनकार किया था इसलिए इनके साथ कैद सभी बावन हिन्दू राजाओं को भी रिहा किया गया. उन्होंने अपने धर्म के साथ-साथ पूरे राष्ट्र की रक्षा की, जिससे हमारे राष्ट्र और समाज की एकता ज्यादा मजबूत बनी रही. नेपाल के नेवार बौद्ध विभिन्न देवताओं का सम्मान और लक्ष्मी को प्रार्थना करके दीपावली मनाते हैं.

दिवाली पारंपरिक रूप से हिंदू व्यवसायों के लिए नए साल की शुरुआत और सर्दियों से पहले साल की आखिरी फसल का प्रतीक है. कई लोग अपना पुराना हिसाब-किताब बंद करके सफलता और समृद्धि की प्रार्थना के साथ नया हिसाब-किताब शुरू करते हैं. परिवार और दोस्तों के साथ अच्छे संबंधों सहित जीवन में प्रतीकात्मक रूप से यह एक नई शुरुआत 'क्षमा करें और भूल जाएं' इस भाव के साथ होती हैं. यह पूजा, एकजुटता, सभी संसाधनों को साझा करने, भोजन और उपहारों के माध्यम से समुदाय और परिवार के उत्सव का समय है.

दिवाली का आध्यात्मिक अर्थ 'आंतरिक आत्मा की जागरूकता' है. इस अवसर में हृदय में शुद्धता बढ़ती है, जो भौतिक जग से परे है. दिवाली आंतरिक आत्मा की जागृति और जागरूकता का उत्सव है. आंतरिक आत्मा का प्रकाश सभी अंधकार, बाधाओं और अज्ञान को दूर करता है. यह व्यक्ति के वास्तविक स्वरूप के प्रति जागृत करता है. इस आंतरिक बोध के साथ करुणा, प्रेम और सभी चीजों की एकता के बारे में जागरूकता आती है - सत् (सत्य), चित (चेतना) और आनंद (आंतरिक आनंद). हिन्दुओं के लिए यही जीवन का लक्ष्य है.

व्यापार और व्यापारी परिवार और अन्य लोग माता सरस्वती और भगवान कुबेर की भी पूजा करते हैं. माता सरस्वती जो संगीत, साहित्य और शिक्षा की प्रतीक हैं और भगवान कुबेर जो खजाने, धन और ऐश्वर्य के प्रतीक हैं. उनका आशीर्वाद सौभाग्य, अच्छी आय और बेहतर व्यवसाय लाता है.

दीपावली के दौरान सेवा का अर्थ है उन लोगों के जीवन में प्रकाश लाना जो हमसे कम भाग्यशाली हैं. सेवा करने के कई तरीके हैं. हम वित्तीय सहायता और ज्ञान दे सकते हैं, आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दे सकते हैं, स्वास्थ्य शिविर आयोजित करना, योग के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करना, खाद्य सामग्री देना, स्थानीय स्कूलों और पुस्तकालयों को किताबें, कंप्यूटर या उपकरण दान करना, वयोवृद्धों की सेवा करना आदि.

दीपावली हिंदुओं, जैनियों, सिखों और नेवार बौद्धों द्वारा मनाई जाती है. यह त्योहार अंधेरे पर प्रकाश की, अज्ञानता पर ज्ञान और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतिनिधित्व करता है. दीपावली आनंद, स्वास्थ्य, धन, समृद्धि, शांति और आध्यात्मिक ज्ञान की भावना है.

- विकास महांगरे
स्टा. प्र. कें., भोपाल

दीपावली पर्व और पटाखे

दीपावली अर्थात दीपों का त्योहार या फिर हम कहें कि दीपावली अर्थात रोशनी का त्योहार. यह हिंदुओं का सबसे बड़ा त्योहार माना जाता है. दीपावली का त्योहार हर एक वर्ग के व्यक्ति के लिए महत्व रखता है. जहां बड़ों के लिए यह एक आस्था का विषय है वहीं बच्चो के लिए उमंग और उत्साह का. एक कारण और है जिसके कारण बच्चो के लिए दीपावली का अधिक महत्व है और वह है पटाखे.

यह सत्य है कि आज दीपावली के त्योहार में पटाखों का महत्व कम होता जा रहा है परंतु फिर भी दीपावली की तैयारियों में पटाखों का उल्लेख उसी प्रकार आ जाता है जिस प्रकार बारिश के साथ-साथ गर्म चाय का. जिस प्रकार कई व्यक्ति चाय पसंद नहीं करते उसी प्रकार कई व्यक्ति पटाखों के साथ दीपावली मनाना पसंद नहीं करते और जिन्हें पसंद है उन्हें इससे दूर नहीं किया जा सकता है.

बचपन मे जहां हमारे त्योहार मनाने के तरीके अलग थे वहीं आज के परिप्रेक्ष्य मे युवा हों चाहे बच्चे हों सभी के लिए सोशल मीडिया पर अपनी तस्वीरें डालना एवं दूसरों को दिखाने का चलन बढ़ गया है. सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे कि फेसबुक इंस्टाग्राम एवं व्हाट्सएप आदि पर जैसे त्योहार के बाद एक अलग ही त्योहार मनाने लग जाते हैं. अंग्रेजी में कहावत है 'गो विद द फ्लो' जिसका अर्थ है 'बहाव के साथ चलो' अर्थात् समय के साथ चलो. इस संदर्भ में नई तकनीकों को अपनाना कोई गलत बात नहीं है, परंतु अपनी संस्कृति से धीरे-धीरे पीछे छूट जाना कहीं-ना-कहीं गलत है. पटाखों के साथ भी कुछ ऐसा ही है. आजकल पटाखों का आनंद उठाने से अधिक लोग उनकी तस्वीरें खींचकर अपनी सोशल मीडिया पर डालने में अधिक रुचि रखते हैं.

पटाखों का इतिहास : -

पटाखों का आविष्कार सातवीं शताब्दी में चीन में हुआ था. इसके बाद तक 1200 ईस्वी से 1700 ईस्वी तक ये पूरे विश्व में लोगों की पसंद बन गए. यही नहीं गन पाउडर की खोज भी इस दौरान हुई. दीपावली में पटाखे जलाने की परंपरा तो बहुत बाद में शुरू हुई है. उत्तर भारत में माना जाता है कि रावण का वध करने के बाद जब भगवान राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे तो अधर्म पर धर्म की विजय के प्रतीक के रूप में नगरवासियों ने पूरे मार्ग को दीये जलाकर रोशन कर दिया था. साल 2017 में पंजाब विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ाने वाले राजीव लोचन और मुगलकालीन इतिहास के प्रोफ़ेसर नजफ़ हैदर ने इस बारे में बीबीसी हिंदी से कुछ दिलचस्प किस्से साझा किए थे. प्रोफ़ेसर नजफ़ हैदर ने कहा था, मुग़लों के दौर में आतिशबाज़ी और पटाखे ख़ूब इस्तेमाल होते थे, ये तो पता है. लेकिन ये कहना सही नहीं होगा कि भारत में पटाखे मुग़ल ही लेकर आए थे. ये दरअसल उनसे पहले ही आ चुके थे. दारा शिकोह की शादी की पेंटिंग में लोग पटाखे चलाते हुए देखे जा सकते हैं. फ़िरोज़शाह के ज़माने में भी आतिशबाज़ी ख़ूब हुआ करती थी. इसका बड़ा इस्तेमाल शिकार या हाथियों की लड़ाई के दौरान होता था. पटाखे चलाए जाते थे ताकि उन्हें डराया जा सके. मुग़ल दौर में शादी या दूसरे जश्न में भी पटाखे और आतिशबाज़ी होती थी. ईसा पूर्व काल में रचे गए कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी एक ऐसे चूर्ण का विवरण है जो तेज़ी से जलता था, तेज़ लपटें पैदा करता था और अगर इसे एक नलिका में ठूंस दिया जाए तो पटाख़ा बन जाता था.

पटाखे एवं व्यापार : -

आज भी कहीं-ना-कहीं दिवाली के साथ-साथ जब हम पटाखे जलाते हैं तो इसका न सिर्फ हम बड़े अपितु हमारे बच्चे एवं युवा वर्ग भी काफी आनंद उठाते हैं. परंतु प्रकृति के प्रति लोगों की जागरुकता कहें या फिर आधुनिकीकरण, पटाखों के व्यापार को इसने काफी प्रभावित किया है. वैसे तो पटाखे देश के विभिन्न कोनों में बनाए जाते हैं परंतु तमिलनाडु का शिवकाशी पटाखों के लिए सबसे अधिक मशहूर है. एक विज्ञापन के अनुसार इस वर्ष पटाखों का उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में केवल एक चौथाई हुआ है और पिछले 5 वर्षों की तुलना में तो यह दस प्रतिशत ही रह गया है. कई छोटी फैक्ट्रियां तो पूरी तरह से बंद ही हो चुकी हैं. ऐसे में कुछ ही फैक्ट्रियां बची हैं जो पटाखों का उत्पादन अभी भी कर रही हैं वह भी काफी छोटे स्तर पर.

दीपावली के पास आते-आते कई राज्य सरकारें इन पर प्रतिबंध भी लगा देती हैं जिसके कारण पटाखा व्यापारी बुरी तरह से नुकसान झेलते हैं एवं कई कंपनियों ने तो अपना पटाखों का व्यापार छोड़कर कोई अन्य व्यापार करना ही सही समझा.

अगर वातावरण के नजरिए से देखें तो यह बहुत हद तक सही है परंतु व्यापारियों के लिए यह कमर तोड़ देने वाला फैसला साबित होता है. दोनों के बीच में संतुलन बनाने के लिए कुछ पाबन्दियों के साथ त्योहार में पटाखों की अनुमति देनी चाहिए.

आजकल केवल भारत ही नहीं अपितु चीन पटाखों के व्यापार का एक बहुत बड़ा केंद्र बन चुका है. दीपावली के दौरान अधिकतर पटाखों का आयात चीन से ही होता है. चीन व्यापार के तौर पर एक बहुत बड़ा केंद्र बनकर सामने आया है ऐसे में चीजों के साथ-साथ पटाखों का व्यापार भी इससे अछूता नहीं है. रिपोर्ट के अनुसार कुल पटाखों के व्यापार का लगभग 40% आयात चीन से होता है. यह एक बहुत बड़े बाजार में हिस्सेदारी का आंकड़ा है.

पटाखों से होने वाले नुकसानः-

पटाखों से सबसे बड़ा नुकसान पर्यावरण को ही होता है एक रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में सर्वाधिक वायु प्रदूषण दिवाली के दूसरे दिन रहता है. पटाखों से होने वाले कई अन्य प्रदूषण निम्नलिखित हैं -

वायु प्रदूषण

पटाखे चलाने से दीपावली की सादगी भरी खूबसूरती नष्ट हो जाती है. दीपावली उत्सव के दिन भारी मात्रा में वायु प्रदूषण को प्रत्येक वर्ष देखा जाता है. पूरा आसमान पटाखों से निकलने वाली जहरीली गैस से भर जाता है और पूरे वातावरण को प्रदूषित कर देता है, जिसके कारण लोगों को साँस लेने में तकलीफ होती है और आँखों में तेज़ जलन होती है. पटाखे जलाने का प्रभाव दीपावली के कई दिनों तक जारी रहता है. इसके बुरे प्रभाव के चलते लोगों को कई प्रकार के रोग हो सकते हैं खासकर फेफड़े संबंधी परेशानियाँ देखने को मिलती हैं. पिछले वर्ष आई कोरोना महामारी ने लोगों के स्वास्थ्य को काफी प्रभावित किया है. कोरोनावायरस भी एक सांस संबंधी बीमारी है और ऐसे में वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या है जो पटाखों से बढ़ जाती है.

भूमि प्रदूषण

पटाखों के अवशेष टुकड़े जमीन में गड़ जाते हैं, जिसके कारण भूमि प्रदूषण जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं. लोग बिना सोचे समझे पटाखे जलाने के बाद यहाँ-वहाँ फेंक देते हैं. यह पटाखों के टुकड़े बायो डेग्रेडेबल नहीं होते हैं अर्थात जमीन में नहीं मिलते हैं और वैसे ही बने रहते हैं. वक़्त के साथ यह और ज़्यादा नुकसानदेह साबित होता है. इससे भूमि प्रदूषित होती है.

अत्याधिक ध्वनि प्रदूषण

दीपावली के समय निरंतर पटाखों की आवाज़ से ध्वनि प्रदूषण होता है. जिससे मनुष्य और जीव-जंतुओं दोनों को अत्याधिक परेशानी होती है. इससे कई प्रकार की गंभीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं. पटाखों की अचानक तेज आवाज़ सुनने से बच्चे भयभीत हो जाते हैं. पटाखों के कारण ज़ोरदार धमाका होता है, जिससे पशु-पक्षी घबरा जाते हैं और कई बार उनके सुनने की क्षमता भी चली जाती है. वयस्क लोग ध्वनि प्रदूषण से असहज महसूस करते हैं.

पर्यावरण प्रिय ग्रीन पटाखेः-

ग्रीन पटाखे राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी) की खोज हैं जो पारंपरिक पटाखों जैसे ही होते हैं पर इनके जलने से कम प्रदूषण होता है. नीरी एक सरकारी संस्थान है जो वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के अंदर आता है. ग्रीन पटाखे दिखने, जलाने और आवाज़ में सामान्य पटाखों की तरह ही होते हैं, लेकिन इनसे कम प्रदूषण होता है. सामान्य पटाखों की तुलना में इन्हें जलाने पर 40 से 50 फ़ीसदी तक कम हानिकारक गैस पैदा होती हैं. ग्रीन पटाखों में इस्तेमाल होने वाले मसाले बहुत हद तक सामान्य पटाखों से अलग होते हैं. नीरी ने कुछ ऐसे फ़ॉर्मूले बनाए हैं जो हानिकारक गैस कम पैदा करती है. यह इन ग्रीन पटाखों की बेहद खास बात है जो सामान्य पटाखों से उन्हें अलग करती है. नीरी ने चार तरह के ग्रीन पटाखे बनाए हैं.

पानी पैदा करने वाले पटाखेः ये पटाखे जलने के बाद पानी के कण पैदा करेंगे, जिसमें सल्फ़र और नाइट्रोजन के कण घुल जाएंगे. नीरी ने इन्हें सेफ़ वाटर रिलीज़र का नाम दिया है. पानी प्रदूषण को कम करने का बेहतर तरीका माना जाता है. पिछले साल दिल्ली के कई इलाक़ों में प्रदूषण का स्तर बढ़ने पर पानी के छिड़काव की बात कही जा रही थी.

सल्फ़र और नाइट्रोजन कम पैदा करने वाले पटाखेः नीरी ने इन पटाखों को STAR क्रैकर का नाम दिया है, यानी सेफ़ थर्माइट क्रैकर. इनमें ऑक्सीडाइज़िंग एजेंट का उपयोग होता है जिससे जलने के बाद सल्फ़र और नाइट्रोजन कम मात्रा में पैदा होते हैं. इसके लिए ख़ास तरह के केमिकल का इस्तेमाल होता है.

कम एल्यूमीनियम का इस्तेमालः इस पटाखे में सामान्य पटाखों की तुलना में 50 से 60 फ़ीसदी तक कम एल्यूमीनियम का इस्तेमाल होता है. इसे संस्थान ने सेफ़ मिनिमल एल्यूमीनियम यानी SAFAL का नाम दिया है.

फिलहाल यह एक नया विचार है परंतु प्राकृतिक एवं व्यापार की दृष्टि से अच्छा सुझाव है.

तात्पर्य यह है कि 'अति हर चीज की बुरी होती है' और यह भी सत्य है कि हम इस प्रकृति के सदस्य हैं और इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य बनता है. इसलिए सीमित मात्रा में पटाखों का उपयोग दीपावली के पर्व को मनाने के लिए गलत नहीं है. यह व्यापारियों की दृष्टि से भी संतुलित निर्णय बन सकता है. ऊपर दिए गए ग्रीन पटाखे का जो उल्लेख किया गया है उन पर जोर देना चाहिए. यह पर्यावरण के लिए हानिकारक एवं व्यापारियों के लिए अधिक-से-अधिक लाभकारी साबित हो सकते हैं.

हेमलता भाटिया
यू.एल.पी., राजकोट

दि. 14.09.2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व आंध्रा बैंक (नराकास - विशाखपट्टणम) अब यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को वित्तीय वर्ष 2019-20 के लिए 'ग' क्षेत्र में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के अंतर्गत नराकास श्रेणी में 'द्वितीय' पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार ग्रहण करते हुए न.रा.का.स. (बैंक), विशाखपट्टणम के अध्यक्ष एवं क्षेत्र प्रमुख श्री अरविंद कुमार और पी. विवेक सुधा, सदस्य सचिव व प्रबंधक (राजभाषा) क्षे.का., विशाखपट्टणम.

क्षे.का., तिरुवनंतपुरम को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नराकास, तिरुवनंतपुरम की ओर से 2020-21 हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. क्षेत्र प्रमुख, श्री रमेशचन्द्र प्रभु; उप क्षेत्र प्रमुख, श्री कनकराजू सी एवं राजभाषा प्रभारी, श्रीमती कला सी एस पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

दि. 28.08.2021 को वर्चुअली आयोजित नराकास (बैंक) पटना की बैठक मे क्षे.का., पटना को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. यह पुरस्कार श्री संजीव दयाल, नराकास (बैंक), पटना के अध्यक्ष द्वारा श्री अजय बंसल, क्षेत्र प्रमुख, पटना तथा डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा प्रभारी को प्रदान किया गया. पुरस्कार प्राप्ति के पश्चात क्षेत्र प्रमुख, पटना के साथ पूरी क्षे.का., पटना की टीम.

दि. 08.09.2021 को बैंक नराकास पुणे द्वारा आयोजित शील्ड वितरण समारोह में क्षे.का. पुणे (पूर्व) को, राजभाषा शील्ड योजना 2019-20 के अंतर्गत प्रशासनिक कार्यालय वर्ग (बैंक) का प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री प्रमोद गुप्ता, क्षेत्र महाप्रबंधक, क्षेमप्रका पुणे. यह पुरस्कार बैंक नराकास पुणे के अध्यक्ष, श्री राकेश कुमार सिंह, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, बैंक ऑफ महाराष्ट्र; डॉ राजेन्द्र वर्मा, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा प्रभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिया गया.

दि. 29.07.2021 को नराकास 'बैंक' बेंगलूरु की छमाही बैठक में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन (2020-21) हेतु क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. पुरस्कार के साथ श्री डी. चंद्रमोहन रेड्डी, क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु; श्री जी.डी. सुरेश, उप क्षेत्र प्रमुख, क्षेका, बेंगलूरु (दक्षिण); श्री टी.नंजुंडप्पा, क्षेत्र प्रमुख; श्री वी. सुब्रमण्यम, उप महाप्रबंधक; श्री के. वी. प्रसन्ना, सहायक महाप्रबंधक व डॉ. प्रकाश टी., सहायक महाप्रबंधक एवं कृष्ण कुमार यादव, राजभाषा प्रभारी.

यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सी ई ओ श्री अतुल कुमार गोयल के कर कमलों से वित्तीय वर्ष 2020-21 का नराकास का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री बरुण कुमार एवं राजभाषा अधिकारी सुश्री श्वेता सिंह, क्षे.का., कोलकाता मेट्रो.

दि. 31.08.2021 को नराकास, ठाणे की छमाही बैठक में क्षे.का., मुंबई (ठाणे) को वर्ष 2020-21 हेतु नराकास का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. यह पुरस्कार डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक, कार्यान्वयन, भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा क्षेत्र प्रमुख, श्रीमती रेणु के नायर एवं राजभाषा अधिकारी मो. जावेद अर्शद को प्रदान किया गया.

नराकास, धमतरी द्वारा धमतरी शाखा (रायपुर क्षेत्र) को वर्ष 2020-21 के लिए श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

वित्तीय वर्ष 2019-20 हेतु नराकास मदुरै द्वारा राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत क्षे.का. मदुरै को तृतीय पुरस्कार के रूप में दि. 02.07.2021 को राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया.

दि. 04.08.2021 को क्षे.का., बेंगलूरु (उत्तर) को नराकास (बैंक) बेंगलूरु से द्वितीय पुरस्कार के रूप में प्राप्त शील्ड के साथ श्री मनोहर एम.आर., क्षेत्र प्रमुख एवं क्षे.का. के अन्य कार्यपालक एवं अधिकारीगण.

दि 29.07.2021 को नाराकास बैंक कानपुर की बैठक में क्षे.का., कानपुर को राजभाषा कार्यनिष्पादन हेतु वर्ष 2019-20 के लिए द्वितीय एवं वर्ष 2020-21 के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया. नराकास अध्यक्ष, श्री श्याम सुंदर सिंह से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संजीव कुमार, क्षेत्र प्रमुख एवं सुश्री प्रेमा पाल, सहायक प्रबन्धक (राजभाषा).

नराकास बैंक आगरा द्वारा क्षे.का., आगरा को वित्तीय वर्ष 2020-21 हेतु राजभाषा शील्ड योजना के तहत 'द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया. शील्ड एवं प्रमाण पत्र के साथ श्री विकास विनीत, क्षेत्र प्रमुख आगरा; श्री दीपक कुमार, राजभाषा अधिकारी.

नराकास, करनाल द्वारा क्षे.का., करनाल को वर्ष 2020-21 के लिए श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री दिलीप मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का., करनाल.

दि. 18.08.2021 को क्षे.म.प्र.का., दिल्ली का संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा निरीक्षण किया गया. निरीक्षण के दौरान माननीय संसद सदस्यों से उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन का प्रमाण पत्र प्राप्त करती श्रीमती बीना वाहिद, क्षेत्र महाप्रबंधक, साथ में हैं श्री मानस रंजन बिस्वाल, कार्यपालक निदेशक एवं केन्द्रीय कार्यालय के शीर्ष कार्यपालकगण व राजभाषा प्रभारी.

दि. 27.09.2021 को कें.का. द्वारा वर्चुअल रूप से हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया. श्री राज किरण रै जी., प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, बैंक के सभी कार्यपालक निदेशक महोदय, सभी मुख्य महाप्रबंधक, महाप्रबंधक, उप महाप्रबंधक, के.का., के स्टाफ सदस्य इस समारोह में उपस्थित रहे. इस अवसर पर वित्त वर्ष 2020-21 के लिए कें.का. के विभागों के लिए राजभाषा शील्ड; पत्रों पर टिप्पण लेखन हेतु कार्यपालकों को राजभाषा पुरस्कार; सर्वाधिक हिन्दी में कार्य करने वाले 10 कार्मिकों को राजभाषा पुरस्कार वितरीत किये गये. राजभाषा विभाग द्वारा सायबर सुरक्षा पर कार्टून बुक 'सीसो-मैं हूँ ना' का विमोचन किया गया.

दि. 30.08.2021 को श्री निर्मल कुमार दुबे, सहा. निदेशक (का.), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), कोलकाता, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा क्षे.का., हावड़ा का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. सहा. निदेशक (का.) महोदय का स्वागत करते क्षेत्र प्रमुख, श्री मयंक भारद्वाज और उप क्षेत्र प्रमुख, श्री राजेश कुमार सिंह.

दि. 15.09.2021 को श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (का.), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1, दिल्ली, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा जम्मू मुख्य शाखा का राजभाषा विषयक ऑनलाइन निरीक्षण किया गया. निरीक्षण के दौरान श्री संसार चंद, उप महाप्रबंधक (क्षेत्र प्रमुख), श्री बिरेन्द्र प्रसाद, शाखा प्रमुख, जम्मू मुख्य शाखा, श्री सुनील कुमार, उप शाखा प्रमुख, जम्मू मुख्य शाखा, श्री पवन कुमार झा, राजभाषा प्रभारी, क्षे.म.प्र.का., चंडीगढ़, श्री सुभाष चन्द्र, राजभाषा प्रभारी, क्षे.का., अमृतसर ऑनलाईन उपस्थित रहे.

दि. 17.08.2021 को श्री नरेंद्र मेहरा, सहा. निदेशक (का.), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1, दिल्ली, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा मुक्तसर शाखा, बठिंडा का निरीक्षण किया गया. इस अवसर क्षेत्र प्रमुख, श्री नवनीत कुमार दत्ता जी; श्री राजेंद्र कुमार अरोड़ा, शाखा प्रमुख.; सुश्री रेणु बाला, राजभाषा अधिकारी ने भाग लिया.

क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु द्वारा दि. 25.09.2021 को अंचलीय राजभाषा समीक्षा बैठक, क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु, श्री डी. चंद्रमोहन रेड्डी (बाएँ से चौथे) की अध्यक्षता व राजभाषा प्रभाग, के.का., से डॉ. सुलभा कोरे की गरिमामय उपस्थिति में आयोजित की गयी. अंचल के सभी राजभाषा अधिकारियों के साथ आयोजित इस बैठक के उद्घाटन के अवसर पर (बाएँ से) उप क्षेत्र प्रमुख, क्षेका, बेंगलूरु (द) श्री सुरेश जी.डी.; उप अंचल प्रमुख श्री सुनील कुमार यादव; क्षेत्र प्रमुख, क्षेका, बेंगलूरु (दक्षिण) श्री टी. नंजुंडप्पा व उप क्षेत्र प्रमुख, श्री सतीश रै उपस्थित रहे.

दि. 15.07.2021 को श्री नरेंद्र मेहरा, सहा. निदेशक (का.), उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1, दिल्ली, भारत सरकार की उपस्थिति में नराकास गाजीपुर की अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया.

दि. 02.09.2021 को क्षे.का., विशाखपट्टणम की छमाही गृह पत्रिका 'यूनियन वैशाखी' का विमोचन करते हुए श्री राजकिरण रै जी., प्रबंध निदेशक एवं सीईओ; श्री के.एस.डी. शिव वर प्रसाद, क्षेत्र महाप्रबंधक, विशाखपट्टणम; श्री अरविंद कुमार, क्षेत्र प्रमुख, विशाखपट्टणम.

दि. 27.07.2021 को क्षे.म.प्र.का., एवं क्षे.का., मंगलूरु की संयुक्त अर्धवार्षिक गृह पत्रिका - यूनियन मंगल वाणी (मार्च 2021 अंक) का विमोचन श्री एम वी बालासुब्रमण्यम, मुख्य महाप्रबंधक के कर कमलों से संपन्न हुआ. साथ में उपस्थित श्री ई पुल्ला राव, उप अंचल प्रमुख एवं श्री महेश जी, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का., मंगलूरु, राजभाषा प्रभारी, श्री जॉन ए अब्राहम एवं श्रीमती पूर्णिमा एस., क्षे.का., उडुपि

दि. 06.07.2021 को श्री सुमीत जैरथ, सचिव एवं श्रीमती मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से क्षेत्र महाप्रबंधक, दिल्ली का पदभार ग्रहण करने के पश्चात श्रीमती बीना वाहिद, क्षेत्र महाप्रबंधक द्वारा भेंट कर बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में किए जा रहे नवोन्मेषी कार्यों पर चर्चा की गयी.

दि. 11.08.2021 को नराकास, खड़गपुर, हावड़ा क्षेत्र की छमाही बैठक का आयोजन प्रोफेसर वी.के. तिवारी की अध्यक्षता में किया गया. बैठक के उपरांत 'भाषा चिंतन-वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया. जिसमें अतिथि वक्ता के रूप में वरिष्ठ पत्रकार, श्री राहुल देव एवं वरिष्ठ अनुवादक श्री अनिल जोशी उपस्थित रहे.

दि. 26.08.21 को क्षे.का., बेंगलूरु (उत्तर) में क्षेत्र की पत्रिका 'यूनियन गंगा कावेरी' का विमोचन करते हुए श्री मनोहर एम.आर., क्षेत्र प्रमुख; श्री के दिनकर, उप क्षेत्र प्रमुख, एवं अन्य कार्यपालक गण और स्टाफ सदस्य.

दि. 01.07.2021 को क्षे.का., एर्णाकुलम (ग्रामीण) की गृह पत्रिका 'यूनियन पेरियार' मार्च 2021 (प्रथम अंक) का विमोचन क्षेत्र प्रमुख श्री देवराज आर द्वारा किया गया, साथ में उप क्षेत्र प्रमुख, श्री कमल नारायण राय, मुख्य प्रबंधक, श्री अब्दुल रज़ाक, मुख्य प्रबंधक, श्रीमती श्रुति वेणुगोपाल एवं राजभाषा प्रभारी श्री जॉन ए अब्राहम उपस्थित रहे.

नराकास, मऊ की 12वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन दि. 26.08.2021 को वेब माध्यम से किया गया. इस बैठक की अध्यक्षता; श्री मिथिलेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख ने की तथा संचालन श्री किशोर कुमार, राजभाषा अधिकारी ने किया.

दीपावली - एक 'हटकर' नजरिया

दशहरा हो या दीपावली हमने बचपन से यही देखा है कि बुराई पर अच्छाई की जीत हुई और फिर उस गुत्थी को सुलझा हुआ समझ कर (अपने आप को अच्छाई की तरफ समझ कर) जीत का जश्न मनाने लगते हैं और जश्न के शोर में कुछ महत्वपूर्ण बातों को अनसुना कर देते हैं

1. उस बुराई को बुरा बनाने में समाज की भूमिका उस बुरे व्यक्ति से भी ज्यादा रहती है.
2. बुरे व्यक्ति की मृत्यु से बुराई का अंत नहीं होता. व्यक्ति एक माध्यम है जिस पर बुरे विचार सवारी करते हैं.
3. प्रत्येक व्यक्ति किसी के लिए अच्छा होता है और किसी के लिए बुरा ऐसे में दो स्थितियाँ बनती हैं
   - संभव है कि वो कुछ विशेष लोगों के साथ बुरा था. यदि हाँ तो उसका क्या कारण होगा.
   - वह कुछ लोगों के साथ पारिवारिक या संवेदनात्मक रूप से जुड़ा होगा, जिनके साथ उसका व्यवहार बहुत बुरा नहीं रहा होगा. उनके ऊपर मृत्यु का या फिर उसकी मृत्यु पर मनाए जा रहे जश्न का क्या असर पड़ेगा.

उदाहरणस्वरूप किसी का बेटा आतंकवादी या बलात्कारी है, तो सजा के रूप में उसकी माँ मृत्यु दंड स्वीकार कर सकती है किन्तु उसके मृत्यु दंड पर मनाए जाने वाला जश्न क्या उसके लिए सह्य होगा.

थोड़ा और समझने की कोशिश करें तो..

दिवाली हो या होली हमारे दोनों ही प्रमुख त्योहार किसी की मृत्यु का जश्न है. वास्तव में हमने जब व्यक्ति को बुराई का स्वरूप मान कर उसकी मृत्यु का जश्न मनाया वही समाज के रूप में हमारी सबसे बड़ी हार है और बुराई की सबसे बड़ी जीत क्योंकि हमने कभी बुराई को मारने का प्रयास ही नहीं किया.

आखिर यह समाज की हार कैसे है इसके प्रमुख कारण हैं:

1. **समस्या का मूल समाधान नहीं:** बुराई एक भावना है और वह केवल व्यक्ति विशेष पर हावी हो जाती है. किसी विशेष मानसिक स्थिति में व्यक्ति विशेष चोर, मवाली, गुंडा, आतंकवादी, बलात्कारी, नक्सली आदि पहचान को स्वीकार करता है. इसमें बहुत बड़ी भूमिका उसकी परवरिश, सामाजिक परिवेश, आर्थिक स्थिति की रहती है.

   मान लें कि हमने एक बस्ती के किसी चोर को पकड़ लिया तो क्या हमने अपना समान सुरक्षित कर लिया, नहीं क्योंकि निश्चित रूप से चोरी के पीछे कोई तो कारण होगा गरीबी या लालच. दोनों ही स्थितियों में हमने गरीबी या लोगों के मन से लालच हटाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया. ऐसे में क्या हमारी संपत्ति सुरक्षित है और क्या हमें सच में उस चोर के पकड़ने की खुशी मनानी चाहिए?

   वास्तव में वह चोर बीमारी नहीं है वह तो बीमारी का एक लक्षण है जिसकी पड़ताल से हम असली बीमारी तक पहुंच सकते हैं.

   एक और उदाहरण से समझें कि मान लें कि आपको अक्सर सिर में दर्द रहता है और आप डॉक्टर के पास जाते हैं वह आपको दर्द की सामान्य दवा देता है और आपको बेहतर लगता है. किन्तु आप दर्द का कारण जानना चाहते हैं तो डॉक्टर जांच के बाद बताता है कि आपको ब्रेन ट्यूमर है. और फिर आपके सिर दर्द की वही सामान्य दवा दे देता है.

   पूछने पर डॉक्टर बताता है कि आपका दर्द तो ठीक हो जा रहा है और ब्रेन ट्यूमर सही करना बहुत मुश्किल है. अन्य शोधकर्ता इस विषय पर काम कर रहे हैं उसका काम आपको सिर्फ दर्द से आराम दिलाना है. और वह इस बात पर बहुत गर्व करता है कि वो कुशलता से अपना काम कर रहा है.

अब आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या आप चैन से सो पाएंगे ये जानते हुए कि ये बीमारी एक दिन आपको नष्ट कर देगी और आपके परिवार को भी बर्बाद कर देगी. क्या आप अपने सिर दर्द के ठीक होने की खुशी मनाएंगे या अपनी बीमारी को जड़ से खत्म करने के उपक्रम ढूँढेंगे ? तो फिर एक समाज के रूप में हम यह बेवकूफी कैसे कर सकते हैं. लोगों के दिल से घृणा और नफरत को खत्म करने की बजाए होलिका के मरने की खुशियाँ मनाना उतना ही बचकाना है जैसे जानलेवा बीमारी के होने पर भी उसके लक्षण न दिखने की खुशी मनाना.

2. **मिथकों और अंधविश्वास को बढ़ावा :** किसी व्यक्ति को बुरा बता कर हम अपने समाज की कमियों से उसी प्रकार आँख मूँद लेते हैं जैसे बिल्ली को देख कर एक कबूतर. जटिल प्रक्रिया को सरल और ग्राह्य बनाने के उद्देश्य से हम एक व्यक्ति के चरित्र को क्रूरता और घृणा से भर देते हैं. इतना ही नहीं उससे प्रतीक बना कर आम जिंदगी में प्रयोग भी करते हैं उदाहरण के लिए सुपर्नखा जैसी बहन, होलिका जैसी बुआ, कंस जैसा मामा, विभीषण जैसा भाई, रावण जैसा पति, कैकई जैसी माँ. और ये सिर्फ व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रहते कई मामलों व यह जाति, धर्म, लिंग स्थान आदि से संबन्धित हो जाता है. जैसे - बहुत प्रख्यात कथन है कि 'महाभारत हो या रामायण दोनों युद्धों का कारण स्त्री है' या फिर आप में से बहुत लोग इस तथ्य से अवगत होंगे की मथुरा में रहने वाले और वृन्दावन में रहने वाले घरों में शादियों का प्रचलन नहीं है. दरअसल ऐसे में हम बुराई को किसी एक व्यक्ति या उसके समाज से जोड़ कर न सिर्फ मिथक को बढ़ावा देते हैं बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ी को इस प्रकार के नाजुक मामलों के प्रति असंवेदनशील भी बनाते हैं.

3. **असंवेदनशीलता :** असंवेदनशीलता तो हमारे त्योहारों की प्रमुख सामग्री मानी जा सकती है. चाहे वह 'होली का मज़ा तो उसे ही रंग लगाने में है जो मना करे' या विभिन्न धर्मों के त्योहारों में बली का प्रचलन हो. किन्तु मेरे अनुमान में इन सब से अधिक पौराणिक कहानियों में हिंसा और असंवेदनशीलता की अति हमारे लिए सबसे घातक है. क्योंकि यह हमारे मन मस्तिष्क को अनजाने में प्रभावित करती हैं और कुछ चीजों का सामान्यीकरण कर देती हैं. जैसे बुराई का नाश करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है इस प्रकार से यदि कोई व्यक्ति बुरा है तो उसका नाश करने का अधिकार समाज को है. इस स्थिति में की गयी हिंसा को विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों में जायज माना जाता है. यहाँ निर्णय करने का अधिकार किसका है और उसके निर्णय के मानदंड क्या हैं इन बातों का कोई स्थान नहीं है. बहुमत से फैसला लो और अपने अनुसार सजा दे दो, यही न्याय संगत है. यहाँ मेरा तात्पर्य अपने हक के लिए लड़ने और किसी पर हो रहे अत्याचार को रोकने से नहीं है. बल्कि इस तरह की कहानियों से हिंसा को ग्लोरीफ़ाई करने से है.

हमारे त्योहारों और मान्यताओं ये कोई नयी बात नहीं है कि हम और आप किसी की मृत्यु का जश्न मना रहे हैं. रावण बुराई का प्रतीक है बोलते - बोलते हम कब बुराई को व्यक्ति विशेष से जोड़ना सीख लेते हैं पता भी नहीं लगता.

किसी की मृत्यु पर उसके परिवार के बारे में न सोचना और उसकी मानसिक स्थिति को अनदेखा कर बस अपनी मुसीबत के खत्म होने का जश्न मानना हिंसक प्रतीक होता है. होलिका ने प्रहलाद को मारना चाहा और वह खुद भी मर गयी अर्थात 'जो बुरा करता है उसके साथ बुरा होता है' इस सीख से हम अपना काम चला सकते थे न कि उसके मरने कि खुशी में त्योहार माना कर. क्योंकि उस दिन किसी की माँ और परम प्रिय बहन की मृत्यु हुई. उस जश्न को देख कर होलिका के पुत्र पर क्या बीती होगी? और उस पुत्र की भावनाओं को अनदेखा करना उतना ही असंवेदनशील है जैसे हिरणकश्यप का प्रह्लाद की भक्ति की अवहेलना करना.

4. **मुख्य अर्थ से भटकाव:** यहाँ यह ध्यान देना होगा कि इन कहानियों से मुख्य सीख मिलती है वह कतई हिंसक नहीं है. मुख्यत: सभी धार्मिक कथाओं में जो नायक है वह हिंसा का मार्ग दबाव में ही चुनता है और अंत में उसे इसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है. साथ ही वह अपना पूरा जीवन ऐसे युद्धों से उबर कर नहीं जी पाता है. किन्तु यह वो भाग है जिसे पूरी तरह से अनदेखा कर दिया जाता है. क्योंकि इसमें वेदना है और ग्लानि है. इन सब से बचने के लिए हम सीधे मुसीबत के टलने की खुशी के जश्न में खो जाते हैं.

यहाँ कई पाठकों को यह लग सकता है कि लेखक निराशावादी सोच से पीड़ित है, किन्तु यह भी समस्या का सरलीकरण ही कहा जाएगा. जहां हम कठिन मुद्दों से बचने के लिए एक आसान अथवा पूर्वाग्रहों से ग्रस्त सोच के पीछे छिप जाते हैं.

धर्म हमें सत्य, निष्ठा और सौहार्द की सीख देता है और हमारे विभिन्न त्योहार ऐसी भावनाओं से भरे हैं. जैसे ईश्वर के जन्म का उत्सव, फसल और मौसम से संबन्धित उत्सव, रिश्तों के मूल्यों को समझने वाले उत्सव. ऐसे में कुछ सवाल उठना जायज है कि इतने सकारात्मक त्योहारों से भरे देश में हमारे प्रमुख उत्सव के पीछे की प्रेरणा इतनी हिंसक क्यों है? और समाज ने इस हिंसा को इतनी सरलता से आत्मसात क्यों कर लिया? या फिर इन उत्सवों की शुरुआत इस तरह से नहीं हुई होगी बल्कि समय के साथ हमारे विचारों ने इन त्योहारों की पीछे की भावनाओं को प्रभावित किया होगा?

- ज्योति सिंह
क्षे. का. पुणे (पश्चिम)

सुपर फूड : कंटोला

कोरोना वायरस के इस दौर में अपनी सेहत का ख्याल रखना बहुत जरूरी हो गया है. जैसा कि हम सभी जानते हैं, कोरोना वायरस हमें कई तरह से नुकसान पहुंचाता है. इसलिए कोरोना से बचाव के लिए केवल इम्यूनिटी को बेहतर बनाए रखना ही काफी नहीं है, हमें खुद को ताकतवर बनाना भी बहुत जरूरी है. कोरोनावायरस की पहली लहर से लेकर दूसरी लहर के बीच हमने लोगों की एक कॉमन आदत देखी, जिसमें वे केवल उस वक्त ही अपनी सेहत पर ज्यादा ध्यान दे रहे थे जब महामारी अपने चरम पर थी. देश में कोरोना के केस जैसे-जैसे कम होते चले गए, लोगों ने एक बार फिर अपने सेहत के साथ खिलवाड़ करना शुरू कर दिया. जबकि सच्चाई यही है कि हमें सिर्फ कोरोना जैसी महामारी के दौरान ही नहीं बल्कि जीवनभर सेहत का ख्याल रखना बहुत जरूरी है.

अच्छी सेहत के लिए सिर्फ अच्छी लाइफस्टाइल ही नहीं बल्कि अच्छा खानपान और नियमित रूप से व्यायाम करना भी जरूरी है. आजकल के दौर में जंक फूड का इतना क्रेज बढ़ चुका है कि लोग अपने शरीर को जरूरी ताकत देनी वाली सब्जी, दाल का सेवन कम ही करते हैं. इसी सिलसिले में आज हम आपको एक सब्जी के बारे में बताने जा रहे हैं जो सिर्फ सब्जी ही नहीं बल्कि एक औषधि भी है. जी हां, हम बात कर रहे हैं कंटोला की. कंटोला को ककोरा के नाम से भी जाना जाता है.

पोषण के कारक: ककोरा में प्रति 100 ग्राम खाद्य फल में औसत पोषण मूल्य के रूप में 84.1% नमी, 7.7 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.1 ग्राम प्रोटीन, 3.1 ग्राम वसा, 3.0 ग्राम फाइबर और 1.1 ग्राम खनिज पाए गए. कंटोला में कई पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन ए, विटामिन बी1, बी2, बी3, बी5, बी6, बी9, बी12, विटामिन सी, विटामिन डी2 और 3, विटामिन ई, विटामिन के, कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटैशियम, सोडियम, कॉपर, जिंक आदि पाए जाते हैं.

अन्य गुण : अब आप जान ही चुके होंगे कि ये साधारण सब्जी अपने अंदर कितनी ताकत समेटे हुए है. कंटोला गर्म तासीर वाली एक स्वादिष्ट सब्जी होती है, जो हमें जबरदस्त ताकत प्रदान करती है. यह दुनिया की सबसे ताकतवर सब्जी है. इसे औषधि के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है. इस सब्जी में इतनी ताकत होती है कि महज कुछ दिन के सेवन से ही आपका शरीर तंदुरुस्त बन जाता है. इस सब्जी के बारे में यह भी कहा जाता है कि, ये इतनी शक्तिशाली होती है जो आपके शरीर को 'चट्टान' जैसी ताकत प्रदान करती है.

काकोरा देखने में करेला जैसा लगता है, जिसपर छोटे-छोटे कांटेदार रेशे होते हैं. लेकिन स्वाद में बिल्कुल करेले के स्वाद से विपरीत होता है. कंटोला को ककोड़े और मीठा करेला नाम से भी जाना जाता है.

अन्य भाषाओं में कंटोला के नाम : कंटोला का वानास्पतिक नाम: मोमोर्डिका डायोइका है. ककोरा कुकुरबिटेसी कुल का है. भारत के विभिन्न प्रांतों में ककोरा को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है. इसको अंग्रेजी में स्पाईन गॉर्ड कहते हैं. संस्कृत में-कर्कोटकी, कर्कोटक, पीतपुष्पा और महाजाली; हिंदी में -खेकसा, खेखसा, ककोड़ा, ककोरा, कन्नड़ में-माडहागलकायी, राजस्थान में-किंकोड़ा, गुजराती में-कंटोला, कन्कोडा, तेलुगू में- आगाकर,तमिल में-एगारवल्लि, बंगाली में-बोनकरेला, कंक्रोल, पंजाबी में -धारकरेला, किरर, मराठी में -कर्टोली, कंटोलें; मलयालम में -वेमपवल

इन रोगों में जबरदस्त लाभ पहुंचाता है कंटोला: कंटोला हमें कई प्रकार की बीमारियों से बचाकर रखता है. इतना ही नहीं, ये हमें कई रोगों से भी निजात दिलाता है. आयुर्वेद में भी कंटोला का बहुत महत्व है. यह सिरदर्द, बालों का झड़ना, कान दर्द, खांसी, पेट का इंफेक्शन, बवासीर, पीलिया, डायबिटीज, दाद, खुजली, लकवा, बुखार, सूजन, बेहोशी, सांप के काटने, आंखों की समस्या, कैंसर, ब्लडप्रेशर जैसे कई भयानक रोगों में जबरदस्त फायदा पहुंचाता है. यूं तो कंटोला को सामान्यत: सब्जी के रूप में बनाकर खाया जाता है लेकिन आयुर्वेद में इसकी जड़ों, फूल, रस, पत्ते आदि का इस्तेमाल कई रोगों से राहत दिलाने के लिए किया जाता है.

वजन घटाने में सक्षम: कंटोला में प्रोटीन और आयरन भरपूर होता है जबकि कैलोरी कम मात्रा में होती है. यदि 100 ग्राम कंटोला की सब्जी का सेवन करते हैं तो 20 कैलोरी प्राप्त होती है. वजन घटाने वाले लोगों के लिए यह बेहतर विकल्प है.

उपलब्धता: ककोड़ा अधिकतर पहाड़ी जमीन में पैदा होता है. यह बरसात के मौसम में होने वाला साग है. इसलिए कंटोला आमतौर पर मॉनसून के मौसम में भारतीय बाजारों में देखा जाता है. ककोड़ा की बेल होती है जो अपने आप जंगलों-झाड़ियों में उग आती है और फैल जाती है. इसकी मुख्य रूप से भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में खेती की जाती है. इसमें कई स्वास्थ्य लाभ है जिसकी वजह से अब इसकी खेती दुनियाभर में शुरू हो गई है.

बाजार में कंटोला की सब्जी अलग-अलग कीमतों पर मिलती है. यह 60 रुपये से 150 रुपये प्रति किलो के दाम पर मिल जाती है. दरअसल, इसकी कीमत सीजन और उपलब्धता पर निर्भर करती है.

- रविंद्र जलेश्वर सिंह
जामनगर शाखा, जूनागढ़

हमें दि. 14.10.2021 के ई-मेल के माध्यम से आपके बैंक की तिमाही पत्रिका 'यूनियन सृजन' के जनवरी-मार्च 2021 अंक की ई प्रति प्राप्त कर प्रसन्नता हुई. सर्वप्रथम पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हमारी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं स्वीकार करें. पत्रिका में बैंक की विभिन्न गतिविधियों को बखूबी दर्शाया गया है. 'संस्कृति विशेषांक' के रूप में प्रकाशित पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सभी आलेख भारतीय संस्कृति, परंपरा, साहित्य, दर्शन, वेश-भूषा, खान-पान एवं तीज त्योहारों आदि पर आधारित हैं जो पत्रिका को और भी रोचक बनाते हैं. विशेषकर पत्रिका में प्रकाशित आलेख 'भारत की विश्व में प्रतिमा', 'सिंधु घाटी सभ्यता', भारत में आयुर्वेद, योग, प्राणायाम, औषधियां, स्वास्थ्य', भारत की भाषाई एकता की परम्परा' आदि काफी ज्ञानवर्धक और सूचनाप्रद हैं. पत्रिका में प्रकाशित अन्य आलेख एवं कविताएं भी रोचक एवं पठनीय हैं. पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पूरी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं.

- पुनीत कुमार मिश्र
सदस्य सचिव, नराकास (बैंक), वडोदरा एवं सहायक महाप्रबंधक
(राजभाषा एवं संसदीय समिति)

आपके बैंक द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी गृहपत्रिका 'यूनियन सृजन' के युवा विशेषांक-अप्रैल 2021 का ऑनलाइन अंक प्राप्त हुआ. इसके लिए आपका हार्दिक धन्यवाद. इस अंक को पढ़ने के बाद बहुत ही अच्छा लगा. यह युवा विशेषांक वास्तव में युवा पीढ़ी की संपूर्ण गाथा को मोतियों के रूप में एक माला में पिरो रहा, प्रतीत होता है. इस विशेषांक को बहुत ही अच्छी तरह से तैयार किया गया है. युवा से संबंधित सभी विषयों को इसमें शामिल किया गया है. लेखकों के आलेख ज्ञानवर्द्धक एवं मार्मिक हैं. देश के निर्माण में युवाओं के योगदान के महत्व को इस अंक में बहुत ही बारीकी से उकेरा गया है. यह अंक युवाओं को ऊर्जा एवं शक्ति का सदुपयोग करने एवं उन्हें गलत व्यसनों से दूर रखने के लिए प्रेरित कर रहा है. यह विशेषांक वास्तव में संपूर्ण युवा पीढ़ी के लिए एक संदर्भ साहित्य के रूप में सहज रूप में उपलब्ध कराया जाना चाहिए क्योंकि आज हमारे देश के कुछ युवा जहां देश निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं, वहीं कुछ युवा ऐसे भी हैं जो कि गलत रास्तों पर चलने के कारण देश को पीछे धकेलने का काम कर रहे हैं. ऐसे युवाओं को सही रास्ते पर लाने के लिए भी इस अंक से प्रेरणा मिलती है. देश के युवाओं का सही मार्गदर्शन करती इस पत्रिका के विशेषांक हेतु संपूर्ण संपादन मंडल को मेरी ओर से हार्दिक बधाई. यह अंक वास्तव में संग्रहणीय है जो कि आने वाली युवा पीढ़ी के लिए सदैव प्रेरणा देता रहेगा. आगामी अंकों हेतु मेरी ओर से पुन: आपको हार्दिक शुभकामनाएं.

- राजीव कुमार,
सदस्य-सचिव एवं मुख्य प्रबंधक
राजभाषा विभाग आंचलिक कार्यालय, नागपुर
बैंक ऑफ इंडिया

यूनियन सृजन, अप्रैल-जून 2021 का अंक प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद! पत्रिका नि:संदेश काफी उत्कृष्ट कोटी की रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक है. पत्रिका का रंग-रूप साज-सज्जा, कलेवर एवं रंगों का चयन बहुत ही बारीकी से किया गया है जो कि पत्रिका को आकर्षक बनाती है. पत्रिका में शामिल उच्च कार्यपालकों का संदेश, आलेख एवं कविता अत्यंत ही गुणात्मक एवं परिपूर्ण है. सभी आलेख हमें नई-नई सूचनाएं एवं जानकारियाँ प्रदान करती हैं. पत्रिका में निहित बैंकों द्वारा कार्यक्रमों और गतिविधियों की झलकियाँ राजभाषा कार्यान्वयन से परिचय कराती है. पत्रिका के कुशल संपादन हेतु समस्त संपादन मण्डल को बधाई. अगले अंक की प्रतीक्षा में .....

- सिम्पी कुमारी,
क्षे. का., वाराणसी, राजभाषा विभाग
इंडियन ओवरसीज बैंक

आपके बैंक की तिमाही हिन्दी पत्रिका का अप्रैल-जून, 2021 युवा विशेषांक प्राप्त हुआ. गत अंकों की भांति पत्रिका के इस अंक का कलेवर भी अत्यन्त आकर्षक है. युवा वर्ग हमारे समाज की रचनात्मक ऊर्जा का प्रतीक है. राष्ट्र निर्माण में युवा एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है. जैसा कि संरक्षक महोदय ने अपने संदेश में कहा है कि हमारा देश इस संबंध में बहुत भाग्यशाली है कि हमारे देश में युवाओं का अनुपात अधिक है. शायद यही कारण है कि हमारा राष्ट्र निरंतर प्रगति पथ की ओर अग्रसर हो रहा है. हमारे समाज में युवा वर्ग की भूमिका एवं उनके महत्व को इस पत्रिका के माध्यम से उजागर करने का बहुत ही सफल प्रयास किया गया है. इस अंक में प्रकाशित कविता 'मैं फिर जीत जाऊंगा' पाठकों के मन में एक नई ऊर्जा का संचार करती है. इसके अलावा खेल और युवा, युवा उद्यमी, जीवन का साथ देती युवा पीढ़ी आदि आलेख भी रोचक हैं. नि:संदेह यह पत्रिका युवा पीढी में एक नवीन ऊर्जा का संचार करेगी, युवाओं की रचनात्मक प्रतिभा को जागृत करने में सहायक होगी और न केवल राजभाषा के प्रचार-प्रसार में बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी अपना योगदान देगी.

- पूजा साव
अधिकारी (राजभाषा)
गेल (इंडिया) लिमिटेड, वडोदरा

RNI No. MAH HIN/2016/68433

विजय स्तंभ,
चित्तौड़गढ़ किला, राजस्थान

छायाचित्र : सुमित शर्मा,
क्षे.का., रायपुर

नि:शुल्क वितरण हेतु